297
A153

Bismal ki Sayiri

बिस्मिल की शायरी

(भावपूर्ण व्यङ्ग कविताओं की अपूर्व पुस्तक)

सहल लिख लिख कर यह क्या अच्छा तमाशा कर दिया।
हज़रते 'बिस्मिल' ने तो उर्दू को भाषा कर दिया॥

लेखक—

कवि-संसार के भारत-प्रसिद्ध कवि

श्री सुखदेव प्रसाद सिनहा "बिस्मिल"

Sukhrad Pars...

SPS
891.431 B 50 V
15237

प्रकाशक—

मातृ भाषा मन्दिर दारागंज, प्रयाग

Matr Bhasha Mandar

द्वितीय बार] १९३७ paryag [१।।।) रुपया

1937

Rajeev

297
A153

Bismal Ki Sayiri

बिस्मिल की शायरी

(भावपूर्ण व्यङ्ग कविताओं की अपूर्व पुस्तक)

सहल लिख लिख कर यह क्या अच्छा तमाशा कर दिया ।
हज़रते 'बिस्मिल' ने तो उर्दू को भाषा कर दिया ।।

लेखक—

कवि-संसार के भारत-प्रसिद्ध कवि

श्री सुखदेव प्रसाद सिनहा "बिस्मिल"

Sukhrad pars...

SPS
891.431 B 50 V
15237

प्रकाशक—

मातृ भाषा मन्दिर दारागंज, प्रयाग

Matr Bhasha Mandar

द्वितीय बार] १९३७ paryag [१।।।) रुपया

1937

acc: no: 15237
Rs1-12-0

प्रकाशक—
श्री हर्षवर्द्धन शुक्ल,
मातृ भाषा मन्दिर
दारागंज, प्रयाग।

मुद्रक
श्री रघुनाथ प्रसाद वर्मा,
नागरी प्रेस, दारागंज,
प्रयाग।

लेखक के दो शब्द

कविता प्रेमियों को यह सम्बाद देते हुए मेरा दिल जिस कदर आनन्द के समुंदर में लहरें लेता है वह मैं जानता हूँ—और दूसरा इसको न जान सकता है न समझ सकता है कि "बिस्मिल की शायरी" का स्वागत किस शान के साथ किया गया कि दूसरा संस्करण फिर छपवाना पड़ा, यह बात ही ऐसी है—पत्रों में भी इसकी समालोचनाएँ खूब खूब हुईं—पत्र पढ़ने वाले इसे भली भांति जानते हैं—ग़रज़ यह कि हर तरफ़ से स्वागत किया गया—या यूँ कहिए इस ना चीज़ का दिल बढ़ाया गया—अगर ऐसा न होता तो दूसरा संस्करण इतनी जल्दी क्यों छपता—इससे साफ़ ज़ाहिर है कि हिन्दी संसार को उर्दू कविता पढ़ने का किस कदर शौक़ है—और खासकर व्यङ्ग कविता का—मैं तो यह समझा हूँ कि यह सब रोज़ की बोल चाल की भाषा लिखने का असर है—और व्यंग कविता

में चुभती हुई बात सीधे सादे शब्दों में लिख देने से तीर का काम अदा होता है—इसको और रोचक बनाने के लिये और कविताएं इस बार बढ़ा दी गई हैं—जिसका आनन्द भी पाठक लें—आशा है कि कविता प्रेमी इसका उसी तरह स्वागत करेंगे—जिससे मेरा उत्साह बढ़े—मैं उनको अपना एक शैर सुना कर विदा मांगता हूँ—

मुमकिन नहीं, मुमित नहीं वह दिल से भुला दें
एक एक वफ़ा उनको मेरी याद रहेगी ।

सुख निवास मुट्ठीगंज
महावीरन गली
४-६-१९३७

कविता प्रेमियों का दास
'बिस्मिल'
इलाहाबादी

———

कविवर 'बिस्मिल' इलाहाबादी

यों तो मैं बहुत दिनों से कविवर "बिस्मिल" की कविताओं का आनन्द पत्रों में लिया करता था। मगर उस साल जब वह गोंडे के 'मशायरे' (कवि-सम्मेलन) में आए और मशायरे में उनकी 'हस्ती की रुबाई' के दो-चार पद उन्हीं के मुँह से सुने, तो मैं मन्त्र-मुग्ध-सा होकर रह गया। आपके कलाम में जो जौहर है, वह गुण-ग्राहकों से छिपा नहीं है, मगर आपके पढ़ने में जो जादू है वह सुनने वालों का हृदय ही जान सकता है। लखनऊ ऐसी जगह जो सच पूछिये तो शायरों की कान कही जा सकती है, वहाँ भी दो-चार मशायरों में मुझे एक से एक उच्च कवियों की कविताएँ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका था, मगर जो प्रभाव 'बिस्मिल' की जादू बयानी में मैंने पाया, वह कहीं भी नहीं नसीब हुआ था।

'बिस्मिल' का पूरा नाम श्रीमान सुखदेवप्रसाद सिनहा है। उपनाम 'बिस्मिल इलाहाबादी' है। आप मौज़ा भवानीपुर तहसील सलोन ज़िला रायबरेली के रहने वाले मुन्शी विश्वेश्वरदयाल साहब कायस्थ श्रीवास्तव के सुपुत्र हैं। मगर अब बहुत काल से इलाहाबाद में बस गए हैं। आपका जन्म सन् १८९९ ईस्वी में

यहीं हुआ, और आपको शिक्षा भी मकतब में पढ़ने के बाद यहीं के कायस्थ पाठशाला और मार्डन हाई-स्कूल में मिली है। लड़कपन ही से आपकी अनोखी रुचि कविता की ओर देख कर आपके चचा स्वर्गवासी श्री० अनन्तलाल साहब वकील ने आपको २५ दिसम्बर सन् १९१८ को महाकवि 'दाग़' के स्थानापन्न नाखुदाए सखुन हज़रत 'नूह' नारवी की शागिर्दी करने को भेजा। फिर तो जिस प्रकार सूर्य की किरणों के पड़ते ही आईना चमक उठता है, वैसे ही अपने गुरु के पुण्य-प्रताप से आपकी शायरी भी चमक उठी। कविता के लिए अपनी ईश्वरप्रदत्त शक्ति तथा स्वाभाविक रुचि और गुणों के बल पर आप अपने गुरु के ऐसे कृपापात्र हुए कि वह आपको अपने साथ मेरठ, मैनपुरी, लखनऊ, कानपुर, पटना, गया, आरा आदि के मशायरों में ले गए और आपने हर जगह अच्छी कीर्ति लाभ की। उसके बाद से तो आपने सभी जगह से निमन्त्रित होकर भारत भर में स्वयं ही अपने नाम की धूम मचा दी।

आपकी काव्य-कला पर कैसी धाक है और आपके हृदय में कविता के लिए उत्साह-धारा किस प्रबल वेग से बहती है, यह दिखलाने और आपकी कुछ कविताओं का रसास्वादन कराने के लिए अब मैं 'बिस्मिल' की शायरी के कुछ नमूने सेवा में भेंट करता हूँ। इसके लिए सबसे पहिले आप की "हस्ती की रुबाई" के दो-चार पदों का रसास्वादन कराता हूँ, जिसने पहले-पहल मेरे हृदय को आपकी ओर इतने अटल रूप

से आकर्षित किया था कि वही आकर्षण उसी वेग से अबतक बना हुआ है। बेशक हर एक रुबाई इतनी लाजवाब हुई है कि इसने 'बिस्मिल' के नाम को सदा के लिए अमर बना दिया है। आपने यह रुबाई लिखकर कविता-सागर में सच पूछिए तो एक नई धारा बहा दी है। 'हस्ती' यानी 'अस्तित्व' क्या चीज़ है, दुनियां इस पर अपने को कैसी भूली हुई है, लोग अपने 'हमाहमीं' के नशे में कैसे चूर हैं। लेकिन इसकी असलियत क्या है, उसकी पोल आपने किस उत्तमता से खोली है और साथ ही उसके तत्त्व पर कैसी मर्मभेदी दार्शनिक दृष्टि डाली है कि उसकी छटा बस निरखते ही बनती है। बताने से नहीं। देखिए:—

एक-एक से कहती है ज़बाने-हस्ती,
बेकार हैं सब नामो निशाने-हस्ती।
सौदा न हो सौदा न करो अय 'बिस्मिल',
बढ़ जायगी इक रोज़ दुकाने-हस्ती।

❀ ❀ ❀

जाता है बहुत जल्द शबाबे-हस्ती,
मौत आकर उलटती है नक़ाबे-हस्ती।
मयख़ानये दुनिया में सँभल अब 'बिस्मिल'
बदमस्त न हो पी के शराबे-हस्ती।

❀ ❀ ❀

करता हूँ बयाँ सुनिए बयाने-हस्ती,
कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं शाने-हस्ती।

इस साँस की बुनियाद ही क्या है अय 'बिस्मिल'
कन्धे पे हवा के है मकाने-इस्ती।

❀ ❀ ❀

रक्खे हुए हैं सर पे जो ताजे-इस्ती,
देना पड़ेगा उनको ख़िराजे-हस्ती।
वे अपने को मिट्टी में मिलाएँ 'बिस्मिल',
मुमकिन नहीं मिल जाए मिज़ाजे-हस्ती।

ईश्वर की सत्ता की अनुपम झलक आपने किस उत्तमता से दिखाई है, उसकी छटा निम्न पदों में निरखिए:—

मुद्दत से यह सुनते आते हैं, वह ख़ानए दिल में रहते हैं,
आ जायँ नज़र तो हम जानें, कहने के लिए सब कहते हैं।
नज़रों को नज़र आते जो नहीं, तो हम यही दिल से कहते हैं,
इस पर्दे में भी कुछ पर्दा है, वह पर्दे में क्यों रहते हैं।

❀ ❀ ❀

इस सोच में हैं इस चक्कर में, इस फ़िक्र में हैं दुनियावाले,
वह आलम कैसा आलम है, जिस आलम में वह रहते हैं।

❀ ❀ ❀

छुपने को छुपें सौ परदों में, इस छुपने से क्या होता है,
वह ढूँढ़ निकालेंगे उनको जो खोज में उनके रहते हैं।

और ढूँढ़ने को ढूँढ़ा भी ख़ूब है। ज़रा निम्न पदों में देखिए—

जो बेरुख़ी थी यही रुख़ यौंही छुपाना था,
मेरे ख़्याल में भी आपको न आना था।

इसी सबब से वह परदे में छुप के बैठे हैं,
कि परदे-परदे में कुछ उनको रङ्ग लाना था।
मिले हैं इसलिए आपस में ख़ाक के ज़र्रे,
नया-नया उन्हें हर रोज़ रूप लाना था।
निहाँ है ख़ाक के ज़र्रों में जलवए-क़ुदरत,
बशर बना कर उसे अपने को दिखाना था।

जीवन-रहस्य की वास्तविकता का कुछ हाल सुनिए:—

इतना भी न साक़ी होश रहा, पीकर हमें क्या मैख़ाना था!
गर्दिश में हमारी क़िस्मत थी चक्कर में तेरा पैमाना था!
महरूम था सोज़े-उल्फ़त से जल जाने से बेगाना था,
फ़ानूस के अन्दर शमूआ रही बाहर-बाहर परवाना था!
माना कि है रोशन बज़्मे-जहाँ अय शमूअ तेरी दिलसोज़ी से,
क्यों हाथ में हर परवाने के जल मरने का परवाना था!
वह शमूअ न थी वह बज़्म न थी वह सुबह को अहले-बज़्म न थे,
बस याद दिलाने की ख़ातिर अखबारे परे परवाना था।

आपने व्यङ्ग कविता करने में अच्छी सफलता पाई है। आधुनिक स्थिति, सामाजिक तथा राजनैतिक मसलों पर आप ऐसी ग़ज़ब की चुटकी लेते हैं कि आपकी कविताएँ व्यङ्ग के कवि-सम्राट हज़रत 'अकबर' की कविताओं से अकसर किसी बात में कम नहीं होतीं। इसका एक नमूना देखिए—

कुत्ते लड़ाए जायँगे बोटी के वास्ते,
अख़बार अब निकलते हैं रोटी के वास्ते!
आपस में नोक-झोंक है मज़हब के नाम पर,
दाढ़ी के वास्ते कहीं चोटी के वास्ते।

धोती को छोड़ कर बढ़े पतलून की तरफ़,
तरसेंगे कुछ दिनों में लँगोटी के वास्ते।

आपके विचारों की सफ़ाई और बयान की सादगी ने हिन्दी का कैसा उपकार किया है, यह आपके निम्न पद से स्पष्ट हो जाता है:—

सहल लिख-लिख कर क्या यह अच्छा तमाशा कर दिया,
हज़रते 'बिस्मिल' ने तो 'उर्दू' को 'भाषा' कर दिया।

सौभाग्य की बात है कि आपके कलाम की कुछ जिल्दें हिन्दी में भी छप गई हैं। और वह दिन हिन्दी के लिए अब दूर नहीं है, जब हमारी हिन्दी अपना विस्तार बढ़ा कर आपके साहित्य को अपनी ही सम्पत्ति पूर्ण रूप से समझने की सुबुद्धि प्राप्त कर लेगी। बस थोड़ी सी संकुचित-हृदय औंधी खोपड़ियों के राह पर आने की कसर है। अन्त में अपनी शुभ कामनाओं को आपके गुरु महोदय ही के निम्न-लिखित शब्दों में अङ्कित करके इस लेख को समाप्त करता हूँ।

मैं दाद सख़ुन सब से सिवा देता हूँ,
इनआम ज़माने में जुदा देता हूँ।
अल्लाह करे ख़ुश रहें, आबाद रहें,
अय 'नूह' यह 'बिस्मिल' को दुआ देता हूँ।

जी० पी० श्रीवास्तव

बी० ए०, एल-एल० बी०

———

स्मिल की शायरी

लेखक कविवर बिस्मिल

बिस्मिल की शायरी

-:❀:◡:❀:-

[व्यङ्ग]

बेकार के मज़मून न बेकार निकालो,
शोहरत की तमन्ना है तो अख़बार निकालो।

❀ ❀ ❀

सैय्याद की सुनते नहीं माली की तो सुन लो,
आ निकले हो जब बाग़ में कुछ फूल ही चुन लो।
हर बात में ज़िद अच्छी नहीं हज़रते 'बिस्मिल',
दुनिया कहे जिस बात को उस बात को सुन लो।

❀ ❀ ❀

चमन में एक एक गुञ्चा[1] खुशी से फूल जाता है,
मगर जब ख़ाक में मिलता है सब कुछ भूल जाता है।
ताज्जुब क्या जो 'बिस्मिल' याद उन्हें मेरी नहीं आती,
ज़माना कुछ दिनों के बाद सबको भूल जाता है।

१—कली

बेकार यह रोना है चन्दा नहीं मिलता है,
क्या इसके सिवा कोई धन्धा नहीं मिलता है।
मतलब के जो बन्दे हैं मतलब के पुजारी हैं,
दुनियां मिले ऐसों से बन्दा नहीं मिलता है।
कब तक कोई चन्दा दे कब तक कोई चन्दा ले,
चन्दा नहीं आता है, चन्दा नहीं मिलता है।
क्या देख सके जलवा[1] महदूद[2] नज़र 'बिस्मिल',
अल्लाह तो मिलता है बन्दा नहीं मिलता है।

❀ ❀ ❀

काम करना हमको आया काम करना देखकर,
पांव का पड़ना था लाज़िम पांव धरना देखकर।
वक़्त आख़िर कर सके कुछ भी न अहबाबो अज़ीज़,
हाथ मलते रह गये 'बिस्मिल' का मरना देखकर।

❀ ❀ ❀

सरे दरबार कहते हैं हम ऐसे हैं हम ऐसे हैं,
तरक्की क़ौम की चाहें जो दुनियां में कम ऐसे हैं।
कहीं का भी न रक्खा हमको इस हम तूने ऐ 'बिस्मिल',
यहीं सबकी ज़बाँ पर है हम ऐसे हैं हम ऐसे हैं।

❀ ❀ ❀

उनकी आँखों का इशारा है कि शिकवा न करो,
जिसमें कुछ लय न हो वह राग अलापा न करो।

१—ज्योति, २—सीमित दृष्टि।

यह सितम तुरफ़ा सितम है कि वह फ़रमाते हैं,
तुम सहो ज़ुल्म मगर ज़ुल्म का चर्चा न करो।
जिससे झगड़ा हो उठे जिससे ज़माने में फ़िसाद,
ऐसे मज़मूं कभी अख़बार में लिक्खा न करो।
तन्दुरुस्ती की तमन्ना है अगर ऐ 'बिस्मिल',
दिन को सोया न करो रात को जागा न करो।

❀ ❀ ❀

थाह बहरे ग़मे उलफत की कोई पा न सका,
जो हुआ ग़र्क़[1] किनारे पे वह फिर आ न सका।
उसको समझाते हो किस वास्ते तुम ऐ 'बिस्मिल',
कि ज़माने में ज़माना जिसे समझा न सका।

❀ ❀ ❀

बहरे-हस्ती[2] में क़ज़ा के घाट उतरना देखिए,
मर रहा हूँ आइए अब मेरा मरना देखिए।
फ़लसफ़ी[3] की अक़्ल गुम है वहम भी मजबूर है,
खाक के ज़र्रों का मिट्टी में सँवरना देखिए।

❀ ❀ ❀

बैठे कुरसी पै तो करने लगे 'स्टूल' की बात,
याद कालेज में उन्हें आगई स्कूल की बात।
और भी बुलबुले बेकस को अज़ीयत[4] होगी,
घर में सैय्याद के छेड़े न कोई फूल की बात।

१—डूबा, २—समुद्ररूपी जीवन, ३—दार्शनिक, ४—दुख।

आंख रखते हो तो नज़्ज़ारा करो ऐ 'बिस्मिल',
कान अगर है तो सुनो बन्दए[1] मक़बूल की बात।

❀ ❀ ❀

हक़ तो ये है कोई सूरत हक़नुमा मिलती नहीं,
मैं भटकता हूँ मगर राहे ख़ुदा मिलती नहीं।
डाक्टर झा[2] के दवाखाने में है सब कुछ मगर,
मौत की ऐ हज़रते 'बिस्मिल' दवा मिलती नहीं।

❀ ❀ ❀

इस वक़्त इस ख्याल में पड़ना फ़िज़ूल है,
सरकार के ख़िलाफ़ अकड़ना फ़िज़ूल है।
आपस में मेल-जोल बढ़ाओ ख़ुशी के साथ,
क्यों रंज कर रहे हो यह लड़ना फ़िज़ूल है।
दुनियां से झुक के हज़रते 'बिस्मिल', मिला करो,
दो दिन की ज़िन्दगी पर अकड़ना फ़िज़ूल है।

❀ ❀ ❀

रहरौ[3] ये क्यों कहें किसी राही के साथ हैं,
दुनियां में जिस जगह हैं तबाही के साथ हैं।
मंज़िल किधर है इस पै हमारी नज़र नहीं,
जो राह में मिला उसी राही के साथ हैं।

१—ईश्वर का सेवक, २—प्रयाग के प्रसिद्ध डाक्टर कृष्णराम झा, ३—बटोही।

'बिस्मिल' मिलेगा ऐश ज़माने में मिल चुका,
हम हैं तबाह हाल तबाही के साथ।

❀ ❀ ❀

खूगरे[1] ग़म हो गए एहसासे[2] ग़म कुछ भी नहीं,
सर उठाएँ किस तरह जब हममें दम कुछ भी नहीं।
कहने वालों से कहें क्या हमको जो चाहें कहें,
हम तो ऐ 'बिस्मिल' यही कहते हैं हम कुछ भी नहीं।

❀ ❀ ❀

जान आफ़त में और पड़ती है,
ज़िन्दगी मौत जो लड़ती है।
किसलिए सर उठाएँ ऐ 'बिस्मिल',
सर उठाने में मार पड़ती है।

❀ ❀ ❀

सर पे जब से सवार 'फ़ैशन' है,
न वह हम हैं न अगली 'नेशन' है।
है 'डिनर' में मज़ा कि ऐ 'बिस्मिल',
आज मेरा भी 'इनविटेशन' है।

❀ ❀ ❀

होश वाले भी समझते हैं यही, बेहोश हूँ,
क्या करूँ मैं रङ्ग दुनियाँ देखकर खामोश हूँ।

१—आदी, २—दुख का ख्याल।

बहारे गुल का आलम देखकर सर अपना धुनता हूँ,
मेरी तक़दीर में काँटे हैं मैं काँटों को चुनता हूँ।
कहूँ तो क्या कहूँ है गोमगो[1] का हाल ऐ 'बिस्मिल',
कोई सुनता नहीं मेरी मगर मैं सब की सुनता हूँ।

❀ ❀ ❀

हाथ फैलाओ कि फैलाए हुए अब हाथ हैं,
साथ तुम भी दो हमारा हम तुम्हारे साथ हैं।

❀ ❀ ❀

दिखाते हैं तमाशे क्या तरक़्क़ी के ज़माने भी,
नई तहज़ीब पर लट्टू हुए दिल में पुराने भी।
बस इतना याद है स्कूल के लड़कों को ऐ 'बिस्मिल',
कभी मक़तब में हम पढ़ते थे हिज्जे भी रवाने भी।

❀ ❀ ❀

पढ़ो क़ालिज में जाकर मग़रबी[2] तालीम सब सीखो,
मगर हाँ शर्त्त यह भी है बुज़ुर्गों का अदब सीखो।

❀ ❀ ❀

हैरत में है कोई तो कोई पढ़ के दङ्ग है,
'बिस्मिल' की शायरी में जो अक़बर का रङ्ग है।

❀ ❀ ❀

कह दिया हाँ कह दिया कुछ भी नहीं
ज़िन्दगी का आसरा कुछ भी नहीं।

१—कहने न कहने लायक, २—पश्चिमी।

खल्क[1] होकर फिर ख़ुदाई देख कर,
आप कहते हैं ख़ुदा कुछ भी नहीं।
हज़रते 'बिस्मिल' से क्यों कोई कहे,
'डाक्टर झा' की दवा कुछ भी नहीं।

❀ ❀ ❀

जो 'आनर' मिला है तो दिल शाद है,
कि अब हमको सारा 'ग़ज़ट' याद है।

❀ ❀ ❀

अब न बाकी रह गया जोश अब न मस्ती रह गई,
ख़ैर यह भी है ग़नीमत अपनी हस्ती रह गई।
सर बलन्दी पा के तुम सारी बलन्दी ले उड़े,
मेरे हिस्से में फ़क़त पस्ती[2] ही पस्ती रह गई।
मैंने देखा फिर कर ऐ 'बिस्मिल' जहाँ में हर तरफ़,
हक़ परस्ती की जगह नाहक परस्ती रह गई।

❀ ❀ ❀

ख़ुदा ही को ख़बर है इसमें क्या मर्ज़ी ख़ुदा की है,
कि वह शाक़ी[3] ज़माने के, ज़माना उनका शाक़ी है।
नतीजा खेल ठहरा नाम 'ला-कालिज' में पढ़ने का,
किसी को ज़ौके 'टेनिस' है किसी को शौक़ हाकी है।

१—पैदा होकर, २—हार, ३—शिकायत करनेवाला।

भरोसा खाक़ दुनिया पर करें ऐ हज़रते 'बिस्मिल',
हमें मिट्टी में मिलना है हमारा जिस्म ख़ाकी है।

❀ ❀ ❀

आजकल बदला हुआ मज़मून है,
हर क़दम पर एक नया क़ानून है।
क्या लिखें मज़मून यह मज़मून है,
नुक़्ते नुक़्ते के लिए क़ानून है।
कोट इङ्गलिश कट पहनते हैं जो आप,
लाज़मी इसके लिए पतलून है।

❀ ❀ ❀

जौ की रोटी है चने का साग है,
यह भी मिल जाये तो अच्छा भाग है।
आपकी नज़रों में काला आदमी,
कुछ नहीं है और है तो 'डाग' है।
अहले 'मिर्ज़ापुर' क्योंकर खुश न हों,
उस तरफ़ 'काशी' इधर 'प्रयाग' है।
क्यों सुने 'बिस्मिल' वतन वालों का तान,
अपनी दफ़ली और अपना राग है।

❀ ❀ ❀

बेतरह फिर गई नज़र 'मिस' की,
देखिए मौत आए किस किस की।

है ग़रज़ हमको सिर्फ़ पीने से,
तुम बरांडी पिलाओ या ह्विस्की।
सब सुनाते हैं बेतुकी 'बिस्मिल',
बात दुनियां में हम सुनें किसकी।

❀ ❀ ❀

डूब कर दिल में उड़ाया क्या दिले मुज़तर का रंग,
और से अब और कुछ है आपके खंजर का रंग।
देखकर अशआर[1] 'बिस्मिल' सब को याद आए न क्यों,
हजरते 'अकबर' की शोख़ी हजरते 'अकबर' का रंग।

❀ ❀ ❀

कान अगर है तो सुनो यह किसी फ़रियादी से,
सांस लेना भी है मुश्किल मुझे आजादी से।
हम भी शागिर्द हुए देख के यह ऐ 'बिस्मिल'
लीडरी आप किया करते हैं उस्तादी से।

❀ ❀ ❀

पुन से नफ़रत और हसरत पाप की,
खैर पबलिक क्या मनाए आपकी।
जाऊं क्या गंगा का साहिल[2] छोड़ कर,
लहर पैदा हो गई है जाप की।
अब के लड़के कुछ समझते ही नहीं,
आबरू जाती रही मां बाप की।

१—पद्य। २—किनारा।

हजरते 'बिस्मिल' हुई मशहूरे ख़ल्क[1],
हर ग़ज़ल नोटिस थी गोया आपकी।

❀ ❀ ❀

ग़म नहीं लाख बुरा कहती है दुनियां दिल में,
ख़ैर मिल तो गई एक सीट हमें 'कौंसिल' में।

❀ ❀ ❀

मैं तो अच्छा यह काम करता हूँ,
लीडरी में जो नाम करता हूँ।
साहब आते हैं मेरे घर जो कभी,
तो बहुत धूमधाम करता हूँ।
इस क़दर डर है उनका ऐ 'बिस्मिल',
दूर ही से सलाम करता हूँ।

❀ ❀ ❀

जिसने कुछ भी न क़द्र की मेरी,
उस सितमगर से दिल्लगी मेरी।
ग़ौर फ़र्माएं देखने वाले,
ख़त्म होती है ज़िन्दगी मेरी।
बैर रखता नहीं किसी से मैं,
दुश्मनों से है दोस्ती मेरी।
मैं हूँ मशहूरे ख़ल्क ऐ 'बिस्मिल',
ले उड़ी मुझको शायरी मेरी।

१—संसार

झगड़ा कभी बेटे से हुज्जत कभी बेटी से,
निकलेगा नतीजा क्या फिर ऐसी 'कमेटी' से।

❀ ❀ ❀

यह मानता हूँ वतन से तुम्हें मुहब्बत है,
मगर इसी के सिले[1] में ख्याले शोहरत है।

❀ ❀ ❀

दावे तो हैं हज़ार मगर गुन कोई नहीं,
बे सुर के गीत गाते हैं पर धुन कोई नहीं।

❀ ❀ ❀

पास बी० ए० होके शोहरत मिल गई,
पढ़ चुके कालेज में दौलत मिल गई।

❀ ❀ ❀

वक्त आखिर जान है किस सदमए जां काह[2] में,
रेल या मोटर नहीं मिलती अदम[3] की राह में।

❀ ❀ ❀

क्या कीजिएगा हाले दिलेज़ार देखकर,
मतलब निकाल लीजिए अखबार देखकर।

❀ ❀ ❀

क्या बात करूँ गर्दिशे[4] अय्याम के आगे,
दफ़्तर में तो फ़ुर्सत ही नहीं काम के आगे।

१—बदले में। २—दम घुटना। ३—परलोक। ४—संसारचक्र।

'बिस्मिल' उन्हें तौकीरे[१] मरातिब[२] से है इन्कार,
लिखते नहीं 'मिस्टर' भी मेरे नाम के आगे।

❀ ❀ ❀

मरते हैं और लोग तो दौलत के वास्ते,
मैं जान दे रहा हूँ मोहब्बत के वास्ते।
किस्मत से बात बन गई शाही भी मिल गई,
आया था कोई सिर्फ तिजारत के वास्ते।
कहते हैं वह कि रोज पहनता नहीं हूं मैं,
बनवा लिया है 'सूट' ज़रूरत के वास्ते।

❀ ❀ ❀

कानून ने कहा तेरी हसरत निकल चुकी,
बस अब कलम चलेगी वो तलवार चल चुकी।
'बिस्मिल' का हाल देखकर चुप डाक्टर भी है,
पहरेज़ है यही तो तबीयत सम्हल चुकी।

❀ ❀ ❀

वो दुनियाँ भर को कहते हैं यह ऐसे हैं वह ऐसे हैं,
मगर उनसे कोई पूछे कि सरकार आप कैसे हैं।
जहाँ जाते हैं महफिल में जमा देते हैं रँग अपना,
ज़माना जानता है हजरते 'बिस्मिल' को जैसे हैं।

१—आदर। २—पदवी।

ख़बर भी है तुम्हें क्या ऐ मेरे भाई समझते हो,
यह है तौक़े ग़ुलामी जिसको 'नकटाई' समझते हो।

❀ ❀ ❀

नज़र से कह दो यह किसको 'रिजेक्ट' करती है,
कि अच्छी चीज़ को दुनियाँ 'सलेक्ट' करती है।
कलामे 'बिस्मिले' रंगी बयां पढ़ो तो सही,
वह शायरी है जो दिल पर 'एफ़ेक्ट' करती है।

❀ ❀ ❀

अख़बार में दुरुस्त जो मज़मून हो गया,
जाकर अदालतों में वह क़ानून हो गया।
दर्बार में जो आके वह स्पीच दे गए,
हम सब के वास्ते वही क़ानून हो गया।

❀ ❀ ❀

वह फ़र्माते हैं तुझको रंग ही लाना नहीं आता,
'डिनर' में साथ सबके बैठकर खाना नहीं आता।
कोई पूछे सितम क्या है कभी पूछे करम क्या है,
जो ऐसा नासमझ है उसको समझाना नहीं आता।
अब इसकी बहस ही क्या है न वह आएं न हम जाएं,
उन्हें आना नहीं आता हमें जाना नहीं आता।
उसे दुनियां कहै क़ातिल मगर हम कह नहीं सकते
जिसे अच्छी तरह 'बिस्मिल' को तड़पाना नहीं आता।

दो दिन जहां में रह के तमाशा दिखा गए,
आने जाने वालो, यह क्या आए क्या गए।
मिट्टी के हम थे, मिट्टी लिखी थी नसीब में,
मिट्टी में लोग इसलिए हमको मिला गए।
लाखों तरह के ज़ुल्म हैं लाखों तरह के ग़म,
हम किस ख़याल से तेरे कहने में आगए।
अहबावे ज़ौको शौक़ को वज्द[1] आज आगया,
'बिस्मिल' कुछ अपने शैर भी आकर सुना गए।

❀ ❀ ❀

हमेशा यासो[2] हरसत ही के दम भरने से मतलब है,
न कुछ करने से मतलब था न कुछ करने से मतलब है।
क़यामत तक जहाँ में कौन ज़िंदा रह सका 'बिस्मिल'
हमारा काम है मरना हमें मरने से मतलब है।

❀ ❀ ❀

आया न कभी अक़्ल में दुनियां का तमाशा,
समझा भी बहुत है, इसे देखा भी बहुत है।
कहते हैं सरे बज़्म[3] वो खुश होके ऐ 'बिस्मिल',
पढ़ना भी बहुत है तेरा कहना भी बहुत है।

❀ ❀ ❀

कसरते ग़म में भी चेहरे पर बहाली चाहिये,
सामने नज़रों के तस्वीरे ख़याली चाहिए।

१—मस्त हो जाना। २—निराशा। ३—सभा।

15237

पढ़िये 'लीडर' में ये 'मुंशीजी' का एक निकला है नोट,
पाठशाले के लिए इमदादे माली चाहिए।
पेड़ सूखे जा रहे हैं बाग़ में 'बिस्मिल' मगर,
लाट साहब के लिए नायाब डाली चाहिए।

❀ ❀ ❀

हर जगह एक सभा विराट करो,
अब कमीशन का बाईकाट करो।
हम तो यह कहके चुप हुए ऐ 'बिस्मिल',
उनसे मिलने की और चाट करो।

❀ ❀ ❀

कोट पतलून और जाड़ा है,
सब को सर्दी ने अब पछाड़ा है।
हैं क्लब में बहुत मिसें 'बिस्मिल',
राजा इन्दर का यह अखाड़ा है।

❀ ❀ ❀

कुर्सी टेबिल नहीं तो कुछ भी नहीं,
जुब्ब से कुल नहीं तो कुछ भी नहीं।
अब ज़माने में आदमी 'बिस्मिल',
'फैशनेबुल' नहीं तो कुछ भी नहीं।

❀ ❀ ❀

समझ तो देखिए इस पर भी खुश हैं तनते हैं,
वो रोज़ जाके वहाँ बेवकूफ़ बनते हैं।

मेरी ज़बाँ से निकलते हैं फ़िक़रे उर्दू के,
मगर हुज़ूर तो 'इंगलिश' के लफ़्ज़ चुनते हैं।

❀ ❀ ❀

रंज से वो निजात पा जाए,
मौत थी जिसको नींद आ जाए।
जिस जगह पूछ-गछ नहीं 'बिस्मिल',
जा चुका मैं, मेरी बला जाए।

❀ ❀ ❀

शौक़ से कीजिए 'एटेन्शन' भी,
ख़ाक में मिल रही है 'नेशन' भी।
कोट है वेस्टकोट की सूरत,
ख़ूब निकला है अब यह फ़ैशन भी।
'लेट' सब से मिला मुझे 'बिस्मिल',
लाट साहब का 'इन्विटेशन भी।

❀ ❀ ❀

दिन कहेगा एक दिन यह रात को,
कुछ न पूछो 'पानियर' की बात को।
बात कोई घात से ख़ाली नहीं,
हम समझते हैं तुम्हारी बात को।
आजकल के ख़ूब हैं 'साइन्सदां',
भूल बैठे हैं ख़ुदा की जात को।

सुफ़ ऐ 'बिस्मिल' धुना करते हो सर,
कौन सुनता है तुम्हारी बात को।

❀ ❀ ❀

तुम जहर के घूट ही पिये जाव,
जीने से ग़रज़ है बस जिए जाव।
हुज्जत की नहीं कोई जरूरत,
जो वह कहें बस वही किए जाव।
आये हो क्लब में आज 'बिस्मिल',
दो घूँट शराब तो पिए जाव।

❀ ❀ ❀

दीन वाले कह रहे हैं पेच है,
लुत्फे दुनियाँ कुछ नहीं सब हेच है।
जिसको फुर्सत हो वह सुलझाया करे,
आपकी हर बात में एक पेंच है।
हो चुकी बस हो चुकी 'बिस्मिल' की क़दर,
आपकी नजरों में बन्दा हेच है।

❀ ❀ ❀

वह बोले अगर ज़बां खुली है,
क़ानून की भी दुकां खुली है।
'बिस्मिल' न रुकेगी अब यह हर्गिज,
महफिल में मेरी जुबां खुली है।

मज़मूने मोहब्बत की यह तमहीद[१] बड़ी है,
उम्मीद पै जीता हूँ कि उम्मीद बड़ी है।
'बिस्मिल' तुम्हें क्या अर्ज़ तमन्ना की ज़रूरत,
कुछ भी न कहो चुप रहो ताकीद बड़ी है।

❀ ❀ ❀

अब उभरने न कभी देगा मेरा जोश मुझे,
आप क़ानून से करने लगे ख़ामोश मुझे।
ज़ीस्त[२] कहते हैं जिसे नींद है बेहोशी की,
मौत जब आएगी तो आएगा कुछ होश मुझे।
देख लेता हूँ ज़माने की तरफ़ ऐ 'बिस्मिल',
अब तड़पने का वह बाक़ी न रहा जोश मुझे।

❀ ❀ ❀

मेरा तबीब[3] नहीं कोई अब ख़ुदा के सिवा,
करेंगे और यह क्या डाक्टर दवा के सिवा।

❀ ❀ ❀

इसे कुर्बान, उसे चाहने वाला पाया,
हमने एक एक को बस तालिबे[४] दुनियाँ पाया।
दहशतो ख़ौफ़ के वायस से ज़बां भी न खुली,
मैंने गर्दन में जो क़ानून का फन्दा पाया।
अपनी ही अक़्ल पै मौक़ूफ़ है आलम की शिनाख़्त,
हमने जैसा जिसे समझा, उसे वैसा पाया।

१—भूमिका। २—ज़िन्दगी। ३—वैद्य। ४—गाहक।

मैं जो दर्बार से निकला तो जनाबे 'बिस्मिल',
पूंछा एक एक ने यह मुझसे, कहो क्या पाया।

❀ ❀ ❀

मैं आबरू पसन्द न दौलत पसन्द हूँ,
हां यह ज़रूर है कि मोहब्बत पसन्द हूँ।
बदनाम कर रहे हैं वह 'बिस्मिल' को हर तरफ़,
यह किसने कह दिया है कि शोहरत पसन्द हूँ।

❀ ❀ ❀

कब देख के ख़फ़ा उन्हें क़ाबू में रह सके,
कहने की बात जो थी वही हम न कह सके।
हरदम तरह तरह के मसायब[1] से काम है,
'बिस्मिल' कहीं भी चार घड़ी ख़ुश न रह सके।

❀ ❀ ❀

पाजामे की इज्ज़त नहीं पतलून के आगे,
क्यों बहस अबस[2] हम करें क़ानून के आगे।
गर्मी से कोई दम हमें राहत नहीं मिलती,
शर्मा गई दोज़ख भी मई जून के आगे।
पामालिये[3] तौक़ीर[4] से डरते हो जो 'बिस्मिल',
तो सर न उठाना कभी क़ानून से आगे।

❀ ❀ ❀

तङ्ग हूँ जीने से मैं यह काम करने दीजिए,
डाक्टर साहब सरकिए मुझको मरने दीजिए।

१—दुःख। २—व्यर्थ। ३—मिटाना। ४—इज़्ज़त।

वह यह कहते हैं तड़पने से तो मरना ख़ूब है,
हजरते 'बिस्मिल, अगर मरते हों, मरने दीजिए।

❀ ❀ ❀

जो बेहोशी के आलम में भी क़ायम होश रखता है,
हमें यह देखना है किस क़दर वह जोश रखता है।
कहूँ तो क्या कहूँ नय रंग आलम देखकर 'बिस्मिल',
मुझे क़ानूने क़ुदरत हर जगह ख़ामोश रखता है।

❀ ❀ ❀

धुन के पक्के जो हैं वह ज़ुल्म सहे जाते हैं,
बात कहने की मगर सबसे कहे जाते हैं।
सैकड़ों कोस गया हमसे ज़माना आगे,
पीछे हम सारे ज़माने से रहे जाते हैं।
सारी दुनियां की निगाहों में वह अच्छा है बहुत,
फिर भी 'बिस्मिल' को बुरा आप कहे जाते हैं।

❀ ❀ ❀

उन्हें बेतरह मुझसे अब दुश्मनी है,
मुसीबत में दिल और ज़हमत में जी है।
तक़ल्लुफ़ ने रंग अपना आकर जमाया,
कहां अब वह पोशाक़ में सादगी है।
सुनाऊं अगर हो कोई सुनने वाला,
बड़ी लम्बी चौड़ी मेरी 'हिस्ट्री' है।

कहे कौन दुनियाँ में 'बिस्मिल' को अच्छा,
जो दुनिया कहे यह बुरा आदमी है।

❀ ❀ ❀

बदला है जो रंग कुछ न पूछो,
आपस की यह जंग कुछ न पूछो।
हर वक्त नया सितम नया जौर[1],
हम जी से हैं तङ्ग कुछ न पूछो।
'बिस्मिल' की है शायरी निराली,
यह रङ्ग यह ढङ्ग कुछ न पूछो।

❀ ❀ ❀

सितम पर हम सितम लाखों सहेंगे,
मगर हिर-फिर के गिरजा में रहेंगे।
बदन में ख़ून तक बाक़ी नहीं है,
मेरी आंखों से आंसू क्या बहेंगे।
सभा में चुप नहीं रहने के 'बिस्मिल',
खरी जो बात होगी वह कहेंगे।

❀ ❀ ❀

मेरा सर काट कर क़ातिल बने हैं।
लहू में दोनों हाथ उनके सने हैं।
किसी दिन आपको झुकना पड़ेगा,
नहीं मालूम मुझसे क्यों तने हैं।

१—अत्याचार।

कोई पूछे न पूछे उनको 'बिस्मिल',
वह अपने मुँह मियां मिट्ठू बने हैं।

❀ ❀ ❀

सरे तस्लीम इस दहशत से ख़म[1] है,
वह अब खंजर है जो उनका क़लम है।
नहीं होती बसर आराम से उम्र,
हमारी इस क़द्र तनख़्वाह कम है।
हमें क्या वास्ता ऐशो ख़ुशी से,
हमारे सर पै दुनिया भर का ग़म है।
वह हमको कुछ समझते ही नहीं हैं,
हमारा मर्तबा इस दर्जा कम है।
जो कह सकते नहीं लिखते हैं उसको,
हमारे हाथ में 'बिस्मिल' क़लम है।

❀ ❀ ❀

राह में ख़ूब मुलाक़ात हुई,
मिल गए आप बड़ी बात हुई।
ख़त्म जब रात हुई दिन निकला,
दिन हुवा ख़त्म तो फिर रात हुई।
रात-दिन रोने से है काम इसको,
चश्मे[2] तर क्या हुई, बरसात हुई।
याद रक्खा इन्हें बर्सों उसने,
जिसकी 'बिस्मिल' से मुलाक़ात हुई।

१—झुका हुआ। २—आंख।

कहीं घर को न अपने भूल जाना,
समझ कर सोच कर स्कूल जाना।
कोई यह बाग़ में फूलों से कह दे,
बुरा है रंगो बू पर फूल जाना।
वही होगा ख़ुदा की याद में मस्त,
जिसे आयेगा खुद को भूल जाना।
खुदी[1] में लुत्फ़ क्या उल्फ़त का 'बिस्मिल',
तुम्हें लाज़िम था ख़ुद को भूल जाना।

❀ ❀ ❀

यह आलम देखकर दम घुट रहा है,
कि 'फैशन' में ख़ज़ाना लुट रहा है।
पिसे हैं इस तरह क़ानून से हम,
सड़क पर जैसे कङ्कर कुट रहा है।
यह कह कर बन्द कीं 'बिस्मिल' ने आंखें,
हमारा साथ सब से छुट रहा है।

❀ ❀ ❀

तुम्हारी जो सदा[2] है बेसुरी है,
करो तर्क इसको यह आदत बुरी है।
वो आदी हो गए काँटा छुरी के,
वहां खाने में भी कांटा छुरी है।

१—घमंड। २ आवाज़।

जो कहता हूँ वह मैं कहता हूँ मुँह पर,
यही तो मुझमें एक आदत बुरी है।
हुवा जीना बहुत दुश्वार 'बिस्मिल',
हमारा हल्क़ है उनकी छुरी है।

❀ ❀ ❀

अलम है रंज है सदमा है ग़म है,
सहूँगा सब को जब तक दम में दम है।
कभी दावा था तुमको दोस्ती का,
मोहब्बत आजकल क्यों हम से कम है।
'इलाहाबाद में सब कह रहे हैं,
ग़नीमत हज़रते 'बिस्मिल' का दम है।

❀ ❀ ❀

पाठशाले का सबक़ सब भूल जाना चाहिए,
मुख्तसिर यह है मुझे स्कूल जाना चाहिए।
उनसे पूछो हज़रते 'बिस्मिल' ये क्या दस्तूर है,
मैं न याद आऊँ तो मुझको भूल जाना चाहिए।

❀ ❀ ❀

खुदा ही खैर करे क्या पयाम आया है,
बजाय ख़त, मुझे 'टेलीग्राम' आया है।
खुशी के साथ वहाँ जांय हज़रते 'बिस्मिल',
यहाँ तुम आओ यह उनका पयाम आया है।

ज़िन्दगी में यह काम करना है,
एक न एक रोज़ हमको मरना है।
फिर गया बेतरह हवा का रुख़,
कुछ समझ सोच कर उभरना है।
क्यों वतन पर न हों फ़िदा 'बिस्मिल',
मर के दुनियां में नाम करना है।

❀ ❀ ❀

मुँह से हम कहते हैं भगवान् का दर्शन मिल जाय,
और है पेट का यह हुक्म कि भोजन मिल जाय।
कोई अरमान नहीं इसके सिवा ऐ 'बिस्मिल',
उनके फ़ैशन से हमारा कहीं फ़ैशन मिल जाय।

❀ ❀ ❀

वह और क्या बताए दुनिया में काम अपना,
आता है बरहमन को बस राम राम जपना।
बंगलों में जाके 'बिस्मिल' करने लगे ख़ुशामद,
मतलब यह है कि समझें वो ख़ैरख़्वाह अपना।

❀ ❀ ❀

दुनिया को छोड़ बैठे फ़क़त इसके वास्ते,
'मिस्टर' हैं बेक़रार बहुत 'मिस' के वास्ते।
'बिस्मिल' को बात-चीत की फ़ुर्सत नहीं है अब,
तैय्यार हो रहे हैं यह 'आफ़िस' के वास्ते।

चार दिन की ज़ीस्त[1] में यह काम करना चाहिए,
दूसरों को फ़ायदा पहुँचा के मरना चाहिए।
पूछते हैं लीडरों से हज़रते 'बिस्मिल' सलाह,
क्या न करना चाहिए क्या हमको करना चाहिए।

❀ ❀ ❀

सब पूछते थे किसलिए ख़ामोश रह सके,
कहने की जो थी बात वही हम न कह सके।
'बिस्मिल' यह उठते बैठते हरदम रहे ख़याल,
वह काम कर, बुरा तुझे दुनिया न कह सके।

❀ ❀ ❀

दरसे[2] हक़ भूले हुए हैं क्या ग़ज़ब की भूल है,
हाफ़िज़े[3] में उनके या 'काजिल' है या 'स्कूल' है।
हम तरक्की दे नहीं सकते हैं काले को कभी,
वजह यह सच है यह गोरे का सबब माक़ूल है।
जो दबे, कुछ और भी उसको दबाना चाहिए,
ये कहाँ का क़ायदा है ये कहाँ का रूल है।
फ़र्श पर अब बैठना तो दाख़िले फ़ैशन नहीं,
बैठने के वास्ते कुर्सी है या स्टूल है,
शौक़ से अख़बार में पढ़ते हैं न्यू लाइट के लोग,
हज़रते 'बिस्मिल' तुम्हारी शायरी मक़बूल है।

१—जीवन। २—ईश्वरीय पाठ। ३—स्मरण।

रहा जो दोस्त बसीं, दोस्ती का हक़ नहीं समझा,
उसे दुश्मन समझ कर मैं तो मारे[1] आस्तीं समझा।
हज़ारों लफ़्ज़, एक एक लफ़्ज़ में भी सैकड़ों मानी,
तुम्हारी बात सब समझे मगर मैं कुछ नहीं समझा।
किसी का डर नहीं यह बरमला[2] कहता हूँ ऐ 'बिस्मिल',
जो मुझको कुछ नहीं समझा उसे मैं कुछ नहीं समझा।

❀ ❀ ❀

क्या समझ बूझ के दुनिया का तमाशाई हूँ,
दिल बहलने के लिए कोई तमाशा न रहा।
वही जलवा है वही हुस्न वही बर्क़े-जमाल[3],
हाँ यह कहिए कि कोई देखने वाला न रहा।
फेर ली आपने भी उसकी तरफ़ से आँखें,
अब तो 'बिस्मिल' का कोई पूछने वाला न रहा।

❀ ❀ ❀

क्या फ़िक्र ज़्यादा की है कम चल नहीं सकता,
मैं ज़ोफ़[4] से दो चार क़दम चल नहीं सकता।
मालूम हुई हमको हक़ीक़त यह दमेनज़ाअ[5],
बे हुक्म ख़ुदा दम कोई दम चल नहीं सकता।
वह सामने आए जिसे दावाए सख़ुन[6] हो,
किस रंग में 'बिस्मिल' का क़लम चल नहीं सकता।

१—आस्तीन का साँप। २—साफ़। ३—सुन्दरता की बिजली।
४—कमज़ोरी। ५—अन्तिम समय। ६—कविता।

क्या खबर इससे बढ़ा कुछ मर्त्तबा या घट गया,
मिल गई दर्बार में कुर्सी तो बन्दा डट गया।
किस लिए तक़लीफ़ देते हैं वोह अब तलवार को,
मुझमें दम बाक़ी नहीं मेरा गला तो कट गया।
कर नहीं सकती रफ़ू क्या इसमें 'सिंगर' की मशीन,
शेख साहब रो रहे हैं पायजामा फट गया।
जिस जगह 'बिस्मिल' किया अहबाब[1] ने मुझको तलब,
मैं वहां उड़कर गया, फ़ौरन गया, झटपट गया।

❀ ❀ ❀

दिल में वो गर्मी कहां अब दिल हमारा सर्द है,
ख़ून की सुर्ख़ी के ग़म में रंग रुख का ज़र्द है।
दोस्ती थी मास्टर साहब की बस स्कूल तक,
कौन है ग़मख़्वार किसका कौन अब हमदर्द है।
आते जाते बस वही पामाल करने से ग़रज़,
आपकी नज़रों में क्या बन्दा सड़क की गर्द है।
शायद ऐसा हो मगर हमको यक़ीं आता नहीं,
लोग कहते हैं कि 'बिस्मिल' शायरी में फ़र्द है।

❀ ❀ ❀

बरगस्ता[2] है ज़माना किस्मत है अपनी खोटी,
खाने को पेटभर अब मिलती नहीं जो रोटी।

१—मित्रगण। २—फिरा हुआ।

तहज़ीब मुफ़लसी से मैं डर रहा हूँ 'बिस्मिल',
बन जायगी किसी दिन धोती भी क्या लंगोटी।

❀ ❀ ❀

यह चौकीदार से कहता रहा कल गाँव का पासी,
तरद्दुद क्या अगर रोटी हो ताज़ो दाल हो बासी।
करो तो ग़ौर ऐ 'बिस्मिल' हुकूमत कल जो करते थे,
बने हैं आज आ आ कर वही दफ़्तर में चपरासी।

❀ ❀ ❀

क्यों न बंगले पर फिरैं अहबाब इतराए हुए,
जो कलक्टर थे वो बन कर लाट हैं आए हुए।
कह रहे थे लोग यारों में बड़ी शेखी के साथ,
हम हज़ारों इस तरह का हैं डिनर खाए हुए।
अर्दली यह कह के लेता है खबर एक एक की,
क्यों हो बदली की तरह बंगले पै तुम छाए हुए।
रात दिन कालेज के लड़कों में इसी का ज़िक्र है,
वह विलायत से नई डिग्री हैं एक लाए हुए।
लोग कहते हैं तड़पने को हमारे देखकर,
तुम हो 'बिस्मिल' क्या किसी क़ातिल के तड़पाए हुए।

❀ ❀ ❀

उनका मतलब है तबीयत का बदलना सीखो,
है यह क़ानून कि क़ानून पै चलना सीखो।

अजब यह इनक़लाबे[1] आस्मां है,
सुना है आजकल बीवी, मियां है।

❀ ❀ ❀

दिल्लगी .खूब है यह दिल के लिए,
बिलबिलाने लगे वह 'बिल' के लिए।

❀ ❀ ❀

क़द्र भी और इसमें ख्वारी[2] भी,
एक तमाशा है पेशकारी भी।

❀ ❀ ❀

ताज्जब क्या अगर गर्मी है दिल में,
लगी है आग जब आटे की 'मिल' में।

❀ ❀ ❀

रवा है बुलबुले शैदा चमन के वास्ते मरना,
वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना।
वतन से दूर क्या परदेस जाएं हजरते 'बिस्मिल',
नहीं बेहतर, कहीं दो गज़ कफ़न के वास्ते मरना।

❀ ❀ ❀

ख़ाक होना है मुझे ख़ाक की हस्ती क्या है,
चार दिन बाद बता दूंगा कि मस्ती क्या है।

१—क्रान्ति। २—ज़िल्लत।

नेस्ती[1] से उन्हें आगाह करो ऐ 'बिस्मिल',
जो समझते ही नहीं दिल में कि हस्ती क्या है।

❀ ❀ ❀

मुनहरिफ़[2] रहते हैं मुझसे दोस्त भी ग़मख़्वार भी,
मेरे 'फ़ेवर' में नहीं लिखता कोई अख़बार भी।
जो कोई मिलता है, मैं करता हूँ उससे यह सवाल,
हो गया पेशे कमीशन आपका इज़हार भी।
हज़रते 'बिस्मिल' ने देखा अब नया सामाने जंग,
तोप के आगे तो रक्खी रह गई तलवार भी।

❀ ❀ ❀

कौन उनकी बात समझे कौन उनकी बात जाने,
हुशियार वह बड़े हैं वह हैं बड़े सयाने।
'बिस्मिल' किसी से मिलना खुलकर हो क्या गवारा,
हम तो यह चाहते हैं दुनिया हमें न जाने।

❀ ❀ ❀

लीडर का रोना एक तरफ़ पबलिक का रोना एक तरफ़,
दोनों का असर क्या रखता है सरकार का होना एक तरफ़।
वह क़द्र नहीं कुछ भी करते कुछ भी नहीं उनकी नज़रों में,
जान अपनी खोनी एक तरफ़ दिल अपना खोना एक तरफ़।
हँसता है जमाना दिल में इसे सोचो तो सही समझो तो सही,
ऐ शेख़ो बरहमन अब रक्खो मज़हब का रोना एक तरफ़।

१—मृत्यु। २—ख़िलाफ़।

आलम से नहीं कुछ हो सकता पत्थर की लकीर इसको समझो।
दुनिया का होना एक तरफ़ सरकार का होना एक तरफ़।
क्या मंज़रे इबरत[1] ये भी है दुनिया के लिए आलम के लिए,
क़ातिल का हँसना एक तरफ़ 'बिस्मिल' का रोना एक तरफ़।

❀ ❀ ❀

हर जगह 'साइंस' ही का तज़्किरा[2] सुनता हूँ मैं,
आज एक ईजाद[3] है कल दूसरी ईजाद है।
चार दिन ही में वह मुझको भूल बैठा किस तरह,
जो हमेशा ख़त में लिखता था तुम्हारी याद है।
क्यों न फ़न्ने[4] शायरी हो बेतरह 'बिस्मिल' ज़लील,
आज जो शागिर्द है कल देखिए उस्ताद है।

❀ ❀ ❀

समझ लो अपने दिल में तुम कि ऐसा ढब नहीं चलता,
फ़िसादो शर[5] से दुनियाँ में कोई मजहब नहीं चलता।

❀ ❀ ❀

रहूं ज़माने में, क्योंकर ज़माना साज़ है सब,
ज़माना कुछ नहीं दिल हट गया ज़माने से।
बुरी बला में फँसे ख़ैर अब नहीं 'बिस्मिल',
तुम्हारे नाम सफ़ीना कटा है थाने से।

१—शिक्षा। २—ज़िक्र। ३—आविष्कार। ४—कला। ५—झगड़ा।

आज़ार[1] शबोरोज़[2] का सहना नहीं अच्छा,
यों रहना है दुनियां में तो रहना नहीं अच्छा।
सुनते नहीं कहना वो किसी का कभी दिल से,
कहने के ये मानी है तो कहना नहीं अच्छा।
'बिस्मिल' कही अहबाब ने ये मुझसे नई बात,
पढ़ना मेरा अच्छा, मेरा कहना नहीं अच्छा।

❀ ❀ ❀

रवानियों में ये आगे निकल नहीं सकती,
क़लम के सामने तलवार चल नहीं सकती।
हज़ार सोचिए, पत्ती निकल नहीं सकती,
कि खुश्क शाख कभी फूल फल नहीं सकती।
समझ लें आप कि 'बिस्मिल' भी यहां मौजूद,
सभा में दाल किसी की भी गल नहीं सकती।

❀ ❀ ❀

कुत्ते लड़ाए जायँगे बोटी के वास्ते,
अख़बार अब निकलते हैं रोटी के वास्ते।
आपस में नोक-झोंक है मज़हब के नाम पर,
डाढ़ी के वास्ते कहीं चोटी के वास्ते।
धोती को छोड़ कर बढ़े पतलून की तरफ़,
तरसेंगे कुछ दिनों में लँगोटी के वास्ते।

१—दुःख। २—रात दिन।

'बिस्मिल' है इस पे मुनहसिर[1] अपनी शिकम पूरी,
दफ़्तर को रोज़ जाते हैं रोटी के वास्ते।

❀ ❀ ❀

उम्र यारों की गुज़रती नहीं परहेज़ के साथ,
रोज़ होटल में डिनर खाते हैं अंग्रेज के साथ।
उसको हसरत है न मन्दिर न बुतों की 'बिस्मिल',
विरहमन 'चर्च' में है एक मिसे नौख़ेज[2] के साथ।

❀ ❀ ❀

रंजो ग़म से निजात मुश्किल है,
ऐशो-इशरत[3] को बात मुश्किल है।
किस तरह उम्र गुज़रे ऐ 'बिस्मिल',
दिन कठिन है तो रात मुश्किल है।

❀ ❀ ❀

कहने वाले तुम्हें क्या कहते हैं,
दुश्मने अहले वफ़ा कहते हैं।
हैं ज़माने की बुराई हम में,
हम ज़माने को बुरा कहते हैं।
जो समझ में न किसी के आए,
हम उसी को तो ख़ुदा कहते हैं।
सब तो कहते हैं कि वो अच्छा है,
आप 'बिस्मिल' को बुरा कहते हैं।

१—सहारा। २—युवती। ३—आनन्द।

ख़्याल आता है दिल में कब हमारा,
सुने क्यों हमसे वो मतलब हमारा।
हमें है उन्स[1] हर मज़हब से 'बिस्मिल',
नहीं है कोई भी मज़हब हमारा।

❀ ❀ ❀

तंग आकर उन्हीं के हो बैठे,
हम गुलामी में सबको रो बैठे।
वेद से वास्ता नहीं 'बिस्मिल',
पढ़ के कालिज में दीन खो बैठे।

❀ ❀ ❀

नतीजा जीने मरने का मिला क्या,
न था दुनियां में कुछ दुनियां में था क्या।
बजा करती है दोनों हाथ ताली,
बनावट में मोहब्बत का मज़ा क्या।
तड़पते हैं ग़मे उल्फ़त में 'बिस्मिल',
नहीं मालूम हमको हो गया क्या।

❀ ❀ ❀

हम यह तर्के क़सूर कर न सके,
दिल को दुनियां से दूर कर न सके।
सबसे अकड़ा किए मगर 'बिस्मिल',
मौत से कुछ ग़ुरूर कर न सके।

1—प्रेम।

मुझ से बरगश्ता[1] वो निगाहें हैं,
हर घड़ी मेरे लब पर आहें हैं।
मिलने वाला मिले तो ऐ 'बिस्मिल',
उनसे मिलने की लाख राहें हैं।

❀ ❀ ❀

यह दुनियां को नसीहत कर हमेशा,
ज़माने से मोहब्बत कर हमेशा।
न हो अरमाँ न कोई आरज़ू हो,
तमन्ना कर यह हसरत कर हमेशा।
अज़ीज़ों की अदावत पर भी 'बिस्मिल',
मुनासिब है मोहब्बत कर हमेशा।

❀ ❀ ❀

किसी से क्यों कहूँ ग़म किस लिए है,
नहीं ग़म, तो मेरा दम किस लिए है।
जो मुझ पर सब से रहती थी ज़्यादा,
वही तेरी नज़र कम किस लिए है।
समझ ही में नहीं आता ऐ 'बिस्मिल',
मिज़ाजे यार बरहम[2] किस लिए है।

❀ ❀ ❀

कुछ कह सकें न उनसे तो हम जी के क्या करें,
हरदम लहू के घूंट यों ही पी के क्या करें।

१—ख़िलाफ़। २—क्रोधित।

'बिस्मिल' हुजूमे[1] ग़म से मिली किस घड़ी नजात,
जीना अगर यही है तो फिर जी के क्या करें।

❀ ❀ ❀

सबब यही है डिनर का जो धूमधाम से है,
कि लोग जाने उन्हें, मतलब उनको काम से है।
कोई बुरा कहे कहने दो उसको ऐ 'बिस्मिल',
हमें ज़माने में तो काम अपने काम से है।

❀ ❀ ❀

बशर को चाहिए हर वक़्त नेक काम करे,
ग़रज़ यह जीने से दुनिया में है कि नाम करे।
सलाम दूर से ऐसे सलाम को 'बिस्मिल',
वो चाहते हैं कि दुनिया हमें सलाम करे।

❀ ❀ ❀

वो कहते हैं जो इज़्ज़त है मेरी सरकार में देखो,
चलो दर्बार में चलकर ज़रा दर्बार में देखो।
अगर सुनने का मौक़ा आस्माँ तुमको नहीं देता,
कलामे 'बिस्मिले' रंगीं बयां अख़बार में देखो।

❀ ❀ ❀

फ़क़त इन मज़हबी झगड़ों से मिलती सब को रोटी है,
न अब डाढ़ी वो डाढ़ी है न अब चोटी वो चोटी है।

१—जमघट।

लड़ा करते हैं ऐ 'बिस्मिल' वतनवाले जो आपस में,
इसी से हो गया मालूम क़िस्मत अपनी खोटी है।

❀ ❀ ❀

मुद्दआ[1] नाम है किस चीज़ का मतलब कैसा,
है नया रंग नया ढंग नया ढब कैसा।
पूछे मज़हब के यह दीवानों से कोई 'बिस्मिल',
जिससे झगड़ा उठे आपस में वह मज़हब कैसा।

❀ ❀ ❀

इस क़दर हर आदमी को काम करना चाहिए,
कुछ न कुछ दुनिया में रह कर नाम करना चाहिए।
लोग कहते हैं यह आलम में बहुत है नेक-नाम,
हज़रते 'बिस्मिल' को अब बदनाम करना चाहिए।

❀ ❀ ❀

हम कहां दिल से आह करते हैं,
ज़ब्ते ग़म का निबाह करते हैं।
बोलने का नहीं किसी को हुक्म,
दिल में सब आह आह करते हैं।
नहीं जचती निगाह में दुनिया,
हम जो इस पर निगाह करते हैं।
शायरी मेरी कुछ नहीं 'बिस्मिल',
लोग क्यों वाह वाह करते हैं।

१—इच्छा।

मुबारकबाद, फागुन आगया अब,
कड़ाके की कहीं सर्दी नहीं है।
बने हैं कहने सुनने के लिए मर्द,
मगर हम में जवांमर्दी नहीं है।
ज़माना हो गया बेदर्द 'बिस्मिल',
किसी में अब वो हमदर्दी नहीं है।

❀ ❀ ❀

ये माना मुझको कर दोगे नज़रबन्द,
नज़र तो हो नहीं सकती मगर बन्द।
न देखी जायगी मेरी तरक्क़ी,
करेंगे अब तरक्क़ी का वो दर बन्द।
नज़रवाले नज़र करते नहीं क्यों,
हुए हैं हज़रते 'बिस्मिल' नज़रबन्द।

❀ ❀ ❀

कोई 'जापान' कोई 'रूस' के साथ,
और मैं आपके जुलूस के साथ।

❀ ❀ ❀

बात यह मुझको पसन्द आई जनाबे 'पोप' की,
इस ज़माने में हुकूमत रह गई है तोप की।

❀ ❀ ❀

क्या बताऊँ क्या जताऊँ क्या कहूँ क्या चीज़ हूँ,
नाम है 'बिस्मिल' मेरा मैं बन्दए नाचीज़ हूँ।

अपने मतलब की सब ये घातें हैं,
एक मुँह है हज़ार बातें हैं।

❀ ❀ ❀

खिलाफ़ अपनों से होकर मुल्क में वो जा-बजा चमके,
चमकना ये नहीं अच्छा जो यों चमके तो क्या चमके।

❀ ❀ ❀

जब कहने पर आते हैं तो क्या क्या नहीं कहते,
भूले से कभी मुझको वो अच्छा नहीं कहते।

❀ ❀ ❀

समझवाले ये कहते हैं, ज़माना क्या समझता है;
वो है सब से बुरा, अपने को जो अच्छा समझता है।

❀ ❀ ❀

नहीं होने की मंजिल तै हमारी,
अलग सब से अगर है लै हमारी।

❀ ❀ ❀

दुनिया में भलाई कोई कर क्यों नहीं जाते,
जब ये नहीं कर सकते तो मर क्यों नहीं जाते।
अब और कहें क्या यह है तक़दीर की ख़ूबी,
बिगड़े हुए काम अपने सवँर क्यों नहीं जाते।

❀ ❀ ❀

क्यों समझ ले कोई लहजे में हैं हिलनेवाले,
वो किसी शर्त पर हमसे नहीं मिलनेवाले।

कहते हैं ग़ुंचए[1] उम्मीद जिन्हें ऐ 'बिस्मिल',
इन हवाओं से वह हरगिज़ नहीं खिलने वाले।

❀ ❀ ❀

अश्क[2] आंखों में भरे रहते हैं फ़रते[3] ग़म से,
मुफ़लिसी क़ौम को देखी नहीं जाती हम से।

❀ ❀ ❀

बे सबब बे फ़ायदा सर अपना यहाँ धुनते नहीं,
सब की सुनते हैं हमारी बात तो सुनते नहीं।

❀ ❀ ❀

उस पे रखते हैं निगाहे लुत्फ़ जब सरकार भी,
क्यों न उसकी सी लिखे 'पायनियर' अख़बार भी।
एक दिन 'बिस्मिल' तुम्हें बिस्मिल बनाएंगे ज़रूर,
पास उनके तीर भी बन्दूक भी तलवार भी।

❀ ❀ ❀

बेखुदी में कह रहा हूं होश अगर आजाएगा,
देखने का जो तमाशा है वो देखा जायगा।
हज़रते 'बिस्मिल' तड़पकर जान देते हैं अबस[4],
यह समां बेदर्द क़ातिल से न देखा जायगा।

१—आशारूपी कली। २—आंसू। ३—बहुत। ४—बेकार।

जो ये फ़र्माते हैं ये ऐसे हैं वो ऐसे हैं,
वह बुरे सब से हैं वह कौन बहुत अच्छे हैं।

❀ ❀ ❀

हमको दुनिया के झमेलों का कुछ एहसास[1] नहीं,
एक कोने में अलग सब से जुदा बैठे हैं।
मुद्दआ कुछ नहीं और उनका सभा से 'बिस्मिल',
अपनी शोहरत के लिए जान दिये देते हैं।

❀ ❀ ❀

नाउम्मेदी भी नज़र आती है उम्मीद के बाद,
किसलिए करते हैं तक़रीर[2] वो तमहीद[3] के बाद।
पढ़कर अख़बार निकाला ये नतीजा मैंने,
लाट साहब की हर स्पीच है तमहीद के बाद।
ऐसे मिलने से तो बेहतर है न मिलना 'बिस्मिल',
क्या मिले हमसे जो वह ईद मिले ईद के बाद।

❀ ❀ ❀

दिल से जो से शौक से अब काम करता कौन है,
वादिए[4] ख़ौफ़ोख़तर में पांव धरता कौन है।
नाँव भी मझधार में बादे[5] मुख़ालिफ़ भी क़रीब,
डूबकर दरियाएग़म से पार उतरता कौन है।

❀ ❀ ❀

मैं चैन से दम भर कभी सो ही नहीं सकता,
कहते हैं सुकूं[6] जिसको वो होही नहीं सकता।

१—असर। २—व्याख्यान। ३—भूमिका। ४—घाटी। ५—विपरीत वायु। ६—आराम।

महरूमिए[1] तक़दीर पर हो जब्त कहां तक,
रोना तो इसी का है रो ही नहीं सकता।

❀ ❀ ❀

कुछ सड़क में आ गए घर कुछ सड़क में नप गए,
इश्तिहार आते तबाही अब गजट में छप गए।
पेट के धन्धों में फ़ुर्सत हमको मिलती है मुहाल,
सब से अच्छे वो थे जो दिन रात हर को जप गए।
आए थे जीने के ख़ातिर चार छः दस बीस दिन,
सब थे मरने के लिए आख़िर को सब मर खप गए।
हज़रते 'बिस्मिल' अब अपनी और क्या तौक़ीर[2] हो,
हमको है इसकी मसर्रत[3] 'पानियर' में छप गए।

❀ ❀ ❀

बाग़े जहां में कलियों को खिलना भी चाहिए,
मिलने से काम निकले तो मिलना भी चाहिए।
ये वक़्त वो नहीं कि चले बैठने से काम,
अपनी जगह से आप को हिलना भी चाहिए।

❀ ❀ ❀

शर्त्ते वफ़ा में जिनकी जबीं[4] सजदारेज़[5] है,
जन्नत से बढ़कर उनके लिए 'गोलमेज़' है।

१—वंचित रहना। २—आदर। ३—आनन्द। ४—माथा। ५—सर झुकाना।

किस काम का वो काम निहां जिसमें घात हो,
मतलब कि जब है बात कि मतलब की बात हो।

❀ ❀ ❀

मसरूफ़े सुलह दोनों ज़बर्दस्त हाथ हैं,
'जैकर', भी दौड़-धूप में 'सप्रू' के साथ हैं।

❀ ❀ ❀

छिड़ेगी जंग वहां शेख़ में बरहमन में,
इसी सबब से तो है 'गोलमेज़' लंदन में।

❀ ❀ ❀

मिस्टर 'फुलर' का रब्त[1] बढ़ा 'शिवटहल' के साथ,
मोटर की दौड़ ख़ूब नहीं इस बहल के साथ।

❀ ❀ ❀

सज रहा है आज घर किसके लिए,
है ये सामाने 'डिनर' किसके लिए।
इसके रोने का सबब खुलता नहीं,
रो रही है चश्मेतर किसके लिए।
जानते हैं जान अपनी जायगी,
फिर है ये खौफ़ोख़तर किसके लिए।

1—मेल।

उनके बँगले पर चलो माथा घिसें,
हज़रते 'बिस्मिल' है सर किसके लिए।

❀ ❀ ❀

करेंगे वो कभी कारे जहां बन्द,
अभी तो हुक्म है कर लो ज़बां बन्द।
मिले मिट्टी में क्या क्या रहनेवाले,
पड़े हैं कैसे कैसे अब मकां बन्द।
कोई सुनता नहीं शिकवों[1] को 'बिस्मिल',
करो तुम बेतुकी ये दास्तां बन्द।

❀ ❀ ❀

दर्दमन्दे इश्को उल्फ़त को सज़ा मिलती रही,
दम में उसके दम रहा जब तक दवा मिलती रही।
उनके बँगले पर था नूर आंखों में दिल में था सरूर,
रोशनी बिजली की, बिजली की हवा मिलती रही।
दिल लगाने का नतीजा मैं यही देखा किया,
ज़िन्दगी में मुझको मरने की दुआ मिलती रही।
हज़रते 'बिस्मिल' ने लूटे दर्दे उल्फ़त के मज़े,
मुफ़्त इनको 'डाक्टर झा' की दवा मिलती रही।

❀ ❀ ❀

हम उम्मीदे इर्तबाते[2] दिल किसी से क्या करें,
दोस्ती दुनिया में ऐ 'बिस्मिल' किसी से क्या करें।

१—गिला। २—मेल।

चल के होटल में खाओ ऐ 'बिस्मिल'
केक बिस्कुट है और अंडा है।

❀ ❀ ❀

तालीम का असर है जो सांचे में ढल गए,
मालूम क्या नहीं तुम्हें क्यों तुम बदल गए।

❀ ❀ ❀

कोई अब सुनता नहीं यह नालओ फ़र्याद भी,
पड़ गए संकट में देखो 'संकटा प्रसाद' भी।

❀ ❀ ❀

उनसे कल इस बात पर थी बहस गर्म,
मज़हबी झगड़ों को ठंडा कीजिये।

❀ ❀ ❀

पेश चलती नहीं है ऐ 'बिस्मिल',
कहने सुनने को पेशकार हैं हम।

❀ ❀ ❀

देखिये साहब ने दुनिया भर को अपना कर लिया,
आप से कुछ हो सका भी आपने क्या कर लिया।
हसरते बाज़ारे दुनिया सब को लाई खींच कर,
हमने भी चल फिर के कुछ मतलब का सौदा कर लिया।
दीन जाता है तो जाये सेठ जी को ग़म नहीं,
मालोज़र अच्छी तरह दुनिया में पैदा कर लिया।

दर हक़ीक़त हमने 'बिस्मल' में ये देखा ख़ास वस्फ़[१],
जिससे दो बातें हुई बस उसको अपना कर लिया।

❀ ❀ ❀

शौक़े नमूद[२] हो तो सँवरना भी सीखिए,
दरिया में ग़र्क़ होकर उभरना भी सीखिए।
पैवन्दे[3] ख़ाक हो के रहे ख़ाक में तो क्या,
मिट्टी में मिल के आप सँवरना भी सीखिए।
हम को पसन्द आगई 'बिस्मिल' की ये सलाह,
जीने की आरज़ू हो तो मरना भी सीखिए।

❀ ❀ ❀

मुसीबत के लिए दिल है मुसीबत दिल को सहने दो,
इनायत क्यों करो इस पर इनायत अपनी रहने दो।
निहायत शौक़ से सुनने को मैं राज़ी हूँ ऐ 'बिस्मिल',
बुरा मुझ को अगर दुनिया कहा करती है कहने दो।

❀ ❀ ❀

परवाह जो डाक्टर को नहीं मेरे हाल की,
बेकार पी रहा हूँ दवा अस्पताल की।

❀ ❀ ❀

क्या बताऊँ क्या कहूँ क्या सदमए जांकाह[४] है,
ये न पूछो मुझसे तुम कितनी मेरी तनख़्वाह है।

१—खूबी। २—पनपना। ३—मिलना। ४—दम घुटाने वाला।

हर तरह इसको हमने देखा है,
लीडरी क्या है एक तमाशा है।

❀ ❀ ❀

हज़रते 'बिस्मिल' कहें क्योंकर कि हम में ज़ोर है,
वो लिखे हर रंग में जिसके क़लम में ज़ोर है।

❀ ❀ ❀

रात को दिन, दिन को वह यों रात करते ख़ूब हैं,
काम कम करते हैं लेकिन बात करते ख़ूब हैं।
हज़रते 'बिस्मिल' तो क्या क़ायल ज़माना हो गया,
बन्दापरवर सब से मिल कर घात करते ख़ूब हैं।

❀ ❀ ❀

आखें उठा उठा के न देखो घड़ी घड़ी,
कहती है ये घड़ी की अभी दस नहीं बजे।

❀ ❀ ❀

सुनता नहीं कोई भी तो कहना फ़िज़ूल है,
ऐसी सभा में आपका रहना फ़िज़ूल है।
दरिया का रुख़ जिधर हो बहो उस तरफ़ ज़रूर,
उसके खिलाफ़ ज़ोर में बहना फ़िज़ूल है।
'बिस्मिल' नई रविश[1] पे नए रंग ढंग में,
जब कह सको न ख़ूब तो कहना फ़िज़ूल है।

१—ढंग।

सरे दर्बार बन ठन कर कोई चीं बर जबीं[1] निकला,
हमारी जान तो निकली, नतीजा कुछ नहीं निकला।
सुकूनो[2] सब्र पर रक्खो नज़र ऐ हज़रते 'बिस्मिल',
तड़पने ही से क्या मतलब अगर मतलब नहीं निकला।

❀ ❀ ❀

वो ज़माने की निगाहों से गिरे जाते हैं,
दीनो मज़हब से जो आज अपने फिरे जाते हैं।

❀ ❀ ❀

परजा के वास्ते हो कि राजा के वास्ते,
क़ानून उनका एक है बाजा के वास्ते।

❀ ❀ ❀

आजाओ न देखो कहीं क़ानून के नीचे,
धोती को समेटे रहो पतलून के नीचे।

❀ ❀ ❀

ऐ गुरू जी मुफ़्त में इतने झमेले साथ हैं,
देखता हूँ जब तुम्हें दो चार चेले साथ हैं।

❀ ❀ ❀

बे असर नालों में पहले तुम असर पैदा करो,
हो अगर मतलब कि सब के दिल में घर पैदा करो।

१—क्रोध में। २—आराम।

ये है 'बिस्मिल' ख़ूब 'मिस्री लाल'[1] का शीरीं सख़ुन,[2]
लुत्फ़ जीने का तो जब है नामोज़र पैदा करो।

❀ ❀ ❀

इसका ख़याल ही मुझे करना फ़िज़ूल है।
जब मौत है तो मौत से डरना फ़िज़ूल है।

❀ ❀ ❀

मिलिए सबसे मिल कर उल्फ़त कीजिए,
क्यों किसी से भी अदावत कीजिए।
बात यह 'बिस्मिल' ने भी अच्छी कही,
बस मुहब्बत बस मुहब्बत कीजिए।

❀ ❀ ❀

अब दिन अपना है रात अपनी है,
बात यह है कि बात अपनी है।
मर भी जाएँगे तो न होगी सुबह,
किस मुसीबत की रात अपनी है।
'नूह'[3] साहब के फ़ैज़[4] से 'बिस्मिल',
हर जगह आज बात अपनी है।

❀ ❀ ❀

हर घड़ी मुझ को ख़तर तेरा है,
दिल में अरमान मगर तेरा है।

१—लाला मिस्री लाल साहब रईस इलाहाबाद से मतलब है। २—अच्छी कहावत। ३—मेरे काव्य गुरू हज़रत 'नूह' नारवी से मतलब है। ४—कृपा।

फिरती रहती है नज़र में तस्वीर,
ध्यान अब शामो सहर तेरा है।
बन कर अरमान निकलने का नहीं,
दिल में जो तीरे नज़र तेरा है।
मेहरबां हो के वो बोले 'बिस्मिल',
मैं हूँ तेरा, मेरा घर तेरा है।

❀ ❀ ❀

मैं हूँ फ़ैशन है और चन्दा है,
बस इसी कशमकश में बन्दा है।
तौक़े गर्दन बने न क्यों 'कालर',
वो भी योरूप का एक फन्दा है।
शायरी के अलावा ऐ 'बिस्मिल',
और भी तेरा कोई धन्धा है।

❀ ❀ ❀

यही तलवार और झंडा है,
हाथ में तीन फुट का डंडा है।
अब वो गर्मी नहीं रही 'बिस्मिल',
देखिए जिसके दिल को ठंडा है।

❀ ❀ ❀

काम आएगा यही गुन बस यही गुन सीखिए,
सीखनी है धुन अगर तो देश की धुन सीखिए।

आलम का रंग देख कर परवा नहीं रही,
दिल में किसी तरह की तमन्ना नहीं रही।
'बिस्मिल' मेरी जबान खुले यह मुहाल है,
वो लोग अब नहीं रहे दुनिया नहीं रही।

❀ ❀ ❀

हम ये कहते नहीं क़ीमा मिले बोटी मिल जाय,
पेट भरने से ग़रज है कहीं रोटी मिल जाय।

❀ ❀ ❀

ये आलम देख कर आलम का दिल में सब्र करना है,
हमीं को एक नहीं मरना खुदाई भर को मरना है।
समझता है ज़माना हो रहा है क्या ज़माने में,
ज़माने को वो अब अगला ज़माना याद करना है।
सरे दर्बार ये कहते हुए पहुँचेंगे ऐ बिस्मिल',
सुने सरकार अगर तो कुछ हमें भी अर्ज़ करना है।

❀ ❀ ❀

अब कहां इज्ज़त 'महाशय जी' को 'सर' के सामने,
कौन पूछे वैद्य जी को डाक्टर के सामने।
दौरदौरा वे तरह है मग़रबी तालीम का,
एक तमाशा हैं गुरू भी मास्टर के सामने।
खुल गया इस से कि थे 'बिस्मिल' कभी हम बादशाह,
आज तक रक्खा हुआ है तख़्त घर के सामने।

तमाशा इस को समझे खेल समझे दिल्लगी समझे,
बस उसकी ज़िन्दगी है, मौत को जो ज़िन्दगी समझे।

❀ ❀ ❀

क़ज़ा आएगी अपने वक्त ही पर रुक नहीं सकती,
झुकाये ज़िन्दगी लाख उसको लेकिन झुक नहीं सकती।
खुदा के हुक्म से हर लहज़ा सब की सांस चलती है,
ये वो गाड़ी है स्टेशन से पहले रुक नहीं सकती।
किया पामाल उनको ग़म ने जिनका क़ौल था 'बिस्मिल',
किसी के सामने गर्दन हमारी झुक नहीं सकती।

❀ ❀ ❀

ज़र्रे मिले हुए हैं यही हेर फेर है,
इन्सान क्या है कुछ नहीं मिट्टी का ढेर है।

❀ ❀ ❀

हाकिम का हुक्म सख़्त सुना सुन के रह गए,
कुछ बन पड़ी न हम से तो सर धुन के रह गए।
'बिस्मिल' ख़याल अहदे ख़िज़ां[१] का जो आगया,
दो चार फूल बाग में हम चुन के रह गए।

❀ ❀ ❀

भाषा को उर्दू करते हैं उर्दू को भाषा करते हैं,
मतलब के लिए वो घर बैठे मजमून तराशा करते हैं।

❀ ❀ ❀

जो सुने खामोश सुन सुन कर रहें,
ग़म सहें सदमा सहें ईज़ा[२] सहें।

१—पतझड़ ऋतु। २—दुख।

हज़रते 'बिस्मिल' नहीं कुछ इसका डर,
कहने वाले जो हमें चाहें कहें।

❀ ❀ ❀

रोज़ हैं ढंग नए रोज़ हैं अतवार[1] नए,
आप भी रूप बदलने लगे सरकार नए।
अब एडीटर की न इज्ज़त है न अख़बार की क़द्र,
रोज़ एडीटर हैं नए रोज़ हैं अख़बार नए।

❀ ❀ ❀

एक हमीं क्या सरे दर्बार ग़ज़ब करते हैं,
जितने हैं लोग वो साहब का अदब करते हैं।
दिल जो बेचैन है पहलू में कलेजा बेताब,
मेम साहब के करिश्मे भी ग़ज़ब करते हैं।
किस तरह जाने से इन्कार करूँ ऐ 'बिस्मिल',
अपने बंगले पे वो हर वक्त तलब करते हैं।

❀ ❀ ❀

दाखिले फैशन ये मंजर हो गया बस इस लिए,
फिर रहे हैं 'पार्क' में वो आज दो एक 'मिस' लिए।
हज़रते 'बिस्मिल' की कल होती न थी कुछ पूछ-गछ,
आज ऐसी हैं इनायत की निगाहें किसलिए।

❀ ❀ ❀

खुदा का हुक्म क्या है पूछना क्या इसका बन्दों से,
इन्हें फुरसत ही जब मिलती नहीं दुनियां के धन्धों से।

१—तरीक़े।

कुछ लिख नहीं सकते हैं बेकार निकलते हैं;
किस वास्ते फिर इतने अखबार निकलते हैं।
दीदार की हसरत में घबराए न क्यों 'बिस्मिल'
बाहर ही नहीं घर से सरकार निकलते हैं।

❀ ❀ ❀

आज़ारो[1] अलम जिनको सहना नहीं आता है,
दुनियां में वो रहते हैं रहना नहीं आता है।
मैं बज्में सखुन्दां[2] में क्या शैर पढ़ूँ 'बिस्मिल'
कहने को तो कहता हूँ कहना नहीं आता है।

❀ ❀ ❀

ग़ुंचए दिल का बहर तौर है खिलना अच्छा,
काम निकलै तो है सरकार से मिलना अच्छा।
सफ़हए दहर[3] से मिट जाय निफ़ाक़ ऐ 'बिस्मिल'
हो गलत हर्फ़ तो उस हर्फ़ का छिलना अच्छा।

❀ ❀ ❀

तुम्हीं बताओ बुरा कौन काम करता है,
अदब से तुमको ज़माना सलाम करता है।

❀ ❀ ❀

कोई इसके साथ है अब कोई उसके साथ है,
देखना ये चाहिए मैदान किसके हाथ है।

१—दुख। २—कविसम्मेलन। ३—संसार के इतिहास।

बे ताल्लुक़ हो के भी कितने झमेले साथ हैं,
आगे आगे हैं गुरू, दो चार चेले साथ हैं।

❀ ❀ ❀

बन्दा परवर क्या ये अच्छे ढंग अच्छे तौर हैं,
आप कहते और हैं और आप करते और हैं।

❀ ❀ ❀

ग़म नहीं इसका ग़मो आज़ार सहने दीजिए,
अलग़रज़ जिस हाल में हूँ मुझको रहने दीजिए।
हज़रते 'बिस्मिल' ने आजिज़ आकर उनसे कह दिया,
आप अपनी बेतुकी बातों को रहने दीजिये।

❀ ❀ ❀

जहां से हज़रते 'बिस्मिल' हमेशा सब से मिलते हैं,
जिन्हें मतलब से मतलब है वही मतलब से मिलते हैं।

❀ ❀ ❀

न कोई फ़िक्र चलती है न कोई ढब निकलता है,
जो मतलब आशिना हैं उनसे कब मतलब निकलता है।

❀ ❀ ❀

बन्दा परवर फिर तो कहिए, क्या कहा ? कोई नहीं !
आप समझे हैं कि हम सा दूसरा कोई नहीं।

❀ ❀ ❀

हमें क्या दीन से मतलब हमें दुनियां से मतलब है,
जो अहमक़ हैं ये कहते हैं, यहीं है हाँ यही सब है।

किसी की दोस्ती या दुश्मनी की कुछ नहीं परवा,
हमें ऐ हज़रते 'बिस्मिल' फ़क़त मतलब से मतलब है।

❀ ❀ ❀

खुश करने को मैं कह दूं सौ बार बहुत अच्छे,
सरकार का क्या कहना, सरकार बहुत अच्छे।
'अकबर' की तरह चमके 'बिस्मिल' भी ज़माने में,
ग़ज़लें हैं बहुत अच्छी अशआर बहुत अच्छे।

❀ ❀ ❀

जिस बात की धुन है उन्हें उस बात की धुन है,
काले में नहीं गुन है ये गोरे ही में गुन है।
'बिस्मिल' से पुजारी ने कही बात बहुत खूब,
जो पाप है वो पाप है जो पुन्न है वो पुन्न है।

❀ ❀ ❀

हवाए बाग़े मिल्लत ही से गुंचे दिल के खिलते हैं,
वो हमसे झुकके मिलते हैं हम उनसे झुकके मिलते हैं।

❀ ❀ ❀

ग़मो आज़ार में हासिल मसर्रत[1] भी वो करते हैं,
जो हैं अंगरेज़ पैदा मालो दौलत भी वो करते हैं।
ये ज़ाहिर हो गया अब तजुर्बे से हज़रते 'बिस्मिल,'
तिजारत भी वो करते हैं हुकूमत भी वो करते हैं।

१—आनन्द।

तुम्हारे दौर में ग़म खाते हैं और अश्क[1] पीते हैं,
मगर है ज़िन्दगी मर मर के हम इस पर भी जीते हैं।

❀ ❀ ❀

खुदारा अब बचाओ हम को योरूप की बलाओं से,
चलो मन्दिर में मागें ये दुआएँ देवताओं से।

❀ ❀ ❀

न हम जाएंगे इस घर में न हम जाएँगे उस घर में,
हमारी उम्र गुजरेगी बड़े साहब के दफ़्तर में।
उड़ाते हैं सरे महफिल नई तहज़ीब का ख़ाका,
ताज़्जुब है कि 'बिस्मिल' आगए अब रंगे 'अकबर' में।

❀ ❀ ❀

उछलता है कलेजा दिल नहीं रहता है आपे में,
जवानी याद आ जाती है जब मुझको बुढ़ापे में।

❀ ❀ ❀

गरदिशे तक़दीर से राहत कहीं मिलती नहीं,
बाग़ में रह कर भी अब दिल की कली खिलती नहीं।

❀ ❀ ❀

उनकी एक एक 'पालसी' है दुश्मने जानी मेरी,
मेरे दिल को ख़ाक कर देगी परेशानी मेरी।

१—आंसू

क्यों न आए याद 'बिस्मिल' मुझको दिल्ली का क़याम,
हज़रते 'सायल'[१] ने की है ख़ूब मेहमानी मेरी।

❀ ❀ ❀

क्या कहते हो अब कोई किसी की नहीं सुनता,
मौक़ा हो तो कब कोई किसी की नहीं सुनता।
इस दौर में इस अहद में ऐ हज़रते 'बिस्मिल'
मैं क्या करूं जब कोई किसी की नहीं सुनता।

❀ ❀ ❀

वो नाहक मग़रबी तहज़ीब की तकलीद[२] करते हैं,
मिलाओ हां में हां तुम भी ये क्यों ताकीद करते हैं।

❀ ❀ ❀

मग़रबी फूलों की इसमें बू है इसमें बास है,
बाप है जाहिल मगर बेटा तो बी० ए० पास है।

❀ ❀ ❀

कुछ लहू तन में है बाक़ी वो पिए लेते हैं,
जोंक बन बन के मेरी जान लिए लेते हैं।
ले के दिल जब्र वो ढाते हैं यही ऐ 'बिस्मिल',
कहते हैं सब्र करो, सब्र किए लेते हैं।

१—महाकवि 'दाग़' के दामाद हज़रते 'सायल' देहलवी से मतलब।

२—नक़्ल करना।

हर घड़ी बैठते उठते है वही नाम की बात,
बात तो जब है करें आप कोई काम की बात।

अमल करें न करें किस्सए अमल तो है,
कि लीडरों से जहां में चहल पहल तो है।

इन्क़लाबाते[1] जहां से क्या रहे क्या बन गए,
थे कभी राजा मगर हम आज परजा बन गए।
क़त्लगह[2] में खुश हुआ उनका तड़पना देख कर,
वो तमाशाई बना 'बिस्मिल' तमाशा बन गए।

सब को मतलब है अपने मतलब से,
न गरज दीन से न मज़हब से।
दिल मिला कर कभी नहीं मिलता,
कोई मिलता है अपने मतलब से।
ये तरीक़ा है ख़ूब ऐ 'बिस्मिल',
सब मिलें तुमसे तुम मिलो सब से।

हाज़िर है मेरी जान भी मौजूद है सर भी,
लुत्फ़ आए जो साहब की तवज्जह हो इधर भी।

१—क्रान्ति। २—बलिवेदी।

तौक़ीर हो साहब जो कहीं मुँह से ये कह दें,
'आनर' भी है 'बिस्मिल' के लिए और 'डिनर' भी।

❀ ❀ ❀

बुत सदा देते हैं ये पाप है तू पाप न कर,
यानी मन्दिर में दिखाने के लिए जाप न कर।
और कामों में तो है खातमा अच्छा 'बिस्मिल',
शायरी में कभी भूले से 'फुलिस्टाप' न कर।

❀ ❀ ❀

लाट साहब का ज़माने को अदब करना पड़ा,
जो न करना था सरे कौंसिल वो सब करना पड़ा।
जानता हूँ मैं खुशामद का नतीजा कुछ भी नहीं,
ये मुझे बे फायदा ये बे सबब करना पड़ा।

❀ ❀ ❀

जब न राज़ी हम हुए 'बिस्मिल' शहादत के लिए,
तो सफीना काट कर उनको तलब करना पड़ा।

❀ ❀ ❀

ज़िन्दगी पर जो सितम रोज़ कज़ा करती है,
फ़र्ज़ है इसके लिए फ़र्ज़ अदा करती है।

❀ ❀ ❀

या क्लब की सिम्त[१] चल दे या सुए[२] स्कूल जा,
है जो आनर की तमन्ना दीनो दुनियाँ भूल जा।

१—तरफ़। २—तरफ़।

पेट भरने से ग़रज़ है पेट भरना चाहिए,
नौकरी मिल जाय तो कुप्पे की सूरत फूल जा।

❀ ❀ ❀

क्या कहूँ क्या बताऊँ अब क्या हूँ,
मैं भी दुनियां में एक तमाशा हूँ।
कल खुदा जाने मुझ पे क्या गुज़रे,
आज तो खुश हूं और अच्छा हूँ।
है गुलामी बुरी बला 'बिस्मिल',
हुक्मे हाकिम पे जान देता हूँ।

❀ ❀ ❀

हासिल खुशी कहाँ से हो जब दिल हज़ीं[1] रहे,
ये बात इसलिये है कि वो हम नहीं रहे।
दुनियाँ कहाँ से चल के कहाँ तक पहुँच गई,
लेकिन यहाँ ये हाल जहाँ थे वहीं रहे।

दुनिया है इसके गिर्द ग़ज़ब का हुजूम[2] है,
'कालिज' की आज सरे ज़माने में धूम है।

अब हम को फ़िक्र उसकी नहीं इसकी फ़िक्र है,
कालिज में पढ़ चुके हैं तो 'सर्विस' की फ़िक्र है।

१—दुखी। २—भीड़

नज़ा[1] में हम खुश हुए ये बात सुन कर वैद से,
जाओ अब आज़ाद हो तुम ज़िन्दगी की क़ैद से।

❀ ❀ ❀

आप भी क्या चीज़ हैं कुछ क़द्रे फैशन कीजिए,
छोड़िए शौके 'पसींजर' 'मेल में 'रन' कीजिए।

❀ ❀ ❀

नतीजा जीने का ये है कि शाद काम जिए,
जिए तो क्या जिए जब हो के हम गुलाम जिए।

❀ ❀ ❀

मुद्दआ[2] था पेट भरने से वो हासिल हो गया,
यानी 'इंगलिश' पढ़ के मैं दफ़्तर में दाखि़ल हो गया।

❀ ❀ ❀

जेठ की दोपहर में तपता हूँ,
फिर भी साहब का नाम जपता हूँ।
है तख़ल्लुस[3] का ये असर 'बिस्मिल'
दिन हो या रात हो तड़पता हूँ।

❀ ❀ ❀

हुब्बे[4] क़ौमी के लिए काम ये करना सीखो,
तुमको मरना नहीं आता अभी मरना सीखो।

१—अन्तिम समय। २—मतलब। ३—उपनाम। ४—प्रेम।

अब कहाँ वो रंग वो ढब है कहाँ,
नाम है मज़हब का मज़हब है कहाँ।

❀ ❀ ❀

है अमल भी शर्त तुझको नामए आमाल देख,
हाल क्यों गैरों का देख अपना ही पहले हाल देख।
आज दुनिया रखती है राहे तरक्क़ी में क़दम,
पाँव तेरे किस तरफ़ पड़ते हैं अपनी चाल देख।
जाके ये कह दो ज़रा बेदर्द क़ातिल से कोई,
हाल 'बिस्मिल' का बुरा है आकर उसका हाल देख।

❀ ❀ ❀

मुझसे बताइए ये फ़क़त मैंने क्या कहा,
सब कुछ बजा कहा है ग़लत मैंने क्या कहा।

❀ ❀ ❀

था वो वक्त .खूब कि हम थे तो ख़ूब थे,
क़ब्ज़े में अपने मुल्क शुमालो[1] जुनूब[2] थे।

❀ ❀ ❀

मानता हूँ मैं कि शानो तमकनत[3] की बात थी,
चुप हुए 'बिस्मिल' तो इसमें मसलहत की बात थी।

❀ ❀ ❀

कहता है दिल मिसों से जरा जोड़ तोड़ कर,
गिरजा की सिम्त[4] हम चले मन्दिर को छोड़ कर।

१—उत्तर। २—दक्खिन। ३—शान। ४—तरफ़।

'बिस्मिल' नहीं है फूलने फलने के वास्ते,
फेंको भी अपनी शाखे तमन्ना को तोड़ कर।

❀ ❀ ❀

इसका वादा भी अबस इक़रार भी बे सूद है,
आप जब आ जांय सामाने 'डिनर' मौजूद है।
मुझ से साहब की नज़र ही फिर गई तो क्या रहा,
ज़िन्दगी बेकार है जीना मेरा बे सूद है
हज़रते 'अकबर' तो ऐ 'बिस्मिल' यहां से चल बसे,
अब 'इलाहाबाद' में मशहूर सिर्फ अमरूद है।

❀ ❀ ❀

क़ौम को कालिज में ले जाने से कुछ हासिल नहीं,
कौन उन्हें समझाए समझाने से कुछ हासिल नहीं।
इनकी क़िस्मत ही में लिखा है तड़पना लोटना,
हज़रते 'बिस्मिल' को तड़पाने से कुछ हासिल नहीं।

❀ ❀ ❀

अक्ल सायब[1] हो तो सोचो दिल में ऐसा क्यों नहीं,
और सब कुछ पास है मौजूद पैसा क्यों नहीं।

❀ ❀ ❀

रख दिया रिश्ता वफ़ा का खटमलों ने तोड़ कर,
लेटता हूँ मैं ज़मीं पर चारपाई छोड़ कर।

१—नेक।

हज़रते 'बिस्मिल' को अब है क्या ग़रज़ क्या वास्ता,
हो गए हैं ये अलग दुनिया से नाता छोड़ कर।

❀ ❀ ❀

मिलती जुलती दोनों शक्लों का तमाशा देखिए,
मुद्दआ ये है कि उर्दू और भाषा देखिए।
उनको 'बिस्मिल' ने ये कह कह कर मुख़ातिब कर लिया,
मैं तड़पता हूँ ज़रा मेरा तमाशा देखिए।

❀ ❀ ❀

नहीं पाबन्द दीनों मज़हब का,
मैं पुजारी हूँ अपने मतलब का।

❀ ❀ ❀

वो हैं आज़ाद कैसा शौक़ से रहते हैं बंगले में,
यहां हम क़ैद हैं तहज़ीब में रहते हैं जंगले में।

❀ ❀ ❀

सच कहा क़ानूने सरकारो से डरना चाहिए,
तुम हो मुंसिफ तुम को तो इंसाफ करना चाहिए।

❀ ❀ ❀

ग़म तो इसका है कि दिल ने मेरी ग़मख़्वारी न की,
दुश्मनों से क्या गिला जब यार ने यारी न की।
जानता था मैं कि हर शै है यहां की बेसबात[1],
रह के दुनियां में किसी शै की ख़रीदारी न की।

१—नाशवान।

ख़याल होता है मैं बात साफ़ साफ़ कहूँ,
वो बरखिलाफ़ हों उनके जो बरखिलाफ़ कहूँ।
मिला ज़मीर[1] मुझे आइने का ऐ 'बिस्मिल',
किसी में ऐब अगर है तो क्यों न साफ़ कहूँ।

❀ ❀ ❀

सच पूछिए जज़ाओ[2] सज़ा सब के साथ है,
दुनिया है सब के साथ .ख़ुदा सबके साथ है।
'बिस्मिल' से कह रहे हैं वो लुत्फ़े हयात पर,
मालूम भी तुम्हें है क़ज़ा सब के साथ है।

❀ ❀ ❀

जिसमें कुछ असर ही नहीं किस काम का गुन है,
वो राग में है राग वो धुन में कोई धुन है ?
कहता रहा 'बिस्मिल' से ये मंदिर का पुजारी,
काशी में जो हो पाप तो वो पाप भी पुन है।

लख़्ते दिल खाके हमें .ख़ूने जिगर पीना है,
मर गए, मर गए, जीना ये कोई जीना है।
मरने वाले अभी तदबीर न कर मरने की
है ये तक़दीर में लिक्खा कि तुझे जीना है।
उनसे कह दे कोई, 'बिस्मिल' कभी मरना होगा,
जीने वाले तो समझते हैं बहुत जीना है।

१—आत्मा। २—बदला।

जो आबरू थी क़ायम उसको डुबो रही है,
बदनाम क़ौम अपनी दुनिया में हो रही है।

किस तरह का है ये मज़मून समझता हूँ मैं,
आप की बात को क़ानून समझता हूँ मैं।

जनाबे 'पानियर' का आज ये मज़मून अच्छा है,
जो है सरकार का क़ानून वो क़ानून अच्छा है।
न हो जो मानने की बात क्यों कर मान लूं 'बिस्मिल',
वो कहते हैं कि धोती से मेरा पतलून अच्छा है।

अहले मग़रिब को मक़ूला[1] है न हरजाई बन,
'गाड' की दिल में तमन्ना हो तो ईसाई बन।
चैन से तुझको ज़माना नहीं रहने देगा,
तू ज़माने का समझ बूझ के शैदाई बन।
इस जगह दीन का मिलता नहीं दुनिया को सबक़,
कभी कालिज का तू भूले से न शैदाई बन।

आपके हक़ में वो सब काम है करने के लिए,
पहले तैयार तो हो जाइए मरने के लिए।

१—कहावत।

मेहरबानी से नहीं पूछते 'बिस्मिल' का मिज़ाज,
आप तो सर पे बस इल्ज़ाम है धरने के लिए।

❀ ❀ ❀

मिलेंगे हम तो ये साहब से काम निकलेगा,
कि 'पानियर' में हमारा भी नाम निकलेगा।

❀ ❀ ❀

बूढ़ा पिदर[1] ये कह कर हसरत से रो रहा है,
कालिज में पढ़ के लड़का अब दीन खो रहा है।

❀ ❀ ❀

अब फ़कीरी से बदल दी गई शाही मेरी,
सब पे रोशन है ज़माने में तबाही मेरी।
क्या समझ सोच के बन्दों से करूँ मैं फरियाद,
इल्तिजा जब नहीं सुनता है खुदा ही मेरी।
हर तरफ आज ज़माने में है चर्चा इसका,
दास्तां बन गई दुनिया में तबाही मेरी।

❀ ❀ ❀

ज़ाहिरी अल्ताफ़[2] पर एक एक से मायल हो गया,
आपके बर्त्ताव का बन्दा भी क़ायल हो गया।

❀ ❀ ❀

सरे बालीं[3] बरहमन से यही कहती क़ज़ा पहुँची,
पिलाओ इनको गंगाजल घड़ी मरने की आ पहुँची।

१—बाप। २—कृपा। ३—सिराहना।

पहले जो कुछ आस थी जाती रही वो आस भी,
दास तेरे हो गए हैं दिल से 'दुर्गादास' भी।

शाम ही से सुन रहा हूँ चुप रहो बस कुछ नहीं,
क्या कहा नज़्ज़ारए[1] सुबहे 'बनारस' कुछ नहीं।

खरी कहूँगा न माने कोई इसे माने,
जो ग़ैर क़ौम है वो दर्दे क़ौम क्या जाने।

मैंने देखा 'पानियर' में आज एक मज़मून था,
नाम को मज़मून था और अस्ल में कानून था।

हिन्दुओ मुस्लिम में झगड़ा कर दिया,
जोशे मज़हब ने तमाशा कर दिया।
हर तरफ़ फ़ित्नें नए उठने लगे,
लीडरी ने हश्र बरपा कर दिया।

❀ ❀ ❀

हैं कहां उनको काम से मतलब,
बस है ले दे के नाम से मतलब[2]

१—दृश्य। २—करुणा।

बोले लीडर बड़े गुरूर के साथ,
कुछ भी हो हम तो हैं हुजूर के साथ।
उनकी हर बात अब निराली है,
बोलते भी हैं तो गुरूर के साथ।
किस लिए तुम अलग हो ऐ 'बिस्मिल',
सारी दुनिया तो है हुजूर के साथ।

❀ ❀ ❀

लुत्फ़ रूहानो से कौन अब शाद है खुर्सन्द[१] है,
दिल का दर्वाज़ा खुले क्यों कर जबाँ तो बन्द है।
पेट में है रोटियाँ 'बिस्मिल' तो है आनन्द भी,
पेट खाली है अगर तो फिर कहाँ आनन्द है।

❀ ❀ ❀

आगए पंडित भी आख़िर आख़िर उनके 'रूल' में,
पाठशाला छोड़ कर दाखिल हुए स्कूल में।

❀ ❀ ❀

मुमकिन है मैं हूँ खुश कभी उक़बा[२] को देख कर,
दुनिया का हाल खुल गया दुनिया को देख कर।

❀ ❀ ❀

बोल उठा बाग़े हिन्द का माली,
काट डालो निफ़ाक़ की डालो।
शैर किस को सुनाएं ऐ 'बिस्मिल',
कि न 'अकबर' रहे न अब 'हाली'।

१—खुश। २—परलोक।

ज़रा फर्माइए क्या हुक्म अव्वल, हुक्म आखिर है,
बजा लाने को दिल से हर घड़ी बन्दा तो हाज़िर है।

❀ ❀ ❀

दिल ने ये उनसे बात कही कितनी दूर की,
राज़ी इसी में हम हैं जो मरज़ी हुज़ूर की।

❀ ❀ ❀

हसरते 'आनर' में वेढ़ब महवे 'आनर' हो गए,
कर दिया सरकार ने भी 'सर' उन्हें 'सर' हो गए।

❀ ❀ ❀

हज़रते दिल आप हैं नादान हम समझाएं क्या,
ग़म ही जब मिलता है खाने को तो खाना खाएं क्या।

❀ ❀ ❀

ये हर पहलू से वेहतर है यही है बिलयक़ीं[1] अच्छा,
जिए तो कम जिए, लेकिन बहुत जीना नहीं अच्छा।

❀ ❀ ❀

खुशी के साथ जिए हम कि पुर-मलाल[2] जिए,
बहुत जिए तो समझ लो पचास साल जिए।

❀ ❀ ❀

मजबूर ऐसे हो गए चन्दे की माँग से,
'पब्लिक' में दौड़ने लगे वो डेढ़ टाँग से।

❀ ❀ ❀

देखकर चलती हुई बन्दूक़ हिम्मत हार दी,
सर न उट्ठा था मेरा ज़ालिम ने गोली मार दी।

१—निश्चित रूप से। २—दुखमय।

सहल लिख लिख कर ये क्या अच्छा तमाशा कर दिया,
हज़रते 'बिस्मिल' ने तो उर्दू को भाषा कर दिया।

❀ ❀ ❀

इम्तिहां में पास हो जाने की दिल से दाद दूँ,
नाम अगर निकले गज़ट में तो मुबारकबाद दूँ।

❀ ❀ ❀

ऐब है कितना बड़ा आपस में हम एक दिल नहीं,
मुद्दई सच कह रहे हैं तुम किसी क़ाबिल नहीं।
दूसरों की बात भी ऐ हज़रते 'बिस्मिल' सुनो,
अपनी हठ से नफ़ा अपनी ज़िद से कुछ हासिल नहीं।

❀ ❀ ❀

पढ़ के अंग्रेज़ी वो बैठे किसके पहलू की तरफ़,
आप हिन्दी की तरफ़ हैं मैं हूँ उर्दू की तरफ़।
कांप उट्ठे जिस्म सारा फूल जाएं हाथ पांव,
देख ले साहब अगर गुस्से से बाबू की तरफ़।

❀ ❀ ❀

कहते हैं उर्दू से भाषा खूब है,
क्यों न हो मज़मूं तराशा खूब है।

❀ ❀ ❀

ये समझ कर सोच कर भरिए असर मज़मून में,
आपने कुछ लिख दिया और आगए क़ानून में।

शिकम में दर्द हो तो डाक्टर 'पिल'[1] पेश करते हैं,
मगर खुलती हैं आँखें जिस घड़ी बिल पेश करते हैं।
डिनर में हज़रते 'बिस्मिल' नए फैशन के दीवाने,
मिसे लंदन के ग़मज़ों के लिए दिल पेश करते हैं।

❀ ❀ ❀

कौन कहता है इधर हर बार देखा कीजिए,
मेहरबां होकर कभी सरकार देखा कीजिए।

❀ ❀ ❀

सच बता ऐ दिले नाकाम कहां मिलता है,
ढूँढ़ता हूँ वो दिल आराम[2] कहां मिलता है।
मैं इस उम्मीद में पढ़ता हूँ गवर्मेन्ट-गज़ट,
ढूँढ़ता हूँ कि मेरा नाम कहाँ मिलता है।

❀ ❀ ❀

दिल में जो पड़ गई है गिरह खोल दीजिए,
मुझसे ज़रा खुदा के लिए बोल दीजिए।

❀ ❀ ❀

नाम निकला है गज़ट में अब खुशी का राज है,
इम्तिहां में पास हो जाने की दावत आज है।

१—गोली। २—प्रियतम।

सामने सब के जनाने भेष में आने लगे,
मर्द होकर आप तो मूछें भी मुड़वाने लगे।
दिल में पहले ग़ौर फ़रमाते कि मैंने क्या कहा,
बात तो कुछ भी न थी वो मुझको धमकाने लगे।

❀ ❀ ❀

है ये ज़ाहिर नहीं अरमान निकलने वाले,
सैकड़ों रंग बदलते हैं बदलने वाले।

❀ ❀ ❀

पहले दुश्वार था आफ़ाक़ से बढ़कर होना,
इस ज़माने में बहुत सहल है 'लीडर' होना।

❀ ❀ ❀

बैठते उठते किसी धुन में रहा करते हैं,
अपने मतलब के लिए यादे ख़ुदा करते हैं।
हमसे कल कहते थे मंदिर में ये एक पंडित जी,
जाप करते नहीं हम पाप किया करते हैं।

❀ ❀ ❀

काम उनका देख कर और उनका धंधा देख कर,
हो गया चुपचाप क्या कहता ये बन्दा देख कर।
हज़रते 'बिस्मिल' नज़र आएंगे सौ बहरूपिए,
तुमको देना चाहिए ऐसों को चन्दा देख कर।

न कोई काम होता है न कोई काम करते हैं,
मगर कहते हैं यारों में कि हम मज़हब पे मरते हैं।

❀ ❀ ❀

हुई जो और से कुछ और 'हेल्थ' 'नेशन' की,
वो कह रहे हैं ज़रूरत है 'आपरेशन' की।

❀ ❀ ❀

बला से कोई कहे कुछ ये अफ़सरी मिल जाय,
वो चाहते हैं कि हमको मिनस्टरी मिल जाय।
इसी ख़याल में दिन रात महव[1] हैं लीडर,
किसी तरह हमें कौंसिल की मेम्बरी मिल जाय।

❀ ❀ ❀

अख़बार वाले हो गए अख़बार के ख़िलाफ़,
छपती नहीं ख़बर कोई सरकार के ख़िलाफ़।
'बिस्मिल' को आगाही[2] न थी इस रोक थाम की,
निकलेंगे आर्डर मेरे अशआर के ख़िलाफ़।

❀ ❀ ❀

आपस में बात ये हुई पैदा फ़िज़ूल और,
मेरा वुसूल और तुम्हारा वुसूल और।

❀ ❀ ❀

मरज़े दिल में 'पिपरमेंट' की हसरत कैसी,
आप को 'सेल्फ गवर्मेंट' की हसरत कैसी।

१—डूबे हुए। २—ख़बर।

क्या लुत्फ़ मरगो[1] ज़ीस्त[2] का अहले जफ़ा[3] के साथ,
बन्दों को चाहिए कि रहें वो .खुदा के साथ।

❀ ❀ ❀

आज अटका है ये काम उनका तो सब करते हैं,
अपने मतलब के लिए 'वोट' तलब करते हैं।

❀ ❀ ❀

आप में कस बल नहीं बस बात की भरमार है,
मुन्तशिर पबलिक है लेकिन मुतमइन सरकार है।
है ये आलम तो करेगा क्या इलाजे दर्दे क़ौम,
डाक्टर भी हाल मेरा देख कर बीमार है।
वो ज़माना और था जब ज़िन्दगी आसान थी,
ये ज़माना और है अब ज़िन्दगी दुश्वार है।

❀ ❀ ❀

बदला न रंगे क़ौम जो कल था वो आज है,
इसका इलाज क्या हो कि ये लाइलाज है।
बे पर्दा फिरती रहती हैं सड़कों पे औरतें,
अब है न इनमें शर्म न अब इनमें लाज है।

❀ ❀ ❀

उनको किससे वास्ता अब उनको किससे काम है,
फिर भी बंगले पर वही हरदम हुजूमे आम है।

१—मौत। २—ज़िन्दगी। ३—अत्याचारी।

और दुनिया के झमेलों में ये फँसते ही नहीं,
हज़रते 'बिस्मिल' को अपनी शायरी से काम है।

❀ ❀ ❀

हर घड़ी बेताबो मुज़्तर[1] आजकल सीने में है,
चैन जब दिल को नहीं तो लुत्फ़ क्या जीने में है।
वक्त आख़िर डाक्टर साहब करें तो क्या करें,
उखड़ी उखड़ी साँस अब बीमार के सीने में है।

❀ ❀ ❀

हो गया नाचार मैं मजबूरिये दिल देख कर,
ख़िज्र[2] चलते हो गए कालिज की मंजिल देख कर।
इस में कोई राज़ है इसमें है कोई ख़ास बात,
हम गज़ल पढ़ते हैं 'बिस्मिल' रंगे महफ़िल देखकर।

❀ ❀ ❀

न पास का हमें सदमा न कोई आस की फ़िक्र,
बस एक रह गई कालिज के फ़ेल पास की फ़िक्र।

❀ ❀ ❀

नाम अब छापा तुम्हारा 'पानियर' अख़बार ने,
और अब क्या चाहिए 'सर' कर दिया सरकार ने।

१—बेचैन। २—एक पैग़म्बर का नाम जो भटके हुओं को रास्ता बतलाते हैं।

कहां वो दिल वो कहां अब दमाग़ बाक़ी है,
न तेल है न है बत्ती चराग़ बाक़ी है।

❀ ❀ ❀

वो कह रहे हैं कि हम दिल का दाग़ देखेंगे,
जो रात दिन जलै ऐसा चिराग़ देखेंगे।

❀ ❀ ❀

ख़याले सुबह कभी फ़िक्र शाम है कि नहीं,
अलावा जुल्म के और उनको काम है कि नहीं।
डिनर में तो कभी कहते नहीं ये पंडित जो,
हमारे वास्ते कुछ इन्तिज़ाम है कि नहीं।
वो किस ख़याल में ये हर किसी से पूछते हैं,
क़लामे हज़रते 'बिस्मिल' कलाम[1] है कि नहीं।

❀ ❀ ❀

बरंगे नकहते[2] गुलशन परेशानी से क्या मतलब,
मुझे सैरे बहारे आलमें फ़ानी से क्या मतलब।
रुलाता मैं नहीं महफ़िल में रोतों को हँसाता हूँ,
गज़लगोई से मतलब मरसियाख़्वानी से क्या मतलब।
हमेशा बैठते उठते ग़रज़ है फौजदारी से,
जो दीवाना है 'बिस्मिल' उसको दीवानी से क्या मतलब।

१—कविता। २—महक।

पंडित को देख लीजिए गंगा पे ठाठ से,
लेकिन गरज़ नहीं उन्हें पूजा से पाठ से।

❀ ❀ ❀

सारे जहाँ से आज हैं पीछे पड़े हुए,
झंडे कभी जहाँ में थे अपने गड़े हुए।

❀ ❀ ❀

तकलीफ़ दो ज़रा निगाहे इल्तिफात[1] को,
बंगले पे हम भी हाथ हैं जोड़े खड़े हुए।

❀ ❀ ❀

इससे हो जाती है ज़ाहिर 'पालसी' सरकार की,
पढ़ लिया करता हूँ अक्सर सुर्खियाँ अख़बार की।

❀ ❀ ❀

नई तहज़ीब के क़ानून से ये डरता है,
आजकल बाप तो बेटे का अदब करता है।

❀ ❀ ❀

नए तरीक़े के लीडर हैं इस ज़माने में,
कि महव रहते हैं ये पार्टी बनाने में।

❀ ❀ ❀

जान आफ़त में आई बन्दे की,
हर तरफ़ खींच खांच चन्दे की।

१—कृपा-दृष्टि।

हमको मरने के सिवा ख़ल्क में चारा क्या था,
थी क़ज़ा सर पे तो जीने का सहारा क्या था।
देखते देखते वो बन गए घर के मालिक,
अब ये फ़रमाते हैं हमसे कि तुम्हारा क्या था।
न तो सर्विस की तमन्ना है न परवाए डिनर,
आपसे हज़रते 'बिस्मिल' को सहारा क्या था।

❀ ❀ ❀

कोई आज़ाद नहीं क़ैदे ग़मे आलम से,
आप क्या पूछते हैं हाल हमारा हमसे।

❀ ❀ ❀

एक मेरे दोस्त ये फ़रमाते थे मुझसे रोकर,
हम कहीं के न रहे हाय एल-एल बी० होकर।

❀ ❀ ❀

ये भी तो सोचे कोई क्या भेद है क्या राज़ है।
गोशे आलम में 'ग्रामोफ़ोन' की आवाज़ है।

❀ ❀ ❀

जमा अहले इश्क़ होते जायं मातम के लिये,
'बावले' ने जान दी 'मुमताज़ बेगम' के लिये।

❀ ❀ ❀

जिसको देखो वही दुनिया में है अब जंग पसन्द,
लेकिन आता नहीं मुझको कभी ये ढंग पसंन्द।

चाहिए हज़रते 'बिस्मिल' को ज़राफ़त[1] का ख़याल,
है यही तर्ज़ यही ढंग यही रंग पसन्द।

❀ ❀ ❀

वो तरीके छुट गए, हम छुट गए, तुम छुट गए,
तुम उधर कालिज में पहुँचे और इधर हम लुट गए।

❀ ❀ ❀

तहज़ीब का लिहाज़ न बेसूद कीजिए,
कालिज में पढ़ चुके अब उछल कूद कीजिए।

❀ ❀ ❀

यहाँ भी चलने लगी अब हवाएं फैशन की,
कि बुतकदे[2] में वो इज्ज़त नहीं बिरहमन की।

❀ ❀ ❀

दीन दुनिया का सबक़ इनसे कोई पाता नहीं,
नाम को पंडित हैं कुछ आता नहीं जाता नहीं।

❀ ❀ ❀

न इसका ज़ायक़ा अच्छा न मेल अच्छा है,
मेरे ख़याल में अब घी से तेल अच्छा है।

❀ ❀ ❀

क़द्र धोती की गई, अब तो है पतलून की क़द्र,
इन्डियन करने लगे वक्त के क़ानून की क़द्र।

१—व्यङ्ग। २—मन्दिर।

और अब क्या चाहिए सरकार के गुन गाइए,
नल का पानी पीजिए चक्की का आटा खाइए।

❀ ❀ ❀

वो इसका राज़ समझा वो इसका पेंच समझा।
दुनिया में जिसने रह कर दुनिया को हेच समझा।

❀ ❀ ❀

हैं बड़े आराम में वो लोग जो उक़्बा[1] में हैं,
ये न पूछो हमसे तुम हम किस तरह दुनिया में हैं।

❀ ❀ ❀

क़ुब में है क्या क्या जनाब की तारीफ़,
जो आप करते हैं पीकर शराब को तारीफ़।
ख़ुदा की शान खुदाई में ख़ुद ही रोशन है,
बताऊँ आपसे क्या आफ़ताब की तारीफ़।
कहूँ तो क्या कहूँ मैं उनसे हज़रते 'बिस्मिल',
ये पूछते हैं वो क्या है जनाब की तारीफ़।

❀ ❀ ❀

जो काम हो दुरुस्त वही काम कीजिए,
मज़हब को आप मुफ़्त न बदनाम कीजिए।
ये मेरे वख़्त[2] में है कि छानूं गली की ख़ाक,
बंगले पर आप शौक़ से आराम कीजिए।

१—परलोक। २—भाग्य।

ऐसा न हो कि हज़रते 'बिस्मिल' न हों शरीक,
दावत जो कीजिये तो सरेशाम कीजिए।

❀ ❀ ❀

समझते हैं कि सुर्खी हम बड़ी माकूल देते हैं,
ज़रा सी बात को अख़बार वाले तूल देते हैं।
कहें क्या हाल तुम से महफ़िले आलम का ऐ 'बिस्मिल',
जिसे देते थे कुर्सी अब उसे 'स्टूल' देते हैं।

❀ ❀ ❀

तुमने सरकार से जब अनबन की,
तो क्यों है आरज़ू कमीशन की।
ये तमाशा नया है मन्दिर में,
बुत से बनती नहीं बरहमन की।
बागबां है ख़िलाफ़ ऐ 'बिस्मिल,'
ख़ैर मांगो तुम अब नशेमन[1] की।

❀ ❀ ❀

मुस्तक़िल होकर रहे साहब भला किसकी तरफ़,
ये कभी उसकी तरफ़ हैं यह कभी इसकी तरफ़।
मुझसे पूछो तो पते की बात मैं कह दूं अभी,
जाग उठी उसकी क़िस्मत वो हुए जिसकी तरफ़।

१—घोंसला।

मेरे नाम आया है ऐ 'बिस्मिल' यह एक साहब का हुक्म,
'इंडियन' होकर न तुम देखा करो 'मिस' की तरफ़।

❀ ❀ ❀

हक़ बजानिब कह रहा हूँ मैं ये कहना मान भी,
मेरी नज़रों में है एकसा वेद भी कूरान भी।
देखते ही देखते बदली ये दुनिया की हवा,
पर लगा कर उड़ गए अब दीन भी ईमान भी।
ढूंढ़नेवाले को 'बिस्मिल' जुस्तजू की शर्त है,
उसका मिल जाना बहुत मुश्किल भी है आसान भी।

❀ ❀ ❀

किसी तरह न समाएंगे वो निगाहों में,
बिछा रहे हैं जो कांटे वतन की राहों में।
कभी जलाएंगी तेरा मकां वह ऐ सय्याद,
भरी हुई है जो बिजली हमारी आहों में।
वो आज ग़ैर के दर के फ़क़ीर हैं 'बिस्मिल',
रहा शुमार कभी जिनका बादशाहों में।

❀ ❀ ❀

आप अगर यह चाहते हैं नुक्ताचीनी कीजिए,
तो ज़रूरत से सिवा अखबारबीनी कीजिए।

❀ ❀ ❀

रहे करार से क्यों दिल हमारा सीने में,
अगर निफ़ाक है तो लुत्फ़ क्या है जीने में।

मुझे पसन्द न आई जो मेम की आवाज़,
तो हर तरफ़ से उठो 'शेम' 'शेम' की आवाज़।

❀ ❀ ❀

चलते चलते थक गया अफ़सोस है,
फिर भी मंजिल मेरी लाखों कोस है।

❀ ❀ ❀

फ़िक्र दिल में हर घड़ी उस बात की, इस बात की,
मैं हूँ ख़ुश किस बात से मुझको ख़ूशी किस बात की।

❀ ❀ ❀

चलना ज़रा मुहाल है गाड़ी अब अड़गई,
क्या लुत्फ़े इत्तिफाक़ गिरह दिल में पड़ गई।
'बिस्मिल' कोई भी पूछने वाला नहीं रहा,
वो क्या बिगड़ गए मेरी दुनिया बिगड़ गई।

❀ ❀ ❀

लीडर के लिए ये घात है दुनिया भर की,
काम तो कुछ भी नहीं बात हैं दुनियाभर की।

❀ ❀ ❀

मज़हबी कामों में रखने बेसबब पड़ने लगे,
वो उधर, यह इस तरफ़, हर बात पर अड़ने लगे।

❀ ❀ ❀

जान ले यह जान ले यह जान ले यह जान ले,
हसरते आनर है तो साहब का कहना मान ले।

मैं असीरी[1] में भी आज़ादी का नग़मा[2] गाऊँगा,
ऐ मेरे सय्याद तू अच्छी तरह ये जान ले।
'पानियर' कहता है ऐ 'बिस्मिल' मुनासिब है यही,
लाट साहब जो कहें उस बात को तू मान ले।

❀ ❀ ❀

ख़राब दिन करे बर्बाद रात कौन करे,
वो कह रहे हैं कि ऐसों से बात कौन करे।

❀ ❀ ❀

हमें होता है ज़ाहिर 'पानियर' के भी ख़यालों से,
वो आजिज़ आगए हैं आजकल अख़बारवालों से।

❀ ❀ ❀

उमंग दिल में रहे जोशे आरज़ू के साथ,
अगर जिओ तो ज़माने में आबरू के साथ।

❀ ❀ ❀

फिरते हैं क्या सोच कर वो इस तरह अकड़े हुए,
मज़हबी झगड़ों में हैं दिन रात जो जकड़े हुए।
उनसे हम बंगले पे कहने जा रहे थे राज़े दिल,
रह गए कुछ सोच कर अपनी ज़बाँ पकड़े हुए।
कुछ लिखें 'बिस्मिल' तो आफ़त लिख के सर पर मोल लें,
सब हैं क़ानूनी शिकंजों में बहुत जकड़े हुए।

१—क़ैद। २—राग।

ये हैं अंधेरे में, रहते हैं वो उजाले में,
बस इतना फ़र्क़ है गोरे में और काले में।

❀ ❀ ❀

जोशे मज़हब पर अकड़ना चाहिए,
आग हो तो कूद पड़ना चाहिए।
बात ये मुझको नहीं 'बिस्मिल' पसन्द,
हिन्दुओ मुस्लिम को लड़ना चाहिए।

❀ ❀ ❀

अज़ीज़ वक़्त के खोने से फ़ायदा क्या है,
उठो सहर[1] हुई सोने से फ़ायदा क्या है।
हँसी ज़माने को आए जो हज़रते 'बिस्मिल'
तो सब में बैठ के रोने से फ़ायदा क्या है।

❀ ❀ ❀

लुत्फ़ लिखने का यही है जा लिखें बेजा लिखें,
जब न आज़ादी हो तो अख़बार वाले क्या लिखें।

❀ ❀ ❀

हो गईं गलियाँ भी शामिल शहर की सड़कों के साथ,
लड़कियाँ पढ़ने लगीं कालिज में अब लड़कों के साथ।

❀ ❀ ❀

जिसे देखो दबाने पर आमादा है ऐ 'बिस्मिल',
सबब इसका ये है आपस की वो ताक़त नहीं हम में।

१—सुबह।

अब न अगला शोर ग़ुल है अब न वैसा जोश है,
देखता हूँ मैं जिसे चुपचाप है ख़ामोश है।

❀ ❀ ❀

ये उनसे मैं नहीं कहता कि दुश्मनी न करें,
कभी करें वो मेरे साथ इसे कभी न करें।
बस एक बात कही तुमने हज़रते 'बिस्मिल',
कहाँ से पेट भरें सब, जो नौकरी न करें।

❀ ❀ ❀

जिसमें गफ़लत काम से हो जिनको हसरत नाम की,
ऐसे लीडर और ऐसी लीडरी किस काम की।

❀ ❀ ❀

एक बेकस ये कह के रोता है,
कौन दुनिया में किस का होता है।

❀ ❀ ❀

हम न होंगे न ज़माने में निशानी होगी,
ज़िन्दगी अपनी किसी रोज कहानी होगी।

❀ ❀ ❀

मफ़हूम[1] ग़ज़ब है तो ये मज़मून अजब है,
समझा न कोई आपका क़ानून अजब है।

१—मतलब ।

शेख साहब हसरते 'आनर' में ऐसा कीजिए,
पायजामा छोड़ कर पतलून पहना कीजिए।

❀ ❀ ❀

हम देख के क़िस्मत को जबीं[1] कूट रहे हैं,
बेबस वो समझ कर जो हमें लूट रहे हैं।
हिन्दू भी मुसलमान भी रस्ते से भटक कर,
मैदाने तरक्की की सड़क कूट रहे हैं।
आपस की लड़ाई से हुवा नफ़ा ये 'बिस्मिल',
रिश्ते जो मुहब्बत के थे वो टूट रहे हैं।

❀ ❀ ❀

सब से आगे पांव अब धरने लगे,
कल के लौंडे 'लीडरी' करने लगे।

❀ ❀ ❀

वो दूर दूर से करते हैं दूर की बातें,
समझ से हो गईं बहार हुज़ूर की बातें।

❀ ❀ ❀

जो होटलों में हमेशा शराब पाते हैं,
उन्हें खबर नहीं क्योंकर ग़रीब जाते हैं।

❀ ❀ ❀

उस सिम्त रहेंगे कि खुशामद है बड़ी चीज़,
हम तो ये कहेंगे कि खुशामद है बड़ी चीज़।

१—माथा।

पढ़ के 'इंगलिश' कह दिया सब खेल है,
वो समझते हैं कि मज़हब खेल है।

❀　　❀　　❀

गोमगो[1] में फँस गए इन पर यक़ीं क्योंकर करें,
तेरी बातें हैं अजब हम हाँ नहीं क्योंकर करें।
ये तो एक मुद्दत से कहते हो कभी मिल जायँगे,
हम तुम्हारी झूठी बातों का यक़ीं क्योंकर करें।
अड़ गई है दिल के लेने पर किसी की हर, अदा,
फिर बताओ हज़रते 'बिस्मिल' नहीं क्योंकर करें।

❀　　❀　　❀

यों बिगड़कर देर हो जाने पर उसने बात की,
सुबह को खानी पड़ेगी तुमको रोटी रात की।

❀　　❀　　❀

सोज़ेगम[2] से काम चलने दीजिए,
जल रहा हूँ मुझको जलने दीजिए।
क़ौम एक दीवार है दीवार को,
पहले गिरने फिर सम्हलने दीजिए।
हज़रते 'बिस्मिल' हमारी हल्क पर
चलती है तलवार चलने दीजिए।

❀　　❀　　❀

दूर नख्ले[3] आरज़ू से गिर के पत्ती की तरह,
क़ौम पिघली जा रही है मोमबत्ती की तरह।

१—कथनाय अथवा अकथनीय। २—दुख रूपी जलन। ३—पेड़।

नहीं है और कोई शौक़ हमको आलम में,
हमारा नाम छपे 'पानियर' के 'कालम' में।

❀ ❀ ❀

रब्त होने का नहीं तो काम होने का नहीं,
'इंडिया' में और सब कुछ है मगर एका नहीं।

❀ ❀ ❀

इस तरफ़ अपनी निगाहें कीजिए,
फिर यह कहिए मुझसे आहें कीजिए।
बन गई हर सिम्त अगर सड़कें तो क्या,
सब के दिल में अपनी राहें कीजिए।
हज़रते 'बिस्मिल' किसी का हुक्म है,
रात दिन चुपचाप आहें कीजिए।

❀ ❀ ❀

कहने के लिए सूट है वो सूट नहीं है,
'डासन' का अगर पाँव में 'फ़ुलबूट' नहीं है।

❀ ❀ ❀

नख़्ले उल्फ़त काट कर बैठोगे किस की छाँव में,
अपने हाथों से न मारो तुम कुल्हाड़ी पाँव में।

❀ ❀ ❀

ये किसने कह दिया ज़माने से बैर कर,
दुनिया में आगया है तो दुनिया की सैर कर।

हमें कुछ मर्त्तबे दुनिया में हासिल हो नहीं सकते,
जो एक दिल बन नहीं सकते जो एक दिल हो नहीं सकते।
ये अब शौहर से कहती है पढ़ी लिक्खी हुई बीवी,
मेरे कमरे में तुम बे पूछे दाखिल हो नहीं सकते।
वो कहते हैं कि लीडर सब तुम्हें माने मगर फिर भी,
हुकूमत तुम कभी करने के क़ाबिल हो नहीं सकते।
वो योरोप की हवाओं से रहेंगे दूर ऐ 'बिस्मिल'
मिसे लंदन के ग़मज़ों से जो बिस्मिल हो नहीं सकते।

❀ ❀ ❀

हुस्ने लंदन का मोयस्सर जो नज़ारा है हमें,
ज़िन्दगी है यही जीने का सहारा है हमें।
मिसरए हज़रते 'बिस्मिल' में नहीं कोई क़लाम,
लाट साहब की खुशामद का सहारा है हमें!

❀ ❀ ❀

तेरहीं को आके पंडित ख़ूब भोजन कर गए,
पेट पूरी और लड्डू से वो अपना भर गए।
दावतें खाईं अज़ीज़ों ने मिला सब को मज़ा,
आप से हम क्या बताएं ये हुवा जब मर गए।

❀ ❀ ❀

वो पुन करते हैं इससे दूर अपना पाप करते हैं,
जो पैहरों बैठ कर गंगा किनारे जाप करते हैं।

ज़बां पर ज़िक्रे हक़[1] भी और दिल में जौक़े नाहक़ भी,
खुदा को याद 'बिस्मिल' इस तरह क्यों आप करते हैं।

❀ ❀ ❀

जिस क़दर चन्दा मिला चुपचाप घर में रख लिया,
लीडरी में जब बहुत कुछ नाम पैदा कर लिया।

❀ ❀ ❀

ये कहानी वो फ़िसाना हेच है,
मेरी नज़रों में ज़माना हेच है।
हज़रते 'बिस्मिल' कोई सुनता नहीं,
आप का क़ौमी तराना हेच है।

❀ ❀ ❀

यही सबब है जो हर वक़्त सर में चक्कर है,
तुम्हारी बात हमारी समझ से बाहर है।

❀ ❀ ❀

आख़िर को मुझे मौत के क़ानून ने घेरा,
हैज़े से बची जान तो ताऊन ने घेरा।

❀ ❀ ❀

ये वो शै है जुस्तजू किसको नहीं,
लीडरी की आरज़ू किसको नहीं।

❀ ❀ ❀

किसी ने सैर ज़माने की सरसरी कर लो,
किसी ने लीडरी करली फ़्लीडरी कर लो।

१—ईश्वर

शिकमपुरी[1] की तमन्ना में हज़रते 'बिस्मिल',
जो हमसे कुछ न बन आई तो नौकरी करली।

❀ ❀ ❀

आलम मेरी नज़र से न क्यों हो गिरा हुवा,
दुनिया फिरी हुई है ज़माना फिरा हुवा।
कहने लगे वो बज़्म में 'बिस्मिल' को देखकर,
आने से इनके अपना मज़ा किरकिरा हुवा।

❀ ❀ ❀

पानियर का ये अजब मज़मून है,
मैं जो लिख दूं बस वही क़ानून है।

❀ ❀ ❀

न दुनिया से उन्हें मतलब न मतलब है ज़माने से,
उन्हें तो वास्ता है बस हमी को ही सताने से।

❀ ❀ ❀

बैठे हैं एक कोने में चुप जेल काट के,
धोबी के जैसे कुत्ते न घर के न घाट के।

❀ ❀ ❀

वो कह रहे हैं बड़ा ऐब है ये 'बिस्मिल' में,
कि बात कहता है दोटूक अपनी महफ़िल में।

❀ ❀ ❀

हाफ़ लीडर कह रहे थे फ़ख्र से बाज़ार में,
अब हमारा नाम भी छपने लगा अख़बार में।

१—पेट भरना।

शेख़ जी समझे कि अब जन्नत में कब्ज़ा हो गया,
मिल गई कुर्सी खुशामद से अगर दर्बार में।
जीते जी दुनिया में ऐ 'बिस्मिल' हुई मेरी न क़द्र,
बाद मरने के ख़बर छापी गई अख़बार में।

❀ ❀ ❀

मतलब के न लीडर, न किसी काम के लीडर,
दुनिया में हज़ारों हैं फ़क़त नाम के लीडर।

❀ ❀ ❀

जहाँ जाओ जहाँ पहुँचो फ़िसाना है खुशामद का,
खुदाई है खुशामद की ज़माना है खुशामद का।

❀ ❀ ❀

ये कहर ये अन्धेर ज़माने में कहीं है
जो 'डाग' की इज्ज़त है वो 'नेटिव' की नहीं है।

❀ ❀ ❀

यहाँ खाने में अपनी हर तरह इज्ज़त समझते हैं,
तमाशा है कि हम होटल ही को जन्नत समझते हैं।

❀ ❀ ❀

जब निकल जाता है मतलब गुफ़्तगू करते नहीं,
शर्म ऐसी है वो आँखें रूबरू करते नहीं।

❀ ❀ ❀

कहूँ तो क्या कहूँ ये सोचता रहता हूँ मैं दिल में,
इजाज़त ही नहीं कुछ बोलने की उनके महफ़िल में।

दिल पर कभी गज़ब कभी सर पर अज़ाब है,
ये दौर है ख़राब ज़माना ख़राब है।

❀ ❀ ❀

उड़ने लगे हैं ख़ल्क में क्या शर नए नए,
पैदा हुए हैं जब से 'एडीटर' नए नए।

❀ ❀ ❀

यह जांच के यह देख के होश अपने गए हैं,
जब देखिए जब जांचिए क़ानून नए हैं।

❀ ❀ ❀

यों तड़पता है हमारा दिल क़ुब के 'हाल' में,
मुब्तिलाए[1] ग़म हो जैसे फँस के मछली जाल में।

❀ ❀ ❀

ख़त्म होती ही नहीं क्या बात ऐसी तान की,
आपकी 'स्पीच' है या आंत है शैतान की।

❀ ❀ ❀

आप ही पर मुनःसिर क्या है ये है सब के लिए,
काम करता है ज़माना अपने मतलब के लिए।

❀ ❀ ❀

चर्खे़ की अब आती नहीं कानों में सदा[2] भी,
दो दिन के लिए बंध गई खद्दर की हवा भी।

❀ ❀ ❀

'स्पीच वो' देते हैं मगर कुछ नहीं होता,
मालूम हुआ इसमें असर कुछ नहीं होता।

१—दु:ख में फँस जाना। २—आवाज़।

क्या हाल वतन का है उन्हें होश नहीं है,
करते हैं बहुत बात मगर जोश नहीं है।
अच्छे करो बर्त्ताव तो गुन गाए तुम्हारा;
'बिस्मिल' कोई एहसानफ़रामोश नहीं है।

❀ ❀ ❀

आयतुल कुर्सी पढ़ेंगे बैठ कर स्टूल पर,
मोलवी साहब का कब्ज़ा हो गया स्कूल पर।

❀ ❀ ❀

नाम ले लेकर बुतों का खूब भोजन कीजिए,
आये हो काशी में तो जी भर के दर्शन कीजिए।

❀ ❀ ❀

हम उनके काम आते वो हमारे काम आते हैं,
जो वो 'स्पीच' देते हैं तो हम ताली बजाते हैं।

❀ ❀ ❀

न परवा है मोहल्ले की न अपने घर से मतलब है,
कहे दुनिया बुरा लेकिन हमें 'आनर' से मतलब है।

❀ ❀ ❀

ज़िन्दगी जब तक रहे चुपचाप चन्दा दीजिए,
अपने हाथों से गले में अपने फन्दा दीजिए।

❀ ❀ ❀

सच कह रहा हूँ तुझसे ये ऐ हमनशीं[1] न हो,
मज़हब न हो तो कोई भी झगड़ा कहीं न हो।

१— मित्र।

देखिए ये शौके 'कालिज' क्या करे,
क़ौम पर अब गिर के फ़ालिज क्या करे।

❀ ❀ ❀

यों शाद किया बाप ने बेटे को दुआ से
अल्लाह बचाए तुम्हें लंदन की हवा से

❀ ❀ ❀

पड़े हैं फ़ल्सफे के फेर में ये माजरा क्या है,
समझ ही में न आया आज तक हमको ख़ुदा क्या है।

❀ ❀ ❀

तिजारत या हुनर में तो नहीं योरप से हम आगे
मगर फ़ैशन में हम रहते हैं उससे सौ क़दम आगे
यह कहकर रुक गई है क़ौम मैदाने तरक्क़ी में
चलो झगड़ा चुका बस बस न तुम आगे न हम आगे

❀ ❀ ❀

बुरा जो काम है हरग़िज वो अच्छा हो नहीं सकता,
'कमीशन' लाख बैठे कुछ नतीजा हो नहीं सकता।

❀ ❀ ❀

यहाँ वायस[1] है जो वो गर्मिए बाज़ार नहीं
इतने अखबार हैं अब जितने ख़रीदार नहीं

❀ ❀ ❀

वो इनायत वो तवज्जह और वो बातें कहाँ,
अलग़रज पहले के दिन पहले की अब रातें कहां।

१—कारण।

कब हमने ये दी धमकी तलवार निकालेंगे,
जब कुछ न बन आएगी अख़बार निकालेंगे।

❀ ❀ ❀

जो खुशामद में 'अप-टू-डेट' हो हुए,
आनरेरी मजिस्ट्रेट हुए।

❀ ❀ ❀

तुम्हारे वास्ते सब कुछ यहाँ सामान हाज़िर है,
कि दिल हाज़िर है सर हाज़िर है अपनी जान हाज़िर है।

❀ ❀ ❀

ये पंडित और वायज़[1] तो हमें जीने नहीं देते,
बरांडी है मुक़द्दर[2] में मगर पीने नहीं देते।

❀ ❀ ❀

हर घड़ी रहने लगा ठाट से हुक्काम के साथ,
बड़ी इज्ज़त, बड़ी राहत, बड़े आराम के साथ।
मेहरबानी जो सिवा होगी तो बस देके ख़िताब,
दुम लगा देंगे किसी दिन वो मेरे नाम के साथ।

❀ ❀ ❀

पढ़ के इंगलिश भूल बैठे बाप को,
देखते हैं वो अब अपने आप को।

❀ ❀ ❀

तुझे जो हैट की हसरत तो मुझको पगड़ी की,
तेरे रिवाज से क्योंकर मेरा रिवाज मिलै।

१—उपदेशक। २—भाग्य।

माना कि जमाने से हमें बैर नहीं है,
लेकिन कहीं रहने में भी तो ख़ैर नहीं है।
'बिस्मिल' से छुपाते हैं वो क्यों राज़े मुहब्बत,
बन्दा है उन्हीं का ये कोई ग़ैर नहीं है।

❀ ❀ ❀

फ़िक्रो कोशिश से अफ़सरी न मिली,
अफ़सरी क्या कि नौकरी न मिली।
सारा बाज़ार ढूंढ़ आए हम,
इंडियन मेड तश्तरी न मिली।
पास बी० ए० भी हो गए लेकिन,
किसी दफ़्तर में नौकरी न मिली।
जेल भी काट आए ऐ 'बिस्मिल'
मगर अफ़सोस लीडरी न मिली।

❀ ❀ ❀

जन्नत की तमन्ना में क्यों जी से गुज़र जाना,
इससे तो मुनासिब है होटल ही में मर जाना।
आराम नहीं मिलता दमभर भी जो ऐ 'बिस्मिल',
इस दौर में बेहतर है दुनिया से गुज़र जाना।

❀ ❀ ❀

ख़िताब अहले योरोप से क्या मिल गया,
वो दिल में ये समझे ख़ुदा मिल गया।

❀ ❀ ❀

यों ही बंगले पे होंगी दावतें उनकी जो आनर में,
तो दौलत की जगह फिर ख़ाक ही रह जायगी घर में।

❀ ❀ ❀

कहते हैं वो शरीक तो हो मेरे ग़ोल में,
निकलेगा तेरा नाम भी 'आनर' के 'रोल' में।

❀ ❀ ❀

देखकर हम मिसे लंदन को परी कहते हैं,
हुस्न कहते हैं इसे जल्वागरी कहते हैं।
लगी लिपटी कभी कहते नहीं हम ऐ 'बिस्मिल',
कोई नाख़ुश हो कि ख़ुश बात खरी कहते हैं।

❀ ❀ ❀

ज़ाते हक़ से इस क़दर जूद[1] आशना क्योंकर हुआ,
उनको हैरत है यही वो बुत ख़ुदा क्योंकर हुआ।

❀ ❀ ❀

बन्द अगर राहे तरक्क़ी हो तो रोना चाहिए,
आदमी को कुछ न कुछ दुनियाँ में होना चाहिए।

❀ ❀ ❀

हमें हो या न हो सामाने ऐश उनको मोहय्या,
दरों में ख़स की टट्टी छत में तो बिजली का पंखा है।

❀ ❀ ❀

ख़ुदा जाने ये कैसी जंग है यह कैसो अनबन है,
किसी के हम नहीं दुश्मन ज़माना फिर भी दुश्मन है।

१—जल्द दोस्त हो जाना।

क़म्पनी बाग की हवा खाओ,
नल का पानी पिओ जिए जाओ।

❀ ❀ ❀

पढ़ कर अब पोथी बिरहमन क्या करे,
उठ गया है इसका फ़ैशन क्या करे।

❀ ❀ ❀

अब पढ़े लिक्खों का ये दस्तूर है,
जो कहे बीबी उन्हें मंज़ूर है।

❀ ❀ ❀

बैठते उठते हमें आज़ार[1] देना चाहिए,
यों मुहब्बत का सिला[2] सरकार देना चाहिए।
जिसमें ले दे के हो तालीमे वफ़ादारी का ज़िक्र,
सब के पढ़ने को वही अख़बार देना चाहिए।
रात दिन 'बिस्मिल' तड़पते हैं क़रार आता नहीं,
जल्द एक 'अरजन्ट' उनको तार देना चाहिए।

❀ ❀ ❀

मेरी मायूसी[3] है अच्छी मेरी नाकामी भली,
लेकिन इसको कह नहीं सकता कि बदनामी भली।
वाक़ई इल्मों हुनर की क़द्र ऐ 'बिस्मिल' नहीं,
इस ज़माने में तो शोहरत से है गुमनामी भली।

१—दुख। २—इनआम। ३—निराशा।

नज़रें उठा के देखें जो साहबे नज़र हैं,
शक्लें वो अब कहां हैं वो सूरतें किधर हैं।
मेरा कमाल देखें परखें वो मुझको 'बिस्मिल',
जो साहबे नज़र हैं जो साहबे हुनर हैं।

❀ ❀ ❀

किस बात की कमी है उनकी 'मेजारटी' में,
ले दे के 'सर' ही 'सर' हैं सरकार पार्टी में।
'बिस्मिल' पढ़ा है जबसे दर्बार में क़सीदा,
गिनते हैं वो मुझे भी सरकार पार्टी में।

❀ ❀ ❀

किस क़दर दर्द में डूबी है कहानी मेरी,
नज़र कालिज हुई पुरलुत्फ़ जवानी मेरी।

❀ ❀ ❀

वो दिल में ख़ुश हैं बी० ए० पास अब मेरा भतीजा है,
मगर उनसे कोई पूछे कि क्या इसका नतीजा है।

❀ ❀ ❀

फले शाखे तमन्ना इसलिए ये रंग लाते हैं,
बड़े दिन में बड़े साहब को हम डाली लगाते हैं।

❀ ❀ ❀

हर तरफ़ आफ़ाक़[1] में चर्चे हैं अब क़ानून के,
क्यों न धोती छोड़कर गाहक हों हम पतलून के।

1—संसार।

रूबरू फ़ैशन के फ़ौरन रुख से वो काफ़ूर थी,
कहने सुनने के लिए डाढ़ी ख़ुदा का नूर थी।

❀ ❀ ❀

मंदिर से वास्ता नहीं होटल के सामने,
परसाद को सलाम है 'बिस्कुट' की चाट में।

❀ ❀ ❀

क़द्र के क़ाबिल न क्यों हो क़द्रदानी आपकी,
मेहरबां हमको बहुत है मेहरबानी आपकी।

❀ ❀ ❀

वो तो कहते हैं कि ऐसा क्यों है ऐसा क्यों नहीं,
मुझको यह रोना है मेरे पास पैसा क्यों नहीं।

❀ ❀ ❀

वक्त पर इमदाद कोई दे बहुत दुश्वार है,
रूपया हासिल न हो तो शायरी बेकार है।

❀ ❀ ❀

कहा वो पीठ पीछे बज़्म में ख़ामोश रहते हैं,
यह अच्छा है कि मेरे रूबरू अच्छा तो कहते हैं।

❀ ❀ ❀

आपकी बरहम[1] मिज़ाजी पर यह मेरी अर्ज़ है,
प्यार में सब कुछ है जायज़ प्यार करना फ़र्ज़ है।

१—क्रोधित रहना।

बरहमन का खेल है बिगड़ा हुआ बनता नहीं,
अब वो मंदिर में किसी से भूलकर तनता नहीं।

❀ ❀ ❀

इसमें भी है पोशीदा कोई राज़े मोहब्बत,
'बिस्मिल' को जो वो भूले से अच्छा नहीं कहते।

❀ ❀ ❀

ये देखती रही हिर-फिर के बस निगाह फ़क़त,
तुम्हारी बज़्म में मिलती है वाह वाह फ़क़त।
बयाने शौक़ को ताक़त नहीं रही 'बिस्मिल',
मेरी ज़बां से निकलती है एक आह फ़क़त।

❀ ❀ ❀

बनाया इसे 'सर' उसे सर किया,
ये सरकार भी ख़ूब सरकार है।
वसूली अदालत से जिसकी न हो,
हक़ीक़त में डिग्री वो बेकार है।

❀ ❀ ❀

रंग दुनिया देखकर वाह वक्फ़े इशरत[1] होगया,
अब कहां मज़हब है मज़हब कब का रुख़सत होगया।

❀ ❀ ❀

बड़ी मुश्किल से ख़ुश होंगे हमारी ख़ुश बयानी पर,
नज़र अहले नज़र रखते हैं अल्फ़ाज़ो मआनी[2] पर।

१—आराम में मग्न रहना। २—अर्थ।

अदब के साथ पीरी[1] झुक के दुनिया भर से कहती है,
अबस इतरा रहे हैं लोग अपनी नौजवानी पर।
मेरी रंगी बयानी पर किसी को नाज़ है 'बिस्मिल',
किसी को रश्क है लेकिन मेरी रंगी बयानी पर।

❀ ❀ ❀

वफ़ूरे[2] ग़म में क़ब्ल अज़वक्त मर जाना ही बेहतर है,
हवाएं जब मुख़ालिफ़ हों तो डर जाना ही बेहतर है।
हम उनकी बज़्म में रक्खे न भूले से क़दम 'बिस्मिल',
ज़बां से गो ये कहते हैं मगर जाना ही बेहतर है।

❀ ❀ ❀

सच ये है कि साइंस से क्या हो नहीं सकते,
ऐ बन्दा-नेवाज़ आप ख़ुदा हो नहीं सकते।

❀ ❀ ❀

उड़ेंगी मुल्क में चारों तरफ़ परी बनकर,
रहेंगीं परदे में परदे की बीबियां कब तक।

❀ ❀ ❀

चुप रहें किस वास्ते हम चुप न रहना चाहिए,
अपने मतलब के लिए कुछ शैर कहना चाहिए।

❀ ❀ ❀

वो चलाएं शौक़ से तीरे नजर को देखकर,
मेरे दिल को देखकर मेरे जिगर को देखकर।

१—बुढ़ापा। २—अति दुःख।

बन्दा-नेवाज़ कौन सी हैरत की बात है,
'बिस्मिल' तड़प रहे हैं ये क़िस्मत की बात है।

❀ ❀ ❀

आप मिल जायँ अगर मुझसे तो क्या संयोग है,
मैं यही समझूं मेरी ख़ातिर ये मोहनभोग है।
दर्द उल्फ़त से नहीं वाक़िफ़ मेरे अच्छी तरह,
पूछते हैं डाक्टर साहब तुम्हें क्या रोग है।
हज़रते 'बिस्मिल' से तन कर एक गोरे ने कहा,
आप से मिलते नहीं हम आप काला लोग है।

❀ ❀ ❀

आप के दिल में कसक है या जिगर में टीस है,
डाक्टर तो ले ही लेंगे जो कुछ उनकी फ़ीस है।

❀ ❀ ❀

देखनेवाले को हासिल लुत्फ़ दुनिया कुछ न था,
उसने देखा एक नज़र में जैसे देखा कुछ न था।

❀ ❀ ❀

ज़बां खोली नहीं जाती दहन[1] खोला नहीं जाता,
हम उनके सामने क्या बोलें कुछ बोला नहीं जाता।
कहूँ मैं डाक्टर से किस तरह अब हाल ऐ 'बिस्मिल',
दमे आखिर ज़बां है बन्द कुछ बोला नहीं जाता।

१—मुंह।

जो नहीं कहने की बातें हैं वो कह जाते हैं,
और हम ग़ौर से मुँह देखकर रह जाते हैं।

❀ ❀ ❀

मिस्टर ये कह रहे हैं इसमें हिजाब क्या है,
मैं साथ में मिसों के हूँ नाचने को 'रेडी'।
शौहर से कोई कह दे कि क़िस्मत को अपनी रोए,
उड़ने लगीं हवा पर फ़ैशनपरस्त लेडी।

❀ ❀ ❀

मज़ा मिलाप का दिल से जो दिल मिले तो मिले,
बंधी कली नहीं खिलती कली खिलै तो मिले।
बढ़ा के रस्म घटाएं ये गैरमुमकिन है,
किसी से हज़रते 'बिस्मिल' अगर मिले तो मिले।

❀ ❀ ❀

रोज़ क़ानून बदलते हैं बदलनेवाले,
दो क़दम चल नहीं सकते कभी चलनेवाले।

❀ ❀ ❀

बात किस काम की मतलब की अगर बात नहीं,
इस मुलाकात में कुछ लुत्फ़े मुलाकात नहीं।

❀ ❀ ❀

दिल को जब होती है दुनिया में ज़रूरत पैदा,
कर लिया करता है सामाने मुहब्बत पैदा।

हमको मिलते नहीं दुनियां में मोहब्बत वाले,
किसको चाहें करैं फिर किस से मोहब्बत पैदा।
जो किया करते हैं ग़ीवत[1] में शिकायत 'बिस्मिल',
ऐसे अहबाब से हो जाती है नफ़रत पैदा।

❀ ❀ ❀

यह कह रहा ज़माना ज़माना-साज़ों से,
कि मारपीट के तुमको दुरुस्त कर देंगे।
ख़बर जो पहुँचेगी इस वाक़ए कि 'बिस्मिल' तक,
ज़रूर कोई वो मिसरा भी चुस्त कर देंगे।

❀ ❀ ❀

अजब क्या जो हो जाओ तुम सर बलन्द,
न पहुँचाओ हरगिज़ किसी को गज़न्द[2]।
किसी का कुछ इसमें इजारा नहीं,
मुहब्बत में है अपनी अपनी पसन्द।
ज़माना है बेदर्द 'बिस्मिल' मगर,
मिले 'डाक्टर झा' हमें दर्दमन्द।

❀ ❀ ❀

मानै कि न मानै कोई ऐ हज़रते 'बिस्मिल',
हम तो ये कहे जांयगे हम कुछ भी नहीं हैं।

१—पीठ पीछे बुराई करना। २—दुख।

करें क्या पसन्द उसको मुश्किल पसन्द,
कि होतो है मेरी गज़ल दिल पसन्द।
पसन्द आ गई ऐसी 'बिस्मिल' की तर्ज़,
उन्हें लोग कहते हैं 'बिस्मिल' पसन्द।

❀ ❀ ❀

न वो मंसब न वो दौलत न वो अब जाह[1] बाक़ी है,
मिटे सब गर्दिशे दुनिया से एक अल्लाह बाक़ी है।
दिवाला सेठ साहब का भी निकला अब तिज़ारत में,
जिसे देखो वो कहता है मेरी तनख्वाह बाक़ी है।

❀ ❀ ❀

बात जो साफ़ हो वो साफ़ कहूँ,
दिन को मुमकिन नहीं कि रात कहूँ।
जिस्में हो लुत्फ़ो जश्न ऐ 'बिस्मिल',
उसको शादी कहूँ बरात कहूँ।

❀ ❀ ❀

जोश मज़हब का बरहमन को भी तड़पाता नहीं,
अब भजन मंदिर में भूले से कोई गाता नहीं।

❀ ❀ ❀

आए जहाँ में और जहाँ से गुज़र गए,
अच्छे वेही रहे जो बहुत जल्द मर गए।

❀ ❀ ❀

धूल की रस्सी आप ने बटली,
जाके कालिज में 'हिस्ट्री' रटली।

१—मर्तबा।

मुझे अपनी जगह से खुद बखुद हिलना ही पड़ता है,
नहीं मिलने को दिल कहता मगर मिलना ही पड़ता है।
किया मजबूर फूलों की तरह फ़ितरत[1] ने ऐ 'बिस्मिल',
मुझे गुल्ज़ारे दुनिया में कभी खिलना ही पड़ता है।

❀ ❀ ❀

अब रवाँ अश्कों का तूफ़ा दीदए तर हो न जाय,
मार्के की बात ये है मार्का सर हो न जाय।
आठवें दसवें किसी को ख़त लिखें तो क्या लिखें,
डर रहे हैं हज़रते 'बिस्मिल' कि सेंसर हो न जाय।

❀ ❀ ❀

बात उनकी रङ्ग लाएगी ज़रूर,
सर पर आफ़त कोई ढाएगी ज़रूर।
कोई दुनिया से अलग ही क्यों न हो,
सौ तमाशे ये दिखाएगी ज़रूर।
हज़रते 'बिस्मिल' का ये है तजु.रबा,
लीडरी कुछ रंग लाएगी ज़रूर।

❀ ❀ ❀

बाप ने बेटे से पूछा तुम मोहज़्ज़ब[2] क्यों नहीं,
हर किसी से बे-रुखी है हर किसी से बे-दिली।
यों दिया बेटे ने अपने बाप को हँस कर जवाब,
मेरी इसमें क्या ख़ता तालीम ही ऐसी मिली।

१—प्रकृति। २—सभ्य

एक आसूदा[1] शिकम है और भूका एक है,
इसका हिस्सा कुछ नहीं हिस्से में उसके केक है।
हज़रते 'बिस्मिल' समझ कर काम करना चहिए,
काम जो बद है वो बद, जो नेक है वो नेक है।

❀ ❀ ❀

सैर योरुप के लिए क्यों दिल से शैदाई बने,
हम तमाशा बन गए साहब तमाशाई बने।
दैरो मसज़िद में जिन्हें मिलती न थी कल तक जगह,
आज गिरजा में वही बैठे हैं ईसाई बने।

❀ ❀ ❀

वो सिद्क़[2] दिल से हमारा ख़याल क्या करते,
ये हाल जब था तो हम अर्ज़े हाल क्या करते।
मलाल के लिए पैदा हुए जहान में हम,
किसी की बात का दिल में मलाल क्या करते।
जवाब कुछ भी न था यह समझ के ऐ 'बिस्मिल',
किसी के सामने कोई सवाल क्या करते।

❀ ❀ ❀

रब्त का ज़िक्र नहीं फ़िक्र मसावात[3] नहीं,
अब सिवा लड़ने के दुनिया में कोई बात नहीं।

१—पेटभरा हुआ। २—सच्चे। ३—बराबर।

तुमने ये खूब कही खूब कही खूब कहीं,
और तो सब से है 'बिस्मिल' से मुलाक़ात नहीं।

❀ ❀ ❀

बात क्या कोई कहे बात वो कब करते हैं,
और फिर कहते हो तुम घात वो कब करते हैं।
उनके बंगले पे ये एक एक से हम ऐ 'बिस्मिल',
पूछते हैं कि मुलाक़ात वो कब करते हैं।

❀ ❀ ❀

दीन के वास्ते दुनिया में जो रो रोके मरा,
वाक़या ये है वो कुछ हो गया कुछ हो के मरा।
जिसको देखा वही आफ़क़[1] में रो रो के मरा,
कोई दिल देके मरा या कोई जी खो के मरा।

❀ ❀ ❀

है मेरी आह जुदा है मेरी आवाज़ जुदा,
मुझको दम दे के हुए मोनिसो[2] दमसाज़ जुदा।
क़ाबिले दाद न हो किसलिए 'बिस्मिल' का कलाम,
रंग है सब से जुदा सब से है अन्दाज़ जुदा।

❀ ❀ ❀

ये कह कर उनको आया, एक एक को फांस लेना,
आवाज़ हो न पैदा चुपचाप सांस लेना।

१—संसार। २—साथी।

फंदे में और के वो हरगिज़ नहीं फँसेंगे,
मुश्किल नहीं जिन्हें कुछ दुनिया का फाँस लेना।
मक़तल[1] में आज 'बिस्मिल' क्या क्या तड़प रहा है,
शायद है हुक्म उनका हरगिज़ न साँस लेना।

❀ ❀ ❀

कहीं थीं हमने कुछ बँगले पे बातें अपने मतलब की,
मगर उनकी फिरी नज़रें तो आँखें फिर गईं सब की।
हुआ मालूम मिलकर हमको यारों से ये ऐ 'बिस्मिल',
कि दुनिया में अगर है दोस्ती तो वो है मतलब की।

❀ ❀ ❀

देख दुनिया में कभी अपने को बदनाम न कर,
नाम बदनाम हो जिस काम से वो काम न कर।
जान दे दे दरे कातिल पे तड़प कर 'बिस्मिल',
मुफ़्त में आरज़ूवो शौक़ को बदनाम न कर।

❀ ❀ ❀

दुनिया मेरी तरफ़ है खुदाई मेरी तरफ़,
लेकिन नहीं जमाने में भाई मेरी तरफ़।

❀ ❀ ❀

क्योंकर जुदा हो रूह बदन से खुशी के साथ,
उसको भी ज़िन्दगी है इसी जिन्दगी के साथ।

१—बलि वेदी।

जिस्मे ग़ुरूर हो वो कोई आदमी नहीं,
हैं आदमी वही जो मिले हर किसी के साथ।
मुम्किन नहीं ग़लत हो ये 'बिस्मिल' का तजरुबा,
साहब के जितने हुक्म हैं वो 'पालसी' के साथ।

❀ ❀ ❀

दम ज़माना जिस तरह भरता था अब भरता नहीं,
आपके इर्शाद पर कोई अमल करता नहीं।

❀ ❀ ❀

अपने मतलब की सुनाने को वो सर धुनते रहे,
बेदिली से हम भी चुप बैठे हुए सुनते रहे।

❀ ❀ ❀

सुनेगा कौन तुम्हें इसकी कुछ ख़बर भी है,
तुम्हारी बात में पहला सा अब असर भी है।

❀ ❀ ❀

बदनाम जो है उनका कभी नाम न होगा,
कुछ नाम किया है अभी कुछ नाम करेंगे।
आराम की हसरत है तो तक़लीफ़ उठाएँ,
तकलीफ़ उठाएंगे तो आराम करेंगे।
हम सुबह को बंगले से चले आए ये कहकर,
साहब से मुलाक़ात सरे शाम करेंगे।
'बिस्मिल' को न बदनाम करें मान ले कहना,
बदनाम वही होंगे जो बदनाम करेंगे।

जो सरे दर्बार पाया जायगा,
हर तरह वो सर चढ़ाया जायगा।
इस तरफ़ से आने वाली है सड़क,
घर हमारा भी गिराया जायगा।
ख़ूब है ये हज़रते 'बिस्मिल' का क़ौल,
जो सताएगा सताया जायगा।

❀ ❀ ❀

नाले कहते हुए निकले हमें आज़ादी है,
क़ैद में तो वो रहे क़ैद का जो आदी है।
उनकी तक़दीर बड़ी उनकी है तदबीर अच्छी,
रह के दुनिया में जिन्हें फ़िक्र से आज़ादी है।
इस ज़माने में कुछ ऐसे भी हैं शायर 'बिस्मिल',
हो के शागिर्द जिन्हें दावए उस्तादी है।

❀ ❀ ❀

भूल कर भी साथ फ़ैशन के कभी चलता नहीं,
मगरबी सांचों में सब ढलते हैं मैं ढलता नहीं।
फ़ायदा झुकने से है खिंचने से है क्या फ़ायदा,
बे मिले साहब से कोई काम तो चलता नहीं।
काले कोसों तक अँधेरा जिस मकां से दूर था,
देखता हूं मैं चराग़ उस घर में भी जलता नहीं।
हज़रते 'बिस्मिल' जो बागे दहर[1] में बेफ़ैज़[2] है,
इस तरह का आदमी तो फूलता फलता नहीं।

१—संसार। २—लाभ रहित।

वो पौधे मगरबी आबो-हवा ही में जो पलते हैं,
ज़मीने मशरक़ीं[1] पर फूलते हैं खाक फलते हैं।
ज़माने में हमेशा गर्म महफ़िल रह नहीं सकती,
वही हो जायंगे ठंडे जो हमसे दिल में जलते हैं।
ये चन्दा है वो चन्दा है कुछ इसमें दो कुछ उसमें दो,
मिलाकर हाथ साहब से कफ़े अफ़सोस मलते हैं।
मदारी डुगडुगी पर अपनी खूब इनको नचाता है,
ये बन्दर की तरह स्टेज पर क्या क्या उछलते हैं।
तरक्की पा गया बेशक नई तालीम से फैशन,
मगर हम हैं कि गिर कर भी समझते हैं सम्हलते हैं।
बला ठहरे नई तहज़ीब के पुतले भी ऐ 'बिस्मिल',
कि जिस सांचे में ढाले जाते हैं उसमें ये ढलते हैं।

❀ ❀ ❀

सब की रखते हैं ख़बर मेरी ख़बर रखते नहीं,
वाक़याते ग़म को वो पेशे नज़र रखते नहीं।
ख़ानए सैय्याद से उड़कर चमन तक जांय क्या,
जब हम अपने बाज़ुओं में बालो पर रखते नहीं।
बेहुनर होकर हुए मशहूर 'बिस्मिल' किस तरह,
शैरगोई के सिवा कोई हुनर रखते नहीं।

१—पूर्वीय।

पबलिक में किस क़दर है असर कुछ न पूछिए,
सब पूछते हैं आप मगर कुछ न पूछिए।
दिल पर हुवा गज़ब का असर कुछ न पूछिए,
लड़ने लगी नज़र से नज़र कुछ न पूछिए।
'बिस्मिल' रिज़र्व सीट पर अफकारे[1] ग़म नहीं,
क्या खूब रेल का है सफ़र कुछ न पूछिए।

❀ ❀ ❀

गुलशने दहर[2] में बेकार नज़र आते हैं,
पहले जो फूल थे अब ख़ार नज़र आते हैं।
एक में और ख़बर दूसरे में और ख़बर,
अब इसी ढंग के अख़बार नज़र आते हैं।
जिनको फ़ैशन की हवा कर नहीं सकती बेहोश,
मेरी नज़रों में वो हुशियार नज़र आते हैं।

❀ ❀ ❀

उसे आराम दम भर मिल नहीं सकता कभी घर में,
जिसे जीना हो दफ़्तर में जिसे मरना हो दफ़्तर में।
वतन की जो करै बेलाग ख़िदमत बस वो लीडर है,
ये ख़ूबी हो न लीडर में तो क्या ख़ूबी है लीडर में।

❀ ❀ ❀

हँसी रुकती न थी दुनिया में जिनकी,
वही अब कुछ समझ कर रो रहे हैं।

१—फ़िक्र। २—संसार वाटिका।

ये कह दे कोई फ़रयादी रहें,
अभी बंगले में साहब सो रहे हैं।
नहीं इल्ज़ाम इसका कुछ उन्हीं पर,
वो अपनी आबरू खुद खो रहे हैं।
जहां देखो वहीं है ज़िक्र इनका,
बहुत मशहूर 'बिस्मिल' हो रहे हैं।

❀ ❀ ❀

ये जवाब आया है ला कालेज से टेलीफ़ून का,
याद करता हूँ सबक़ मैं रात-दिन क़ानून का।
रो रहे हैं आज मंदिर में ये कह कर बरहमन,
अपनी धोती पर भी साया पड़ गया पतलून का।
वो ये कहते हैं कि है भूला हुआ 'लीडर' इसे,
'पानियर' को याद है सारा सबक़ कानून का।
तेगे क़ातिल से गले मिल मिल के होली खेल ली,
सुर्ख़रू 'बिस्मिल' को लाजिम है कफ़न भी टून का।

❀ ❀ ❀

हर बात में घात कुछ न पूछो,
सरकार की बात कुछ न पूछो।
साहब डिनर आज खाने आए,
ये रात है रात कुछ न पूछो।

कब्ज़े में उसी के है ख़ुदाई,
अल्लाह की जात कुछ न पूछो।
मशहूरे जहाँ बहुत हैं 'बिस्मिल',
क्या बन गई बात कुछ न पूछो।

❀ ❀ ❀

उलझेगी तबीयत मेरे सरकार न पढ़िए,
भेजा हुवा 'रूटर' का कोई तार न पढ़िए।
वो कहते हैं क़ौमी कोई अख़बार न पढ़िए,
किस दिल से ये 'कायस्थ समाचार' न पढ़िये।
काबू में न रह जायगा दिल ये रहे मालूम,
'बिस्मिल' के फड़कते हुए अशआर न पढ़िए।

❀ ❀ ❀

जो अच्छे हैं बुरों को हर तरह अच्छा समझते हैं,
मगर वो सामने अपने किसी को क्या समझते हैं।
हम अपनी मौत को हर हाल में अच्छा समझते हैं,
तमाशा ज़िन्दगी है ज़िन्दगी को क्या समझते हैं।
ज़माने में उन्हें अच्छा ज़माना कह नहीं सकता,
ज़माने भर से जो अपने ही को अच्छा समझते हैं।
हुआ मालूम हमको इतने दिन दुनिया में रहने पर,
वो कुछ समझे नहीं अपने को जो अच्छा समझते हैं।
लगाएं तीर दिल पर वो चलाएं तेग़ गरदन पर,
हम अपने सामने 'बिस्मिल' किसी को क्या समझते हैं।

आपके क़ानून में कितने ग़जब का जोश है,
होश वाला भी ये आलम देखकर बेहोश है।
अब 'कलब' के 'हाल' में 'नेटिव' की कुछ बनती नहीं,
लेडियों की .खुश्क अदाएं देखकर ख़ामोश है।
फेरकर तलवार गर्दन पर वो क़ातिल कह गया,
देखना ये है कि 'बिस्मिल' में कहाँ तक जोश है।

❀ ❀ ❀

हमको दफ़्तर में काम करना है,
किसी सूरत से पेट भरना है।
अपने मरने का ग़म हमें क्यों हो,
एक न एक रोज़ सब को मरना है।
इस तमन्ना में लोग मिलते हैं,
मिल के साहब से नाम करना है।
क्यों न पैवन्दे[1] ख़ाक हो जाऊँ,
ख़ाक में मिल के तो संवरना है।

❀ ❀ ❀

अच्छी कही तुमने हूर क्या है,
ये नाज़ है क्या .ग़ुरूर क्या है।
जो कुछ भी किया किया खुदा ने,
दरअस्ल मेरा .क़ुसूर क्या है।

१—मिलना।

फिरने लगे वो मेरी नज़र में,
अब मेरी नज़र में हूर क्या है।
'बिस्मिल' वो बना रहे हैं बिस्मिल,
फ़रमाएं मेरा क़ुसूर क्या है।

❀ ❀ ❀

मैं जिन्हें हूँ बावफ़ा समझे हुए,
वे मुझे हैं दिल में क्या समझे हुए।
वो ज़माने भर के ख़ुद हैं बेवफ़ा,
जो हमें हैं बेवफ़ा समझे हुए।
हुक्म तुम दे दो तो मर जाएं अभी,
जिन्दगी को हम हैं क्या समझे हुए।

❀ ❀ ❀

ये सबब है जो वो फ़रमाते हैं ये नेक नहीं,
उनके कहने में ज़माना है हमीं एक नहीं।
अहले मग़रिब हो इसे खाएंगे पीकर इसको,
हिन्द वालों के लिए चाय नहीं 'केक' नहीं।
क्या सितम है वो सितम करके ये फ़र्माते हैं,
मैं अगर नेक नहीं हूँ तो कोई नेक नहीं।

❀ ❀ ❀

काम से कुछ नहीं मतलब है ज़बाँ तेज तो हैं,
उनकी 'स्पीच' बहुत बलबला अंगेज़[1] तो है।

१—जोशीली।

बैठ कर खा नहीं सकता कभी होटल में डिनर,
क़ौम वालों के दिखाने को ये परहेज़ तो है।
दीन बाक़ी रहे या जाय नहीं ग़म इसका,
अपने पहलू में मगर एक मिसे नौख़ेज तो है।

❀ ❀ ❀

क्या बताएँ क्या कहें क्या रंग है क्या ढंग है,
आपके आज़ार से दुनिया में दुनिया तंग है।
ख़ूने दिल लख्ते जिगर की क़द्र होती ही नहीं,
'बिस्मिले' रंगी बयां यह शायरी का रंग है।

❀ ❀ ❀

कहां हम कोई सौदा शाद होकर मोल लेते हैं,
ग़नीमत है कि बाज़ारे जहां में बोल लेते हैं।
हमारी भी समझ में आगए मानी तिजारत के
गिरह में जो रक़म हैं आप उसको खोल लेते हैं।
बज़ाहिर रह गया इतना ताल्लुक हज़रते 'बिस्मिल',
वो हम से बोल लेते हैं हम उनसे बोल लेते हैं।

❀ ❀ ❀

बड़ी मुश्किल से वो अक़्सर खुले हैं,
भरी महफ़िल में दिल लेकर खुले हैं।
वहां इस पर नहीं कोई तवज्जह,
यहां शिकवों के सौ दफ़्तर खुले हैं।

अगर 'बिस्मिल' हुआ है एक दर बन्द,
हमारे वास्ते सौ दर खुले हैं।

❀ ❀ ❀

हुए अपने ख़यालात इस से गन्दे,
ख़ुदा वो हैं तो हम है उनके बन्दे।
बनाया इसको और उसको बिगाड़ा,
यही दिन-रात है दुनिया के धन्धे।
कमर में 'बेल्ट' है गरदन में 'टाई',
क़यामत हो गए 'फ़ैशन' के फन्दे।
बराबर होगा सारा हिन्द 'बिस्मिल',
चलेंगे बे तरह योरुप के रन्दे।

❀ ❀ ❀

अब न क़ोमा न अब वो बोटी है,
दाल पतली है ख़ुश्क रोटी है।
नाम को बन गया कोई पंडित,
न तिलक है न लम्बी चोटी है।
क्या करें हम बड़ी बड़ी बातें,
जानते हैं कि उम्र छोटी है।
हाले दिल उनसे क्या कहूँ 'बिस्मिल',
कहते हैं अक़्ल तेरी खोटी है'

ये वो डाईन है न छोड़ेगी हमें खाजायगी,
आने वाली मौत अपने वक़्त पर आजायगी।
हम उन्हें समझाएं क्या समझाने की हाजत नहीं,
खुद ब खुद समझेंगे जब उनको समझ आजायगी।
कौड़ी कौड़ी के लिए मोहताज हो जाएंगे सब,
घर की दौलत रोज की 'टी पार्टी' खाजायगी।
बे ख़बर साहब थे क्या ये राज़ उन्हें मालूम था,
मेम साहब की अदा 'बिस्मिल' को भी तड़पायगी।

❀ ❀ ❀

उनको नज़र में ख़ुशतरो बेहतर ज़रूर हूँ,
सरकार चाहते हैं कि मैं 'सर' ज़रूर हूँ।
पबलिक न माने मुझको तो मेरा क़सूर क्या,
मैं ये समझ रहा हूं कि लीडर ज़रूर हूँ।
एक एक को इस ख्याल ने अहमक़ बना दिया,
बढ़कर नहीं तो उनके बराबर ज़रूर हूँ।
'बिस्मिल' ये कह रहा है मेरी शायरी का रंग,
'अकबर' नहीं तो पैरवे 'अकबर' ज़रूर हूँ।

❀ ❀ ❀

कौन कहता है कि तू फ़ैशन का शैदाई न बन,
बन, मगर ऐसा भी अब तस्वीरे रुसवाई न बन।
पेट भरने के लिए तबदीले मज़हब है दुरुस्त,
कब कहा मैंने कि तू गिर्जा में ईसाई न बन।

इम्तिहाँ ही इम्तिहां में उम्र हो जायेगी खत्म,
और सब कुछ बन, कभी कालिज का शैदाई न बन।

❀ ❀ ❀

शौक़े कालिज में कहां तक दिल को इससे मेल है,
नाचना भी मग़रबी तहज़ीब का इक खेल है।
दूसरों के वास्ते हम किस क़दर मोहताज हैं,
दो क़दम पैदल नहीं चलते जहां तक रेल है।
हज़रते 'बिस्मिल' पै क़ुर्बां क्यों न हो सारा जहां,
सब से इनकी दोस्ती है सब से इनका मेल है।

❀ ❀ ❀

चाहिए लुत्फ़ भी दुनिया का हमें दीन के साथ,
कुछ मिठाई भी रहे मेज़ पै नमकीन के साथ।
एक मेरे दोस्त ने अज़राहे[1]-करम बंगले पर,
मुझको साहब से मिलाया बड़ी तहसीन[2] के साथ।
है ये कालिज की पढ़ाई तो नतीजा मालूम,
कोई दुनिया में रहेगा न कभी दीन के साथ।
देखना हो जो तमाशा तो कलब में देखो,
एक नया सीन नज़र आएगा हर 'सीन' के साथ।

१—कृपाकर। २—प्रशंसा।

हिन्द की ख़ैर मनाने से है काम ऐ 'बिस्मिल',
न तो 'जापान' के हम साथ न हैं 'चीन' के साथ।

❀ ❀ ❀

निछावर कोई होता है कोई क़ुर्बान जाता है,
नई चालें वो चलते हैं ज़माना जान जाता है।
हुसूले ज़र[1] की हसरत खाक़ छनवाती है दुनिया को,
कोई जाता है 'लंदन' तो कोई 'जापान' जाता है।
ज़माने में नई तहज़ीब देखी मैंने ऐ 'बिस्मिल,'
कुछ इसका ग़म नहीं मुझको अगर ईमान जाता है।

❀ ❀ ❀

कोई ख़ुदाई में हंस रहा है कोई ज़माने में रो रहा है,
जो हो चुका है वो हो चुका है जो हो रहा है वो हो रहा है।
ज़माना उट्ठा ज़माना बदला ज़माना चौंका ज़माना जागा,
अब अपनी ग़फ़लत को छोड़ ग़ाफ़िल ग़ज़ब की तू नींद सो रहा है।
बुरा कहेगी तुझे ख़ुदाई बुरा कहेगा तुझे ज़माना,
किसी के रस्ते में क्या समझ कर फ़िज़ूल कांटों को बो रहा है।
ज़बान सुथरी बयान नादिर[2] कलाम दिलकश ख़याल अच्छा,
कोई तो है इसमें ऐसी ख़ूबी कि नाम 'बिस्मिल' का हो रहा है।

१—रुपया पैदा करना। २—अपूर्व।

मग़रबी झगड़े ये नाहक सब से हैं,
हम से है मज़हब कि हम मज़हब से हैं।
जानता हूं मैं इसे अच्छी तरह,
आपके ज़ुल्मो सितम जिस ढब से हैं।
एक दिन कह दी थीं बातें साफ़ साफ़,
मुझ से वो नाराज़ दिल में जब से हैं।
हज़रते 'बिस्मिल' नहीं खिंचते कभी,
दोस्त दुश्मन यह तो मिलते सब से हैं।

❀ ❀ ❀

मैं तो यह जान गया जान गया जान गया,
आये हो तुम मेरे पहलू में मेरे दिल के लिए।
मैं दमे क़त्ल यह क़ातिल से कहे जाऊँगा,
तू ने कुछ भी न किया हज़रते 'बिस्मिल' के लिए।

❀ ❀ ❀

दमे आख़िर बड़ी हसरत से दुनिया मुँह को तकती है,
दिले अहबाब में क्या आतिशे उल्फ़त दहकती है।
कभी ज़ुल्मो सितम मुझ पर कभी लुत्फ़ो करम मुझ पर,
इन्हीं बातों से हर बात आपकी दिल में खटकती है।
कदम चारों तरफ़ मैं देखकर रखता हूँ ऐ 'बिस्मिल',
कि हर वादी[1] मोहब्बत की मेरे दिल में खटकती है।

१—घाटी।

अपनी क़ज़ा से खिल्क़त आलम में मर रही है,
दुनिया किसी को नाहक बदनाम कर रही है।
ऐसा दिया थपेड़ा मुश्किल हुआ ठहरना,
मौजों ने जब यह देखा कश्ती उभर रही है।
दुनिया को देखकर भी दुनिया को कुछ न देखा,
इस पर नज़र रही है उस पर नज़र रही है।
मिल कर किसी से लड़ना, लड़कर किसी से मिलना,
महफ़िल में वह नज़र भी क्या काम कर रही है।
क्योंकर न क़िस्सये ग़म 'बिस्मिल' उन्हें सुनाऊँ,
वह पूछते हैं मुझसे कैसी गुज़र रही है।

❀ ❀ ❀

हर घड़ी की नहीं अच्छी यह दिल आज़ारी[1] भी,
रोग हो जाती है बढ़ती हुई बीमारी भी।
होगया उनकी तरफ़ गांव का पटवारी भी,
लीजिये मिल गई मिट्टी में ज़िमींदारी भी।
जिस क़दर बढ़ते गये डाक्टरो वैद्य हकीम,
रोज़ पैदा हुई इतनी नई बीमारी भी।
पढ़कर स्कूल में तालीम का हासिल यह है,
मुफ़लिसी साथ लिए फिरती है बेकारी भी।
देख बिस्मिल न हो दम भर के लिए ऐ 'बिस्मिल',
मौत कहती है कि आएगी तेरी बारी भी।

१—दिल दुखाना।

कारोबार अपना बना, खल्क[1] में बेकार न बन,
इसका मतलब यह है गिरती हुई दीवार न बन।
झेल आज़ार मगर दरपए[2] आज़ार न बन,
देख चलती हुई फिरती हुई तलवार न बन।
है मुनासिब कि तमाशा को तमाशा ही समझ,
रह के दुनिया में भी दुनिया का खरीदार न बन।
कह गईं गुलशने[3] आलम की हवाएं मुझसे,
फूल बनना हो तो बन, फूलों में तू खार न बन।

❀ ❀ ❀

बरसात में हमने भी थोड़ी सी जो पी ली है,
यह बात पुरानी है क्या बात नई की है।
यह राज़ निराला है यह बात अनोखी है,
बुतख़ाना बने काबा अल्लाह की मरजी है।
अब रूह दमे आख़िर रोके से नहीं रुकती है,
रग रग में था घर इसका रग रग से यह खिचती है।
हर बात से भी खुश हूँ हर काम से भी खुश हूँ,
मेरी वही मरज़ी है जो आपकी मरज़ी है।
ज़ोहाद[4] में ज़िक्र इसका मैखारों[5] में याद इसकी,
क्या जानिए क्या दुनिया 'बिस्मिल' को समझती है।

१—संसार। २—दुख पहुँचाना। ३—संसार वाटिका। ४—पवित्र मनुष्य। ५—शराब पीने वाले।

हर घड़ी या आह है या वाह है,
ऐशो ग़म से दिल मेरा आगाह है।
कोई बन्दा देखने वाला तो हो,
हर जगह अल्लाह ही अल्लाह है।
गिर पड़ें मिस्टर कुएं में क्या अजब,
एक मिसे कमसिन की इनको चाह है।
मग़रबी तालीम में क्या ज़िक्र दीं,
देखिए जिसको वही गुमराह है।
दिल में दर्दे दिल ने क्या घर कर लिया,
हज़रते 'बिस्मिल' के लब पर आह है।

❀ ❀ ❀

किसी का ख़त कभी मेरे भी नाम आयेगा,
वो दिन कब आयेगा जिस दिन पयाम आयेगा।
कहा है उसने सरे शाम मुझसे मिलने को,
तड़प रहा हूँ मैं कब वक्ते शाम आयेगा।
यह कह के चल दिया मैं उनके घर से ऐ 'बिस्मिल,
जब आप याद करेंगे ग़ुलाम आयेगा।

❀ ❀ ❀

'फ़ादर' का हुआ नुकसान इस फ़र्ज़ अदाई में,
पूंजी भी गई घर की बेटे की पढ़ाई में।

आयंगे डिनर खाने अंग्रेज़ यहां शब[1] को,
मशग़ूल हूँ मैं दिल से बंगले की सफ़ाई में।
क्या क्या न सितम तोड़े बन्दों ने खुदाई पर,
क्या क्या न खुदाई की योरुप ने खुदाई में।
'बिस्मिल' की नसीहत से मिलजुल के रहें बाहम[2],
अहबाब[3] न उभरेंगे आपस की लड़ाई में।

❀ ❀ ❀

अच्छी कही कि आपका दिल क्यों मलूल[4] है,
एक एक बात पर हमें अब 'डैमफूल' है।
कहता हूँ देख देख के धोखे की टट्टियां,
आँखों में जब नहीं तो यह परदा फ़ुजूल है।
बागे जहां में यों तो हैं लाखों तरह के फूल,
लेकिन हो जिसकी क़द्र वही फूल फूल है।
'बिस्मिल' कोई न हमसे मिलै तो गिला नहीं,
मिलते हैं सब से हम यह हमारा उसूल है।

❀ ❀ ❀

हमारे इन्डिया के लोग क्या टमटम के घोड़े हैं,
कि गेसू उस मिसे लन्दन के इनके हक में कोड़े हैं।
जो अब न शेखो बरहमन अपनी अपनी बाग़ मोड़े हैं,
सबब यह है पुरानी रोशनी के लोग थोड़े हैं।

१—रात। २—साथ। ३—दोस्त। ४—दुखित।

क़दम रखते हैं आगे सबसे फ़ैशन की तरक्की में,
यह हैं कालिज के 'स्टूडेन्ट' या पोलो के घोड़े हैं।
मिला क्या जल्द आसानी से 'आनर' हज़रते 'बिस्मिल'
किसी बंगले पर जाकर हमने बरसों हाथ जोड़े हैं।

❀ ❀ ❀

चैन ऐ गर्दिशे अय्याम[1] मिलेगा कि नहीं,
दिन फिरैंगे कभी आराम मिलेगा कि नहीं।
दिल तो लेते हो मगर मुझसे बताते जाओ,
इसकी क़ीमत मिलैगी दाम मिलेगा कि नहीं।
ख़्वाब में आई नज़र मुझको किसी की आँखें,
सुबह बाज़ार से बादाम मिलेगा कि नहीं।
दस बजे दिन से मरो चार बजे तक 'बिस्मिल',
नौकरी में कभी आराम मिलेगा कि नहीं।

❀ ❀ ❀

वह जानते हैं क्या हमें वह जानते नहीं,
लेकिन हमारी बात कोई मानते नहीं।
योरुप की सैर ने यह दिखाया अजब असर,
अब अपने बाप को भी पहचानते नहीं।
बरसों रही है जिनसे बराबर की रस्मो राह,
वह कह रहे हैं हम तुम्हें पहचानते नहीं।

१—संसार-चक्र।

'बिस्मिल' अगर है और तरक्की की आरज़ू,
बंगलों की ख़ाक किसलिए तुम छानते नहीं।

❀ ❀ ❀

सिवा क्लब के मज़ा ज़िन्दगी का पायें कहां,
हमारे हक़ में यही है बिहिश्त जायें कहां।
चमन में फिरती है घबराई हर तरफ़ बुलबुल,
मचाई आके यह कौओं ने कांय कांय कहां।
मसल यह सच है कि मुल्ला कि दौड़ मसजिद तक,
हमें बस आपका बंगला है और जांय कहां।
अलग है सारे ज़माने से वज़ा 'लन्दन' की,
यहां जो दिल न लगाएं तो लगाएं कहाँ।
फ़लक से करते हों बातें जहाज़ पर चढ़कर,
ज़मीं से और अब ऊंचा तुम्हें उड़ाएं कहां।

❀ ❀ ❀

ऐसी चले वह चाल कि एक एक लड़ गया,
बेटी से बाप, बाप से बेटा बिछुड़ गया।
हैरत से कह रहा था जो अपने को खाकसार[1],
साहब से वह भी हाथ मिला कर अकड़ गया।
वह आये देखने के लिए भी तो आये कब,
बीमारे नामुराद का दम जब उखड़ गया।

१—तुच्छ।

आखिर कोई ख़ता कोई उसका कुसूर है,
'बिस्मिल' से क्यों मिज़ाज तुम्हारा बिगड़ गया।

❀ ❀ ❀

मुंह से निकले मेरी फ़रियाद नए राज़ के साथ,
लुत्फ़ तो सोज़[1] का जब है कि रहे साज़ के साथ।
लय कोई उठती है दुनिया में तो चिल्लाते हैं सब,
लोग आवाज़ मिलाते हैं नए साज़ के साथ।
देखें क्या हश्र हो दोनों का जनाबे 'बिस्मिल',
गिद को भी है यह तमन्ना कि रहूं बाज़ के साथ।

❀ ❀ ❀

शराबे बेख़ुदी से बेहतर बेहोश रहते हैं,
यह बायस है कमेटी में जो हम ख़ामोश रहते हैं।
ज़माना रंग गिरगिट की तरह क्या क्या बदलता है,
जहां रहते थे शेर अब उस जगह खरगोश रहते हैं।
उड़ाया हज़रते 'बिस्मिल' ने क्या तसवीर का चरबा,
कि सुन लेते हैं सब की और यह ख़ामोश रहते हैं।

❀ ❀ ❀

यह क्या ख्याल है कुछ भी न हम ख्याल करें,
ज़रूरत इसकी है खुद अपनी देखभाल करें।
निगाहें लुत्फ़ तुम्हारी इधर नहीं न सही,
ज़रा सी बात का हम किसलिए मलाल करें।

१—जलना।

मोहब्बत एक तरफ़ से कभी नहीं होती,
जो वह ख़्याल करें कुछ तो हम ख़्याल करें।
यह हमसे हो नहीं सकता जहां में ऐ 'बिस्मिल',
किसी के सामने अपने लिए सवाल करें।

❀ ❀ ❀

कोई डिनर दूँ उनके आनर में,
ध्यान 'सर' का है बेतरह सर में।
जब से फ़ैशन समा गया सर में,
माल अपना है गैर के घर में।
उसको इन्सान हम नहीं कहते,
जो पड़ा लीडरी के चक्कर में।
कर रहा हूं बहुत खिताब की क़दर,
छप गया 'पानियर' में 'लीडर' में।
शायरी क्या करें हम ऐ 'बिस्मिल',
दिल तो है घर में पेट दफ़्तर में।

❀ ❀ ❀

लाट साहब से मिलो इज्ज़त मिलै कुर्सी मिलै,
'पानियर' कहता है खिंचना इनसे उस्तादी नहीं।
देखते ही देखते बदला है क्या दुनिया का रंग,
अब कहीं राहत नहीं, इशरत[1] नहीं, शादी नहीं।

१—आराम।

कजरवी[1] फैली ख़ुदाई भर में इंगलिश सूट के,
चाल भी सीधी नहीं पोशाक भी सादी नहीं।
क्या पढ़ें मिलते नहीं पढ़ने को सच्चे वाक़यात,
क्या लिखें अख़बार में लिखने की आज़ादी नहीं।
थी दिखाने के लिए वह चार दिन की चांदनी,
तन पर अब गाढ़ा नहीं, खद्दर नहीं, खादी नहीं।
हज़रते 'बिस्मिल' हुए शैरो सखुन से बाख़बर,
लेकिन इसपर भी उन्हें दावाए उस्तादी नहीं।

❀ ❀ ❀

किताब उनकी ख़ुशामद में जो हम तसनीफ़[2] करते हैं,
वह ख़ुश होते हैं, ख़ुश होकर बड़ी तारीफ़ करते हैं।
हम उनके वास्ते तक़लीफ़ उठाते हैं बहुत लेकिन,
हमारे वास्ते किस रोज़ वह तक़लीफ़ करते हैं।
यह सुनता हूँ तड़प जाते हैं उसको लोग सुन सुनकर,
कलामे हज़रते 'बिस्मिल' की सब तारीफ़ करते हैं।

❀ ❀ ❀

दुनिया यह जानती है दुनिया में जी रहे हैं,
हम पी रहे हैं पानी वह चाय पी रहे हैं।
लाखों तरह के किस्से, लाखों तरह के झगड़े,
यों लोग जी रहे हैं तो खाक़ जी रहे हैं।

१—टेढ़ापन। २—रचना।

कहते हैं किसको धोती पायजामा नाम किसका,
पतलून फट गया है पतलून सी रहे हैं।
मौत आए हमको 'बिस्मिल' ग़म से तो मुखलसी[1] हो,
यह भी है कोई जीना बेकार जी रहे हैं।

❀ ❀ ❀

कुछ इसका ग़म नहीं आज़ारो ग़म जो सहते हैं,
हम इसमें .खुश हैं कि वह 'डैम फूल' कहते हैं।
मिलै न और कोई शय तो लीडरी मिल जाय,
इसी के फेर में दिन रात लोग रहते हैं।
यही तो बात निराली है इसमें ऐ 'बिस्मिल',
जो बात कहने की होती है सौ में कहते हैं।

❀ ❀ ❀

चलते फिरते दूर अपनी मुफ़लिसी कर लीजिए,
कोई डिग्री लेके फ़ौरन नोकरी कर लीजिए।
चार दिन की ज़िन्दगी में आपको है अख्तियार,
दोस्ती कर लीजिए या दुश्मनी कर लीजिए।
क़स्द होता है यही हालाते आलम देखकर,
खाके कुछ सो जाइए अब खुदकुशी कर लोजिए।
खल्क़ में बेकार रहने का नतीजा कुछ नहीं।
लीडरी का है ज़माना लीडरी कर लीजिये।

१—छुटकारा।

कोर्ट, स्टेशन, क्लब, सरकश की है तख़सीस क्या,
जिस जगह साहब मिलै बस बन्दगी कर लीजिये।
हज़रते 'बिस्मिल न होंगी दोनों बातें एक साथ,
नौकरी कर लीजिए या शायरी कर लीजिए।

❀ ❀ ❀

नज़र है मेरी तरफ़ आज एक खुदाई की,
सबब यह है कि हूँ तसबीर जग हँसाई की।
हमें उम्मीद हो दुनिया में क्या सफ़ाई की,
जगह जगह से जो ख़बरें मिलीं लड़ाई की।
तिलक लगाए हूँ पीता हूँ रोज़ गंगाजल,
अलामतें हैं यही मेरी पारसाई[1] की।
पराए ऐब पर अक्सर निगाह जाती है,
किसी को लाज नहीं अपनी जग हँसाई की।
लगाए फिरते हैं पण्डित जी हैट अब सर पर,
नए ज़माने में यह मत है पारसाई की।

❀ ❀ ❀

सब को ताख़ीर[2] से तकलीफ़ है हर माह जनाब,
पहली तारीख़ को मिलती नहीं तन्ख़्वाह जनाब।
मिल गए ख़ूबिए किस्मत से सरे राह जनाब,
बाद मुद्दत के मुलाकात हुई वाह जनाब।

१—पवित्रता। २—देर।

वह नहीं देखते 'बिस्मिल' यह कहे जाते हैं,
मेरी जानिब भी नज़र कीजिए लिल्लाह[1] जनाब।

❀ ❀ ❀

ग़लत हों या हों सच ख़बरें गरज़ इससे नहीं हमको,
जो उनकी सी कहें वही अख़बार देखेंगे।
दिखाने के लिए आया हूँ मैं हाले दिले मुज़्तर[2],
इधर आँखें उठाकर आप कब सरकार देखेंगे,
कलामे हज़रते 'अकबर' का धोखा होगा ऐ 'बिस्मिल',
किसी अख़बार में जब वह मेरे अशआर देखेंगे।

❀ ❀ ❀

यह पूछो हमसे क्या मिलता है क्या मिलता नहीं,
और सब मिलता है कालिज में ख़ुदा मिलता नहीं।
सोचते हैं मर के हम हासिल करें ग़म के नजात,
ज़िन्दगी का लुत्फ़ जीने का मज़ा मिलता नहीं।
लुत्फ़ उठाने के लिए चेले भी होते हैं शरीक,
रह के मन्दिर में गुरू जो तुमको क्या मिलता नहीं।
दिल को आइना बनाओ तो बर आए आरज़ू,
दो जिला[3] इसमें कि बे इसके ख़ुदा मिलता नहीं।
उनसे जो मिलता है ऐ 'बिस्मिल' वह पाता है ख़िताब,
नक़्द तो लेकिन किसी को एक टका मिलता नहीं।

१—ख़ुदा के लिए। २—बेचैन। ३—कलई करना।

जिस शाम को, जिस सुबह को आराम बहुत है,
वह सुबह बहुत है, वह मुझे शाम बहुत है।
साहब से जो मिलने गया बंगले पे तो बोले,
मैं मिल नहीं सकता हूँ मुझे काम बहुत है।
गिरजा की तरफ़ जाऊँ करूँ सैर कलब की,
चक्कर मुझे ऐ गर्दिशे अय्याम[1] बहुत है।
कहने लगे 'बिस्मिल' वह मेरे नाम को सुन कर,
यह नाम तो ज़माने में बदनाम बहुत है।

❀ ❀ ❀

निकल के बुदकदे से बस यह काम करते हैं,
क्लब में बैठकर हम राम राम करते हैं।
मिटाही देंगी उन्हें गर्दिशे ज़माने को,
वह क्या समझ के ज़माने में नाम करते हैं।
ख़ुदा की शान है मन्दिर में हज़रते 'बिस्मिल',
अदब के साथ बुतों को सलाम करते हैं।

❀ ❀ ❀

कालिज उन्हें क्या पाले कि वे पल नहीं सकते,
जो आपके साँचों में कभी ढल नहीं सकते।
मिलती है जगह मिसल शजर[2] ऐसे चमन में,
हम फूल नहीं सकते जहाँ फल नहीं सकते।

१—संसार चक्र। २—पेड़।

बेसूद[1] है फिर उनको तरक्की की तमन्ना,
जो आपके कहने में कभी चल नहीं सकते।
मीलों का सफर जिनको न दुश्वार था 'बिस्मिल',
दो गाम[2] भी पैदल वही अब चल नहीं सकते।

❀ ❀ ❀

इन्डियन होने से यह अपनी ग़िज़ा का हाल है,
.खुश्क रोटी है डिनर में और पतली दाल है।
पास उनके ज़र है, दौलत है, बहुत कुछ माल है,
वह समझते हैं कि दुनिया ऐसी ही खुशहाल है।
जोश में स्पीच भी दी और चन्दा भी लिया,
कुछ समझते भी हो तुम यह लीडरी की चाल है।
जो गुजरती है उसे दम पर गुजर जाने भी दो,
यह न पूछो हज़रते 'बिस्मिल' का कैसा हाल है।

❀ ❀ ❀

गिर पड़े हम नहीं अब कोई उठाने वाला,
काम आफ़त में भला अब कौन है आने वाला।
कहने सुनने के लिए यों तो हैं लाखों रहबर[3],
ठीक रास्ता भी नहीं कोई बताने वाला।
मर गए हम तो हुआ हाल यह मर जाने पर,
कोई मिलता ही नहीं लाश उठाने वाला।

१—बेफ़ायदा। २—क़दम। ३—पथ दर्शक।

चैन लेने नहीं देता कभी गर्दू[1] हो कि बख्त[2],
जिसको देखो वही है हमको सताने वाला।
ख़ाक में मुझको मिलाते हैं अइज़्ज़ा[3] 'बिस्मिल',
लेकिन उनसे नहीं कोई भी मिलाने वाला।

❀ ❀ ❀

दमें आखिर हम अपनी ज़िन्दगी का राज क्या समझे,
यह कह कर चल दिये दुनिया से दुनिया से खुदा समझे।
.खुश इसमें हैं कि बंगले पर शिकायत की हरिफ़ों[4] की,
मगर उनको नहीं मालूम साहब दिल में क्या समझे।
नए .फैशन के बन्दे हैं, नए फैशन के पुतले हैं,
.खुदा की शान तो देखो वह साहब को .खुदा समझे।
हम अपने दोस्तों से बात क्या कहते भलाई की,
हमेशा हज़रते 'बिस्मिल' हमें वह तो बुरा समझे।

❀ ❀ ❀

न उनको काम लेना है, न मुझको काम लेना है,
.खुदाई भर का अपने सर पे यह इल्ज़ाम लेना है।
तरक्की की हवस में यह ज़बां से काम लेना है,
बस उठते बैठते साहब का हरदम नाम लेना है।
पसन्द अशआर अब मेरे अगर आते नहीं 'बिस्मिल',
न आएँ क्या किसी से कुछ मुझे इनाम लेना है।

१—आकाश। २—भाग्य। ३—सम्बन्धी। ४—दुश्मन।

अब भी एक एक के लब पर है फ़िसाना मेरा,
क्या ज़माना था ज़माने में ज़माना मेरा ।
कोई गमख्वार नहीं, कोई मददगार नहीं,
कौन सुनता है मुसीबत में फ़िसाना मेरा ।
याद आते हैं वह अय्यामे गुज़श्ता[1] 'बिस्मिल',
हाय क्या वक्त़ था कैसा था ज़माना मेरा ।

❀ ❀ ❀

कभी वह हाले दिले नासुबूर[2] देखेंगे,
मुझे उम्मीद है बेशक ज़रूर देखेंगे ।
हरम[3] हो दैर[4] हो इनका तो मर्तबा है बड़ा,
निगाह होगी तो कालिज में नूर देखेंगे ।
जो है यह शक्ल तो जन्नत की आरजू है फ़ुजूल,
क़ब्र में हम भी तमाशाये हूर देखेंगे ।
निगाहे लुत्फ़ से मेरी तरफ़ भी ऐ 'बिस्मिल',
ज़रूर देखेंगे वह बिल ज़रूर देखेंगे ।

❀ ❀ ❀

जिन्हें ज़िद है मरातिब ज़िन्दगी के पा नहीं सकते,
उन्हें राहे तरक्क़ी पर कभी हम ला नहीं सकते ।
वह कहते हैं तेरे फ़िकरों में हरगिज़ आ नहीं सकते,
समझ ऐसी है उनकी हम उन्हें समझा नहीं सकते ।

१—भूतकाल । २—असन्तोष । ३—काबा । ४—मन्दिर ।

तुम्हारी और कुछ लय है, हमारी और कुछ लय है,
तुम्हारे साथ महफ़िल में कभी हम गा नहीं सकते।
असर कुछ भी ज़माने की हवाएं कर नहीं सकतीं,
हमारे दाग़ दिल वह गुल हैं जो मुरझा नहीं सकते।
बिगड़कर इस तरह कहते हैं पण्डित जी भी ऐ 'बिस्मिल',
कि हम गिरजा से मन्दिर की तरफ़ अब आ नहीं सकते।

❀ ❀ ❀

हर तरफ जंग आज़माई ख़ूब है,
लफ़्ज़ो-मानी पर लड़ाई ख़ूब है।
ख़ूब है जंग आजमाई ख़ूब है,
लीडरों की हाथापाई ख़ूब है।
लाट साहब से भी मिल लेता हूँ मैं,
हर जगह मेरी रसाई ख़ूब है।
बाद लड़ने के वह कहते हैं मिलो,
उनके भी दिल की सफ़ाई ख़ूब है।
वोट मिल जाय ख़ुदा की राह पर,
शहर भर की यह गदाई[1] ख़ूब है।
ख़ल्क़ होकर क़ायले क़ुदरत नहीं,
यह ख़ुदा की भी ख़ुदाई ख़ूब है।

१—भीख मांगना।

हो रही है आजकल फ़ैशन में ख़र्च,
बाप दादा की कमाई ख़ूब है।
हो गया 'बिस्मिल' का सर तन से अलग,
तेगे क़ातिल में सफ़ाई ख़ूब है।

❀ ❀ ❀

रंजोग़म वह हजार देते हैं,
भूत सर का उतार देते हैं।
तेरी उलफ़त में मर गया कोई,
जान यों जां निसार देते हैं।
कोई गाहक नज़र नहीं आता,
नगदे दिल हम उधार देते हैं।
बात कुछ भी न हो मगर 'बिस्मिल',
लाट साहब को तार देते हैं।

❀ ❀ ❀

लुत्फ़ और इसके अलावा क्या सितमरानी[1] में है,
आपके होते हुए दुनिया परेशानी में है।
हाकिमों पर क्या हो लैला की सिफ़ारिश का असर,
क़ैस दीवाने का 'केस' इस वक्त दिवानी में है।
'डाक्टर झा' ने कही 'बिस्मिल' से यह क्या खूब बात,
लीडरी के वास्ते दुनिया परेशानी में है।

१—अत्याचार करना।

कुछ भी नहीं होता जो सफ़ाई नहीं होती,
क़ौमी किसी कालिज में पढ़ाई नहीं होती।
ख़ुश करने की तदबीर वह करते तो हैं लेकिन,
ख़ुश उससे कहीं सारी ख़ुदाई नहीं होती।
हम मानते हैं साफ़ हुई जाती है दुनिया,
इस पर भी तबीयत की सफ़ाई नहीं होती।
आसान है अफ़लाक[1] पे गो इनका पहुँचना,
बंगले पे तो 'बिस्मिल' की रसाई नहीं होती।

❀ ❀ ❀

हमने माना हर तरफ़ एक धूम है,
क्या ख़ुशी दिल को हो, दिल मग़मूम[2] है।
इस तअल्ली[3] का नतीजा कुछ नहीं,
आप जैसे हैं हमें मालूम है।
सच कहा फ़ैशन नहीं तो कुछ नहीं,
आजकल आलम में इसकी धूम है।
आपके बर्त्ताव अच्छे हैं बहुत,
हज़रते 'बिस्मिल' को यह मालूम है।

❀ ❀ ❀

फ़ैशन के साथ चाहिये यों ज़िन्दगी का लुत्फ़,
मिस भी कोई ज़रूर हो मिस्टर के सामने।

१—आकाश। २—दुखी। ३—डींग की लेना।

तहज़ीबे मगरबी में कहां वह लिहाज़ो शर्म,
बीबी से बात करते हैं 'फ़ादर' के सामने।
कब तक जगह न पाएँगे हम इस उम्मीद पर,
धूनी रमाए बैठे हैं दफ़्तर के सामने।
ऐसा न हो कि छाप दें अख़बार में कहीं,
सरगोशियां[1] करो न एडीटर के सामने।
बर्बादियों का इससे नहीं बढ़कर अब सबूत,
कूड़ा पड़ा हुआ है मेरे घर के सामने,

❀ ❀ ❀

हमको मालूम है यह हाल है होने वाला,
बाद मरने के नहीं कोई है रोने वाला।
हर घड़ी सर पै वही बारे अलम रहता है,
कोई मुझसा न मिला बोझ का ढोने वाला।
कोई अहबाब से कह दे कि परीशां न रहें,
बस वह होगा जो है तकदीर में होने वाला।
उनकी ग़फ़लत पे हँसें क्यों न ज़माने वाले,
जो बुरे हाल पर अपने नहीं रोने वाला।
देखकर मेरा तड़पना कोई बोला 'बिस्मिल',
ख़त्म यह आज तमाशा नहीं होने वाला।

१—कानाफूसी।

दिल में जो कुछ हो हमारे दुश्मने जानी करें,
चाहिये हमको न हम फ़िकरे तन आसानी करें।
सारी दुनिया जानती है ख़ून हो दिल में नहीं,
किस तरह हम आपके तीरों को मेहमानी करें।
दोस्तो कुछ खबर है भी क़ौम मुरदा हो गई,
मिलके हम तुम आओ इसकी मर्सियाख्वानी[1] करें।
सोचते हैं कूचए क़ातिल में लुट जाने के बाद।
फ़ौजदारी हम करें 'बिस्मिल' कि दीवानी करें।

❀ ❀ ❀

बनता था खेल अपना उसको बिगाड़ डाला,
हाकिम का हुक्म हमने बेकार फाड़ डाला।
सीधे हुए बिलआख़िर इससे अकड़ने वाले,
आकर क़ज़ा ने सबको कैसा पछाड़ डाला।
शादाब[2] हो कहां से फूले फलै वह क्योंकर,
जिस पेड़ को किसी ने जड़ से उखाड़ डाला।
'बिस्मिल' समझ लो दिल में 'वारंट' आएगा अब,
तुमने यह क्या समझ कर नोटिस को फाड़ डाला।

❀ ❀ ❀

आरज़ू जीने की पैदा दिल में करता ही नहीं,
चाहता हूँ जल्द मैं मर जाऊँ मरता ही नहीं।

१—मातम करना। २—हरा-भरा।

हर घड़ी रहता हूँ बेचैन बिजली की तरह,
दिल किसी सूरत से पहलू में ठहरता ही नहीं।
वो करें किस बात का ग़म रोज़ यह होती है बात,
मर गया मैं कोई क्या दुनिया में मरता ही नहीं।
मैं तो बे सोचे हुए समझे हुए जांचे हुए,
काम ऐ 'बिस्मिल' कोई दुनिया में करता ही नहीं।

❀ ❀ ❀

हर वक्त नई फ़िक्रें हर दम नए धन्धे हैं,
सच हमसे अगर पूछो हम पेट के बन्दे हैं।
तदबीर से क्या हासिल तदबीर से क्या होगा,
जिनसे न छूटै कोई योरुप के वह फन्दे हैं।
साहब जो हुए बरहम यह कह के किया राज़ी,
हम आपके ख़ादिम हैं, हम आपके बन्दे हैं।
वह खेल समझते हैं 'बिस्मिल' का तड़पना भी,
कहते हैं तड़पने दो दुनिया के यह धन्धे हैं।

❀ ❀ ❀

तेरी तो और रीत मेरी और रीत है,
एक एक की जुबां पे यही बातचीत है।
दिल से जो तुम मिलो तो मिलें क्यों न दिल से हम,
दुनिया की रीति है ये जमाने की रीत है।
'बिस्मिल' वह सुनकर आज हैं बिस्मिल मेरी तरह,
डूब हुआ असर में मोहब्बत का गीत है।

दिलरुबा एक एक गोली है,
किसने अपनी ज़बान खोली है।
अब निकलता है काम मोटर से,
न है वह पालकी न डोली है।
कितनी मगरूर है तेरी तसबीर,
यह न बोलेंगी यह न बोली है।
ज़ोर से क्या चलीं हवाएं चमन,
चाक कलियों को चोली चोली है।
फाग गाते हैं हज़रते 'बिस्मिल',
हर महीने में इनकी होली है।

❀ ❀ ❀

तुमने ऐसे वक्त, ऐसी बेसुरी क्यों तान ली,
वे दिली के साथ गाते हो सदा[1] पहचान ली।
जान जाने की शिकायत मैं करूँ तो क्या करूँ,
जब मुझे यह भी नहीं मालूम किसने जान ली।
.खुद ही देता है पुजारी शौक़ से परशाद अब,
उसके मन्दिर में भजन गाने की मैंने ठान ली।
आ गई सर पर क़यामत हो गए बेताब सब,
चौंक उठी महफ़िल की महफ़िल तुमने ऐसी तान ली।
हज़रते 'बिस्मिल' हुआ कब हमको तनहाई का शौक़,
हमने दुनिया भर की खाक़ अच्छी तरह से छान ली।

१—आवाज़।

जौहरी परखे ज़रा जौहर जवाहरलाल के

(१)

आज है बाग़े-वतन में फिर बहार आई हुई,
आज मुज़दा[1] है मसर्रत[2] का सबा लाई हुई।
आज गर्दूं[3] पर निराली है घटा छाई हुई,
आज पड़ती है नज़र बेतौर ललचाई हुई।
गै़रते अकसीर रुतबे में चमन की धूल है।
नाश्गुफ़्ता[4] जो कली थी वह भी खिलकर फूल है।

(२)

मयकशों की आरज़ू है दौर चलना चाहिए,
वक्त आ पहुँचा सम्हलने का सम्हलना चाहिए।
ख़ून दिल को जोश खा खाकर उबलना चाहिए,
ऐसे में अर्मां न क्यों निकले निकलना चाहिए।
पीने वाले कह रहे हैं यह है पीने की घड़ी,
देर ऐ साक़ी न कर है मरने जीने की घड़ी।

१—ख़बर। २—आनन्द। ३—आसमान। ४—न खिलने वाली।

(३)

क्यों तवक्कुफ़[1] इस क़दर पीने पिलाने के लिए,
कह दे मुतरिब[2] से कि आए जल्द गाने के लिए।
मुन्तज़िर[3] हैं अहले महफ़िल लुत्फ़ पाने के लिए,
हो इशारा आग पानी में लगाने के लिए।
कौन कहता है मुझे डर डर के पैमाना मिले,
जी मेरा भर जाय वोह भर भर के पैमाना मिले।

(४)

वह मए उल्फ़त कि बेहोशों को जिससे होश हो,
कोई साग़रनोश हो तो कोई दरियानोश हो।
देखकर वह मस्तियाँ सारा जहाँ ख़ामोश हो,
इस क़दर बढ़ जाय दिल रग रग से पैदा जोश हो।
क़हर ढ़ाएँगे ग़ज़ब ढ़ाएंगे आफ़त ढ़ाएँगे,
सुर्ख डोरे सुर्ख आँखों के क़यामत ढ़ाएँगे।

(५)

एक अनोखा रिन्द ऐसा भी भरी महफिल में है,
जिसकी हसरत जिसकी ख्वाहिश हर किसी के दिल में है।
सहल मुश्किल हो गई मुश्किल कहाँ मुश्किल में है,
क़ाफ़िले का क़ाफ़िला अब दामने मंज़िल में है।
नाखुदाई के लिए हाजत रवाई के लिए,
रहनुमा अच्छा मिला है रहनुमाई के लिए।

१–सोचाविचारी। २–गाने वाले को। ३–इन्तिज़ार।

(६)

क्यों किसी को माइले[1] फ़रियाद होना चाहिए,
किस बिना पर खल्क[2] को बर्बाद होना चाहिए।
क़ैदे ग़म से हर तरह आज़ाद होना चाहिए,
शाद होना चाहिए दिल शाद होना चाहिए।
रात दिन शामो शहर तनवीरे आज़ादी रहे,
सामने नज़रों के बस तसवीरे[3] आज़ादी रहे।

(७)

सादगी से सादगी के साथ नाता जोड़ कर,
ऐशो इशरत से हमेशा के लिए मुँह मोड़कर।
सारी दुनियाँ छोड़ कर सारा ज़माना छोड़ कर,
चैन अगर लेगा तो जंज़ीरे ग़ुलामी तोड़ कर।
इन्क़लावाते[4] जहां सब कह रहे हैं हाल के,
जौहरी परखे ज़रा जौहर जवाहर लाल के।

(८)

इस की दुनियां और ही है इसका आलम और है,
इसका दरमां[5] और है और इसका मरहम और है।
जो सिमिट जाता है लहराकर वह परचम[6] और है,
सर कहीं खम हो नहीं सकता यह दम खम और है।
कद्रो कीमत में खुदा रक्खे दुरेनायाब[7] है,
अबरू "मोती" की है क्या खूब आवोताब है।

१—आमादा। २—जनता। ३—ज्योति। ४—परिवर्तन। ५—दवा।
६—झंडा। ७—अनमोल मोती।

(९)

धुन का पक्का है इसे सौदा है अपने काम का,
नाम हो दुनियां में यह तालिब नहीं है नाम का ।
सामना हरवक्त उठते बैठते आलाम का,
मशग़ला कब ऐश का कब तज़्करा[1] आराम का।
खिदमते मुल्की को सौ जो से भिखारी बन गया,
यानी आज़ादी के मन्दिर का पुजारी बन गया।

(१०)

हर तरफ़ दुनियां में है शोहरा जवाहर लाल का,
काम जो होता है वह अच्छा जवाहरलाल का ।
बांकापन एक एक ने देखा जवाहर लाल का,
मानते हैं अहले दिल लोहा जवाहर लाल का ।
ज़ोर की चलती हुई आंधी जवाहर लाल है,
दर हक़ीक़त पैरवे गान्धी जवाहर लाल है ।

(११)

कोई देखे तो वतन पर किस क़दर कुर्बान है,
चलते फिरते इसको आज़ादी ही का अरमान है ।
सच कहा 'बिस्मिल' ने प्यारी आन प्यारी शान है,
समझो वो है देवता देखो तो यह इंसान है ।
क्या जवाहर लाल है सुनलो ज़बाने हाल से,
दो क़दम हर काम में आगे है मोती लाल से।

१—चर्चा ।

जो ये कहते हैं कि अगले साल देखा जायगा,
उनसे क्या हिंदोस्तां का हाल देखा जायगा।
ये बता दें लेने वाले सब विदेशी माल के;
किन निगाहों से स्वदेशी माल देखा जायगा।
उम्र भर का वाकया क्या होगा "आनर लिस्ट" में,
साल भर का नामए आमाल देखा जायगा।
इमतिहां में होगए हम "फ़ेल" इसका ग़म नहीं,
रह गए ज़िन्दा तो अगले साल देखा जायगा।
है यही आलम तड़पने का तो यह उम्मीद है,
हजरते 'बिस्मिल' तुम्हारा हाल देखा जायगा।

❀ ❀ ❀

बर्सात में हमने भी थोड़ी सी जो मय[1] पी है,
ये बात पुरानी है क्या बात नई की है।
ये राज़ निराला है ये बात अनोखी है,
बुतखाना बने काबा अल्लाह की मर्ज़ी है।
हर शख्श नहीं वाकिफ़ मयख़ानये उल्फ़त से,
वो इसको बताएगा जिसने कभी कुछ पी है।
अब रुह दमे आखिर रोके से नहीं रुकती,
रग-रग में था घर इसका रग रग से ये खिचती है।
हर बात से भी खुश हूँ हर काम से भी खुश हूँ,

१-मदिरा।

मेरी वही मर्ज़ी है जो आपकी मर्ज़ी है।
दुनिया हुई जब कायल तो .खुद भी हुए कायल,
गान्धी को वो कहते हैं "गान्धी" नहीं आंधी है।
ज़ोहाद[1] में जिक्र इसका मयख्वारों[2] में याद इसको,
क्या जानिए क्या दुनिया 'बिस्मिल' को समझती है।

❀ ❀ ❀

कारोबार अपना बना खल्क में बेकार न बन,
इसका मतलब ये है गिरती हुई दीवार न बन।
झेल आज़ार मगर दरपए आज़ार न बन,
देख, चलती हुई फिरती हुई तलवार न बन।
है मुनासिब कि तमाशा को तमाशा ही समझ,
रह के दुनिया में भी दुनिया का ख़रीदार न बन।
कह गईं गुलशने[3] आलम की हवाएँ मुझसे,
फूल बनना हो तो बन फूलों में तू खार न बन।
नफा कम और खिसारा है ज़माने में बहुत,
मान कहना सबबे गरमिये बाज़ार न बन।
हमने माना वो ख़तापोश[4] बहुत है 'बिस्मिल',
फिर भी है ख़ैर इसीमें कि गुनहगार न बन।

❀ ❀ ❀

हो गया उनकी तरफ गांव का पटवारी भी,
लीजिए मिल गई मिट्टी में ज़मींदारी भी।

१—सदाचारियों। २—शराबी। ३—संसार बाटिका। ४—क्षमा करने वाला।

हर घड़ी की नहीं अच्छी यह दिल आज़ारी[1] भी,
रोग हो जाती है बढ़ती हुई बीमारी भी।
जिस कदर बढ़ते गए डाक्टरो वैदो हकीम,
रोज़ पैदा हुई उतनी नई बीमारी भी।
पढ़ कर स्कूल में तालीम को हासिल क्या है,
मुफलिसी साथ लिए फिरती है बेकारी भी।
पूछगछ जब नहीं सरकार में तो क्या हासिल,
कहने सुनने को अगर तुम बने दरबारी भी।
देख बिस्मिल न हो दम भर के लिए ऐ "बिस्मिल",
मौत कहती है कि आएगी तेरी बारी भी।

❀ ❀ ❀

आह में है मस्त कोई और कोई वाह में,
फ़र्क़ दो लफ्ज़ों से ज़ाहिर है गदाओ[2] शाह[3] में।
है जहाँ सब और भी चीज़ें नुमाइश में वहाँ,
शायरी भी आगई 'बिस्मिल' नुमाइशगाह में।

❀ ❀ ❀

अपनी कज़ा से खिलकत[4] आलम में मर रही है,
दुनियाँ किसी को नाहक बदनाम कर रही है।
मग़रिब के उल्टे सीधे सांचों ने कहर ढाया,
हम ये समझ रहे थे दुनियाँ संवर रही है।

१—धार्मिक चर्चा। २—दिल दुखाना। ३—फकीर। ४—बादशाह।
५—जनता।

दुनिया को देख कर भी दुनिया को कुछ न देखा,
इस पर नज़र रही है उस पर नज़र रही है।
हर दम नया शिकन्जा हर वक्त खास बन्दिश,
क़ानून के सबब से मखलूक़[1] डर रही है।
बागे जहाँ हमेशा एक रंग पर रहा कब,
जो शाखे गुल थी सूखी फिर वो निखर रही है।
मिलकर किसी से लड़ना, लड़कर किसी से मिलना,
महफ़िल में वह नज़र भी क्या काम कर रही है।
ऐसा दिया थपेड़ा मुश्किल हुआ ठहरना,
मौजों ने जब ये देखा कश्ती उभड़ रही है।
झगड़ा अज़ल[2] के दिन से है मौतो ज़िन्दगी का,
इल्ज़ाम क्यों कज़ा पर मखलूक़ धर रही है।
क्यों कर न किस्सऐगम 'बिस्मिल' उन्हें सुनाऊँ,
वह पूछते हैं मुझसे कैसी गुज़र रही है।

❀ ❀ ❀

उन्हें खराब किया उनकी खुद पसन्दी ने,
कहीं का भी नहीं रक्खा गरोहबन्दी ने।

❀ ❀ ❀

गम उठाने का नहीं चारा हमें,
मग़रबी तहज़ीब ने मारा हमें।

१—जनता। २—आदि।

यह काम करूँगा कभी वो काम करूँगा,
हो जाऊँगा मेम्बर तो बड़ा नाम करूँगा।

❀ ❀ ❀

चेस्टर न दीजिए न मुझे कोट दीजिए,
तालिब हूं सिर्फ वोट का बस वोट दीजिए।

❀ ❀ ❀

मर जाये क्यों न क़ैद में जीना फिजूल है,
आजादिए वतन के लिए ये कबूल है।

❀ ❀ ❀

कुदरत से देखता हूँ खुशी गम के साथ है,
होली यही सबब है मुहर्रम के साथ है।

❀ ❀ ❀

दिले नाशाद हो जाता है क्या क्या शाद होली में,
कि जिस दम इसको आजाती है तेरी याद होली में।
गले मिल मिल के अपने दोस्तों से हज़रते "बिस्मिल",
बनाया हमने "काशी" को "इलाहाबाद" होली में।

❀ ❀ ❀

क़दम न राहे तरक्की पे यों धरेंगे आप,
मिनिस्टरी भी मिलेगी तो क्या करेंगे आप।

❀ ❀ ❀

परशाद के बदले में जो बिस्कुट मिले 'बिस्मिल',
तो हम भी जरूर आएँ बरहमन की कथा में।

समझ रहे हैं कि अच्छे हैं सबसे बेहतर हैं,
हम अपनी क़ौम के रहबर हैं और लीडर हैं।
वक़ार[1] इससे सिवा क्या मिलेगा ऐ 'बिस्मिल',
ख़ुदा के फ़ज़्ल से म्यूनीस्पिल कमिश्नर हैं।

❀ ❀ ❀

राज़ क्या कुर्सी में है, क्या भेद है स्टूल में,
पढ़ते हैं हर ज़ात के बच्चे तो अब स्कूल में।

❀ ❀ ❀

आप कालिज में जो पाले जायँगे,
और ही सांचे में ढाले जायगें।
मेरे घर में एक भी झंझी नहीं,
आप आएँगे तो क्या ले जायँगें।

❀ ❀ ❀

किसी बंगले पे गमले की चुनो घास,
हुए तो क्या हुए उर्दू मिडिल पास।
हवा कालिज की खाक़ आए हमें रास[2],
नज़र के सामने है यास[3] ही यास।
पशेमा[4] होके कहते थे यह शिवदास,
ज़माने में नहीं उल्फ़त की बू बास।
सुनो ये हज़रते "बिस्मिल" की बकवास,
कि अब कान्स्टिबिल होंगे एम० ए० पास।

१—सम्मान। २—मुआफ़िक। ३—निराशा। ४—लज्जित।

बशर[1] नहीं वो फ़रिश्ता है हज़रते "बिस्मिल",
जो दोस्ती करे दुनिया में दुश्मनों के साथ।

❀ ❀ ❀

"पानियर" लखनऊ में जाके भटकता है बहुत,
कह दो लीडर से कि छापे ये ख़बर होली में।
ख़त में लिक्खा है किसी मिस ने जनावे "बिस्मिल",
खाइएगा मेरे घर आप डिनर होली में।

❀ ❀ ❀

मौका होके बेमौका दबकर नहीं रहते हैं,
कहने की जो बातें हैं वो सामने कहते हैं।
"बिस्मिल" की न पूछो तुम इनका है अजब आलम,
हर रंग में पाओगे, हर रंग में रहते हैं।

❀ ❀ ❀

उड़ गया जाता रहा कब का असर,
है कहां कालिज में मज़हब का असर।

❀ ❀ ❀

बरहमन क्यों मेरी नज़रों से गिरे जाते हैं,
ये सबब है कि वो मंदिर से फिरे जाते हैं।
है सितम फिर भी तो आखे नहीं खुलती "बिस्मिल",
हम जमाने की निगाहों से गिरे जाते हैं।

१–मनुष्य।

बम्बई की शैर से "बिस्मिल" का दिल क्या शाद है,
ताज होटल और चौपाटी अभी तक याद है।

❀ ❀ ❀

बाद को मांगिए फिर दीन की ईमान की खैर,
पहले इस दौर में लाजिम है मगर जान की खैर।
गत बुरी बन गई सुन सुन के पियानों की गतें,
अब मेरे दिल की न है खैर न अब जान की खैर।
साफ गोई कभी हो जायगी वजहे जब्ती,
नजर आती नहीं "बिस्मिल" तेरे दीवान[1] की खैर।

❀ ❀ ❀

किसी का ख़त कभी मेरे भी नाम आएगा,
वो दिन कब आएगा जिस दिन पयाम आएगा।
ये क्या ख़बर थी कि दिल भी रहे मुहब्बत में,
न मेरे काम न तेरे ही काम आएगा।
ये कह के चल दिया मैं उनके घर से ऐ "बिस्मिल",
जब आप याद करेंगे ग़ुलाम आएगा।

❀ ❀ ❀

हाथ मलता है ये कह कह के जमाना कैसा,
जब नहीं ऐश तो इशरत का तराना कैसा।

१–उर्दू कविता का संग्रह जो जज्बाते बिस्मिल के नाम से इण्डियन प्रेस ने छपवाया है।

बह गए सैकड़ों आंसू शबे गम आंखों से,
काफ़िला आज हुआ घर से रवाना कैसा।
अब न वो हम है न वोह अहले वतन ऐ "बिस्मिल",
देखते देखते बदला है ज़माना कैसा।

❀　　❀　　❀

फ़ादर का हुआ नुक्सान इस फर्जे अदाई में,
पूंजी भी गई घर की बेटे की पढ़ाई में।
मजलूम की खामोशी फरियाद से बढ़कर थी,
मशहूर हुवा जालिम वो सारी खुदाई में।
आएगें डिनर खाने अंग्रेज यहाँ शब को,
मशगूल[1] हूँ मैं दिन से बँगले की सफाई में।
बिस्मिल की नसीहत से मिल जुल के रहें बाहम[2],
अहराब न उभरेंगे आपस की लड़ाई में।

❀　　❀　　❀

अच्छी कही कि आपका दिल क्यों मलूल[3] है,
एक एक बात पर हमें अब "डैम फूल" है।
कहता हूं देख देख के धोखे की टट्टियाँ,
आँखों में जब नहीं तो ये पर्दा फिजूल है।
अल्लह रे उनका "रूल" हमारे ही "होम" में,
कहते हैं कौन सी ये बला "होम रूल" है।

१–जिसपर जुल्म किया जाय।　२–साथ।　३–दुखी।

बागे जहाँ में यों तो हैं लाखों तरह के फूल,
लेकिन हो जिसकी कद्र वो ही फूल फूल है।
"बिस्मिल" कोई न हम से मिले तो गिला नहीं,
मिलते हैं सबसे हम ये हमारा वसूल है।

❀ ❀ ❀

उनकी नज़र में खुशतरो वेहतर जरूर हूँ,
सरकार चाहते हैं कि मैं "सर" जरूर हूँ।
"पवलिक" न माने मुझको तो मेरा कसूर क्या,
मैं ये समझ रहा हूं कि "लीडर" जरूर हूँ।
उनकी निगाह में मेरी तौक़ीर[1] कुछ नहीं,
मैं खल्क की निगाह में वेहतर ज़रूर हूँ।
एक एक को इस ख्याल ने अहमक़ बना दिया,
बढ़ कर नहीं तो उनके बराबर ज़रूर हूँ।
"बिस्मिल" ये कह रहा है मेरी शायरी का रंग,
"अकबर" नहीं तो पैरवे अकबर ज़रूर हूँ।

१–आदर।

SPS
891.431 B 50 V
15237